

गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 14 » अंक : 55 » अक्टूबर-दिसंबर 2019 » मूल्य : 15 रु.

अखिल भारतीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा आयोजित दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन

दि. 12-13 अक्टूबर 2019

स्थान : श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरिजी (म.प्र.)



वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शांति जैन को 'पद्मश्री' अवार्ड से सम्मानित करने पर गोलापूर्व जैन महासभा की ओर से हार्दिक अभिनंदन...

परिचय सम्मेलन



अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का मुखपत्र : 1918

गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 14 ■ अंक : 55 ■ अक्टूबर-दिसंबर 2019 ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

ॐ संस्थापक संपादक ॐ

स्व. पं. मुहलालजी रांधेलीय न्यायतीर्थ
(1893-1993, सागर)

ॐ परामर्श प्रमुख ॐ

डॉ. शीतलचंदजी जैन
जयपुर (मो. 09414783707)



ॐ मार्गदर्शक ॐ

डॉ. नेमिचंदजी जैन
खुरई (मो. 09406538295)

ॐ प्रबंध सम्पादक ॐ

सुरेन्द्र खुर्देलीय
(मो. 9893198459)

ई-मेल : gkhurdelia@gmail.com



ॐ प्रधान सम्पादक (मानद) ॐ

राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सनावद

(मो. 9407492577, 9826299568)

ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com



ॐ सह सम्पादक (मानद) ॐ

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया
कटनी

(मो. 9827279009)

ॐ प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय ॐ

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पल्लाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.), फोन : 07582-243101

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

■ शिरोमणि संरक्षक :	1,00,000.00
■ परम संरक्षक :	51,000.00
■ विशिष्ट संरक्षक :	31,001.00
■ गौरव संरक्षक :	21,000.00
■ संरक्षक :	11,000.00
■ विशिष्ट सदस्य :	5,101.00
■ सहयोगी सदस्य :	2101.00
■ आजीवन सदस्य :	501.00
■ वार्षिक सदस्य :	240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तलिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111, ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें। (पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। -संपादक

प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा, प्रधान कार्यालय : तीर्थकर परिसर, नमक मंडी, कटरा बाजार, सागर के लिए अरिहंत ऑफसेट, सागर से मुद्रित। लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)



हमें गर्व है हम गोल्लाचार्यजी के वंशज हैं

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व समाज की नई कार्यकारिणी में पुनः श्री संतोषजी जैन 'घड़ी' के नेतृत्व को स्वीकार्यता प्रदान करते हुए पुनः अवसर प्रदान किया है। समस्त पदाधिकारियों को अनेकानेक बधाई, शुभकामनाएँ। सभी की टीम भावना को नमन। क्योंकि बिना टीम के कोई भी नेतृत्व कर्ता सफल नहीं हो सकता है। कार्यकारिणी व पदाधिकारी लगभग वही हैं लेकिन समय के साथ जिम्मेदारियाँ नई होती जा रही हैं।



राजेन्द्र जैन 'महावीर'

मुझे प्रसन्नता है कि मैं गोलापूर्व दिगंबर जैन समाज का सदस्य हूँ, जिसके वंशज पूज्य आचार्य गोल्लाचार्यजी रहे हैं। उन्हीं के कारण हम गोलापूर्व जैन के रूप में जाने जाते हैं। हमने उन गोल्लाचार्यजी को तो नहीं देखा लेकिन जब हम अपने पूर्वजों की शृंखला को देखते हैं तो लगता है कि गोलापूर्व जैन समाज अपने आदर्श पुरुष गोल्लाचार्यजी के कार्यों को ही आगे बढ़ा रहा है क्योंकि गोलापूर्व समाज को बीसवीं सदी में पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी की आशीष अनुकम्पा प्राप्त हुई। वहीं इस समाज ने दिगंबर जैन जगत को अनेक बड़े आचार्य, मुनिराज, आर्थिका माताजी, त्यागीवृंद दिये जो आज दिगम्बरत्व की प्रभावना कर आज भी गोल्लाचार्यजी के मिशन को पूरा कर रहे हैं। गोल्लाचार्यजी की परम्परा में आज दिगम्बर जैन जगत के विद्वत् समाज में सर्वाधिक प्रभावी त्यागी व श्रेष्ठ विद्वान भी इस समाज ने दिये हैं। आज भी देश के प्रभावी पंडितों की गणना में देश के चोटी के समर्थ विद्वान गोलापूर्व समाज के हैं, जो गौरव का विषय है। चाहे त्याग की परंपरा हो, विद्वान, संगीतकार, प्रतिष्ठाचार्य, वक्ता, पत्रकार, लेखक सभी में समाज के व्यक्तियों का वर्चस्व देश ही नहीं विदेश में भी है। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में भी समाजजनों की उपस्थिति सम्मानजनक व गौरवपूर्ण है।

मुझे याद आता है श्रवणबेलगोला में हुए महामस्तकाभिषेक के पश्चात हुए गोलापूर्व सम्मेलन जिसमें राष्ट्र गौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज व पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामीजी का सान्निध्य हमें मिला था। दोनों महान विभूतियों ने हम समाजजनों को जो आशीष प्रदान किया, उससे लगा कि पूज्य गोल्लाचार्यजी की वंश परम्परा के समाजजनों को पूर्ण आशीर्वाद अपने पूर्वजों की भूमि पर मिला है जिससे हृदय हर्ष मिश्रित गौरव का अनुभव कर रहा था।

यह बात तय है कि गोलापूर्व समाज की रगों में मेहनत का खून बह रहा है, यह समाज चाँदी का चम्मच लेकर पैदा नहीं हुआ लेकिन अपनी मेहनत, लगन व समर्पण से इस समाज ने भारत वर्ष में जो स्थान बनाया है वह गौरवपूर्ण है व प्रमाणित करता है कि हमारे पूर्वाचार्य गोल्लाचार्यजी ने हमें कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी व मेहनत का शिक्षण देकर अपने धर्म के प्रति दृढ़ रहते हुए धर्म के नाम पर 'विवाद' नहीं 'संवाद', मनभेद नहीं

मतभेद की स्वीकार्यता का पाठ पढ़ाया है जो आज दिखाई देता है। हमें गर्व होना चाहिये कि हमारे पास हमारे पूर्वजों की एक ऐसी शृंखला है जहाँ से हम अपने आपको सर्व स्वीकार्य बनाने के साथ दिगम्बरत्व की सेवा कर सकते हैं।

हाल ही में जब मैं गढ़ाकोटा नगर के अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी के दर्शनार्थ गया, तो वहाँ पढ़कर यह गौरव हुआ कि हमारे पूर्वज श्रीमान शाह रामकिशुन मोहनदासजी जैन गोलापूर्व बनौनया वंश के दीपक ने अपने व्यापार और त्याग

की योग्यता और भावना के फलस्वरूप एक दिन की रूई के व्यापार की मुनाफा में श्री मंदिरजी का निर्माण, प्रतिष्ठा, श्रीजी की गजरथ परिक्रमा कराई। यह बात 1.10.1953 ईस्वी की है जो बताती है कि हम आर्थिक रूप से भी कितने समृद्ध रहे हैं। वहीं दान और त्याग की परम्परा में भी हमने इतिहास स्थापित किया है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिन्हें प्रकाश में लाना चाहिये जिससे हमें गौरव का अनुभव हो व हम अपनी आगामी पीढ़ी को यह अनुभवन करा सकें।

मेरा आदरणीय संतोषजी जैन 'घड़ी' व उनकी समस्त नवीन कार्यकारिणी से विनम्र अनुरोध है कि हमने आज तक जो भी किया है वह बहुत बड़ा काम है कि महासभा के नाम पर आज हमारा राष्ट्रव्यापी संगठन है। प्रतिवर्ष सारे पदाधिकारी निःस्वार्थ भाव से जो भी कार्य कर रहे हैं उसमें हमारी एकता प्रदर्शित होती है। हम नई जिम्मेदारियों के तहत संकल्पित हों कि-

- समाज के प्रत्येक सदस्य में समाज के प्रति गौरव का भाव जगाएँगे।
- समाज के प्रत्येक सदस्य की सदस्यता हेतु कार्ययोजना बनाएँगे।
- हमारे गौरव श्री गोल्लाचार्यजी की स्मृति में कुछ बड़ा कर समाज को एकत्रित करेंगे।

समाजजनों से भी आग्रह है कि-

- हम सर्वप्रथम महासभा की सदस्यता ग्रहण करेंगे। परिवार में जितने भी सदस्य हैं, वे सभी सदस्य बनें।
- समाजजन जहाँ की हो, जिस क्षेत्र में हो, उन्हें तन-मन-धन से सहयोग करेंगे।
- महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सकारात्मक सोच के साथ सम्मिलित होकर समाज को जोड़ने का कार्य करेंगे।

ऐसी अनेक आशा व अपेक्षाएँ हैं। हम अपने गौरव पुरुषों का सम्मान करें, उन्हें अपना आदर्श बनाएँ।

नवीन कार्यकाल की अनेकानेक बधाई और शुभकामनाएँ।

गुरुमंत्र -

'कैसी भी कठिनाइयाँ आएँ, आप सफर जारी रखें।

शायद आप सफलता से सिर्फ एक कदम की दूरी पर हों।'

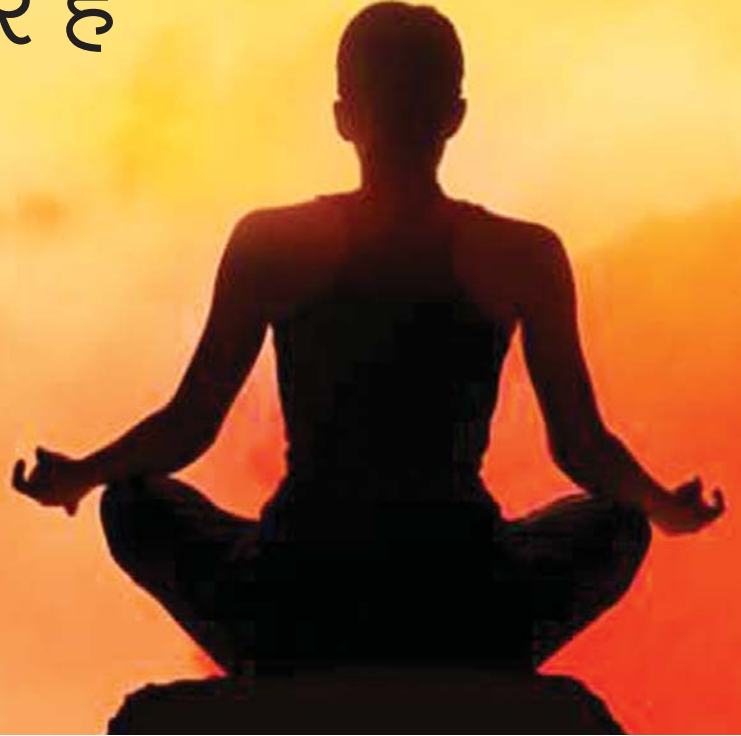
जय जिनेन्द्र...! जय गोल्लाचार्य...!



आत्महित ही सर्वोपरि है

» प्रो. वीरसागर जैन

परहित वास्तव में वही कर सकता है,
जिसने पहले आत्महित किया हो। जिसने
अभी स्वयं अपना ही हित नहीं किया हो वह
दूसरों का हित कैसे कर सकता है?



*“आदहिदं कादव्वं, जदि सक्कदि परहिदं पि कादव्वं।
आदहिद-परहिदादो, आदहिदं सुट्टु कादव्वं।।”*

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण गाथा है, परन्तु इसके मूल कर्ता/रचयिता का कुछ पता नहीं चलता है। यह गाथा प्राचीन काल से ही निरन्तर पढ़ी-पढ़ाई जाती रही है। हो सकता है इसके मूल कर्ता साक्षात् गौतमादि गणधर स्वामी ही हों। वर्तमान में यह गाथा भगवती आराधना (टीका 154, मूलाचार (टीका 156), अनंगार धर्मावृत्त (1/12), पंचाध्यायी (उत्तरार्ध 804) आदि अनेक ग्रन्थों में उद्धृत रूप में उपलब्ध होती है। इस गाथा का हिन्दी भाषा में सरलार्थ यह है कि-

“हमें आत्महित करना चाहिए, यदि सम्भव हो तो परहित भी करना चाहिए, किन्तु आत्महित और परहित में से आत्महित को ही अच्छी तरह से करना चाहिए।”

कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस गाथा में वैसे तो परहित का भी कुछ उपदेश दिया गया है, परन्तु विद्वान् आचार्यों का सारा बल वस्तुतः एक मात्र आत्महित पर ही अधिक है और यही इस गाथा का प्राण है, मूल संदेश है। यह गाथा प्राचीन काल से आज तक आत्महित की मुख्यता के इसी संदेश को बार-बार दोहराने के लिए ही निरन्तर पढ़ी-पढ़ाई जाती रही है। देखा जाए तो इस गाथा में सभी आचार्यों की आत्मा, उनका एक निजी/अन्तरंग भाव छुपा हुआ है कि हमें एक मात्र आत्महित को ही सदा मुख्य रखना चाहिए, पर की चिन्ता करना बिल्कुल उचित नहीं है। आचार्यों के इस महत्वपूर्ण

सन्देश/उपदेश/निर्देश/आदेश पर हम सबको बहुत ही गहराई से चिन्तन-मनन-मन्थन करना चाहिए।

विचारणीय है कि इन आचार्यों ने आत्महित को इतनी मुख्यता क्यों दी है, जबकि बहुत से लोग तो परहित को ही समस्त शास्त्रों का सार कहते हैं। गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करने पर समझ में आता है कि आत्महित की मुख्यता की बात बहुत ही महत्वपूर्ण है और उसके अनेक कारण हैं।

यथा- 1. परहित वास्तव में वही कर सकता है, जिसने पहले आत्महित किया हो। जिसने अभी स्वयं अपना ही हित नहीं किया हो वह दूसरों का हित कैसे कर सकता है? जो स्वयं ही निर्धन हो वह दूसरे को धन कैसे दे सकता है? जो स्वयं ही अनपढ़ हो वह दूसरे को क्या पढ़ा सकता है? जो स्वयं ही तैरना न जानता हो वह दूसरे को तैरना कैसे सिखा सकता है? सीधी सी बात है कि जिसने स्वयं एम.ए. किया हो वही बी. ए. को पढ़ा सकता है। जिसके स्वयं के पास एक रोटी हो तो ही वह दूसरे को आधी रोटी दे सकता है। जो खुद ही भूखा-नंगा हो वह दूसरे को कैसे क्या देगा? जो स्वयं ही अज्ञानी हो वह दूसरे को कैसे कोई ज्ञान दे सकता है?

2. परहित करना एक अद्भुत कला है। परहित करना तो बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु वास्तव में परहित वही कर सकता है जो इस कला में विधिवत् प्रशिक्षित हो। जिसे यह भलीभाँति ज्ञान हो कि हित क्या है और कैसे किया जा सकता है, वही क्वचित् कदाचित् किसी पर का हित कर पाता है। सदा सबका हित करना तो फिर भी सम्भव ही नहीं है। जो लोग हित क्या है

और कैसे किया जा सकता है- यह नहीं जानते, देखा जाता है कि वे प्रायः भले की बजाय पर का बुरा ही कर बैठते हैं। इसी प्रकार यदि अपात्र/ कुपात्र को उपदेश देने की गलती कर दे तो अपना भी अहित हो सकता है। अतः जो परहित की कला में प्रशिक्षित नहीं हैं उन सबके लिए यही उचित है कि- “अरे सुधारक जगत् के चिंता मत कर यार, तेरा मन ही जगत् है पहले इसे सुधार।”

3. पर का हित वास्तव में कोई कभी कर ही नहीं सकता है। स्वयं को ही स्वयं का हित करना पड़ता है। पति के दवाई खाने से पत्नी का पेटदर्द ठीक नहीं होता। उसके लिए तो पत्नी को ही स्वयं दवाई खानी पड़ेगी। वैसे भी सब जीव स्वयं ही स्वयं का हित कर सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक आत्मा स्वयं ही अपना गुरु है, अन्य कोई तो निमित्त मात्र होता है। यही कारण है कि पर से समझने और पर को समझाने की भावना को आचार्यों ने ‘उन्मत्तचेष्ट’ कहा है। यथा- “यत्परैः प्रतिपाद्योह्यहं यत्परान् प्रतिपादये। उन्मत्तचेष्टितं तन्मे यदहं निर्विकल्पकः॥”

सभी आचार्यों ने ग्रंथ-रचना भी मात्र अपने हित की भावना से की है। यथा-

- णियभावणाणमित्तं मए कदं-नियमसार
- अप्पासंबोहण कया दोहा एक्कमणाहं - योगसार, 108
- मम परमविशुद्धिः -आत्मख्याति, 2
- स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा तुलसीदास
- हे मन ! तेरी को कुटेव यह/ हे जिया.....
- पर को सुधारना बहुत कठिन है-
- कुआ नहीं छनेगा, लोटा छन सकता है।
- ऋषभदेव भी मारीचि को नहीं समझा सके।
- श्रीकृष्ण जैसा चतुर भी कौरव-पांडवों को नहीं समझा सका।
- रावण को कोई नहीं समझा सका।
- समझे तो अपने आप से, नहीं तो किसी के बाप से।
- (स्वभावो हि दुरतिक्रमः/ नाज्ञो विज्ञत्वमायाति/)
- यः स्वभावो भवेद्यस्य स तेन खलु दुस्त्यजः। न हि शिक्षाशतेनापि

- कपिर्मुचति चापलम्॥ -यशास्तिलक 3/176
- न स्वतो जन्तवो प्रेर्याः दुरीहा स्युर्जिनागमे। स्वतः एव प्रवृत्तानां तद्योग्यानुग्रहो मतः॥ -यशास्तिलक 6/148
- परिस्थिति मत बदलो, अपनी मनःस्थिति बदलो।
- सृष्टि नहीं, अपनी दृष्टि बदलो।
- वैराग्यरंगः परवंचनाय.... रत्नाकर पच्चीसी (साधु तो मुख्य रूप से अपने हित के लिए हुआ जाता है, पर हम ..)
- पर उपदेश कुशल बहुतेरे, आप चले सन्मार्ग विरले।
- ज्यों शिशु नाचत आप न माचत लखनहार बौराए।
- यह आत्मा दूसरों को सुधारने में जितना समय और श्रम लगाता है, यदि उसका सौवां हिस्सा भी अपने को सुधारने में लगाए तो इसका कल्याण होते देर न लगे।
- खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति। आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति॥
- उत्तमा स्वात्मचिंता स्यात्परचिंताह्यधमाधमा।
- स्वाध्याय के 5 भेदों में से 4 स्व के लिए हैं, मात्र 1 कथंचित पर के लिए है।
- जैन धर्म की सभी क्रियाएँ स्वोपकार की मुख्यता से हैं। पूजा, भक्ति और दान भी।
- ज्ञान रूपी रथ में बैठकर अपने मन रूपी पथ में विहार करना ही प्रभावना है। -समयसार
- ज्ञानी कुछ भी हो तो शीघ्र अपने उपयोग को अपने अंदर ले जाते हैं कछुए की तरह।
- आत्मानुशासन ही सबसे अच्छा शासन है।
- दुनिया में उसने बड़ी बात कर ली, खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली। (चाँद पर क्या है, जानना चाहा..)
- आप भला तो जग भला/आत्मबलं बलं परबलं दुर्बलम्
- अवाग्विसर्गं वपुषा निरूपयन्तं...
- मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। -महात्मा गाँधी

महासभा के नए सदस्य

1. श्रीमती रक्षा जैन पति श्री राजेश कुमार जैन (बिनेका वाले), सागर	आजीवन महिला सदस्य
2. श्रीमती मुक्ता जैन पति श्री अजित कुमार जैन (एसबीआई वाले), सागर	आजीवन महिला सदस्य
3. श्रीमती मंजू जैन पति श्री आशीष कुमार जैन, दमोह	आजीवन महिला सदस्य
4. श्रीमती सीमा जैन पति श्री विमल कुमार जैन, दमोह	आजीवन महिला सदस्य
5. श्री हेमंत कुमार जैन (शिक्षक), सागर	आजीवन सदस्य
6. श्री अशोक कुमार जैन, अभय कुमार जैन (बरायठा वाले), सागर	आजीवन सदस्य
7. श्री पदमचंदजी जैन (पनवारी वाले), घुवारा	संरक्षक सदस्य
8. श्री सिंघई संतोष कुमारजी जैन (सेसई वाले), बीना, जिला सागर	विशिष्ट सदस्य
9. इंजी. नवीन कुमार जैन (आकाशवाणी, इंदौर), इंदौर	आजीवन सदस्य
10. श्री सुरेन्द्र कुमार जैन (प्राचार्य), भगवां, जिला छतरपुर	संरक्षक सदस्य



प्राकृत के महासूर्य आचार्य सुनीलसागरजी

» डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

सह-आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग
जैन विश्वभारती, लाडवूं (राज.)

» सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

30, निशात कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462 003

आचार्य सुनील सागर जी महाराज ने अल्पायु में ही सूरीपद को प्राप्त कर ज्ञान गंगा में निमज्जन किया। जिसकी फलश्रुति है- 'सुनिल प्राकृत समग्र' जिसमें सहस्राधिक गाथाओं की रचना विविध विषयों को आधार बनाकर की गई है।



प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्राकृत भाषा का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। प्राकृतभाषा लोकभाषा के नाम से सर्वत्र ख्याति प्राप्त है। प्राकृतभाषा देश की एक प्रमुख धरोहर है, जिसका संरक्षण एवं संवर्धन भारतीयता की समग्रता के साथ अभिज्ञान के लिए अनिवार्य है। प्राकृत एक भाषा न होकर एक भाषिक समुदाय है। इस भाषा में दार्शनिक-साहित्य, काव्यसाहित्य चरितसाहित्य के साथ-साथ वैज्ञानिक विषयों पर भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है।

प्राकृत भाषा में ग्रन्थ-रचना ईसवी पूर्व छठी शताब्दी से प्रायः वर्तमान काल तक न्यूनाधिक रूप से निरन्तर होती चली आ रही है। यद्यपि हम देखते हैं कि शनैः शनैः हिन्दी आदि विभिन्न आधुनिक भाषाओं के प्रारम्भ होने से प्राकृत भाषा में ग्रन्थ-रचना मन्द होती जा रही है किन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता कि सर्वथा समाप्त हो गई है, अपितु यह परम्परा आज भी सुरक्षित है। इस भाषा को सर्वर्धित करने का विशेष श्रेय जैनाचार्यों एवं जैन मुनियों पर जाता है। जैन शासन में अनेक आचार्यों और मुनियों ने वर्तमान में भी अपनी प्रतिभा से अनेक ग्रन्थों की रचना कर जैन शासन की परम्परा को शाश्वत बनाए रखा है। जैन धर्म के तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य

महाप्रज्ञ जी ने प्राकृत भाषा को अत्याधिक महत्त्व दिया। अनेक ग्रन्थों की रचना की। अपने वक्तव्य में भी बहुधा प्राकृत भाषा का उपयोग किया।

संस्कृत एवं प्राकृत विद्या, जिनकी आज देश में चर्चा तो बहुत चलती है पर क्रियात्मक रूप से उनका पठन-पाठन दिनानुदिन क्षीण और क्षीणतर होता जा रहा है, किन्तु जैन संघ में वह आज भी उत्तरोत्तर विकास है। शताधिक साधु-साध्वियां संस्कृत एवं प्राकृत में पारंगत हैं। वे केवल अध्ययन और अनुशीलन ही नहीं, अपितु विविध प्रकार के अभिनव साहित्य के निर्माण में भी तत्पर और कुशल हैं।

प्राकृत भाषाओं के व्याकरण को प्रस्तुत करना एक जटिल कार्य था, क्योंकि उसके प्रयोग में विविधता बनी रही है किन्तु जैनाचार्यां ने इस क्षेत्र में भी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। लोक में प्रचलित प्राकृत के अनेक शब्दों को व्याकरण की दृष्टि से वैकल्पिक रूपों के अंतर्गत अनुशासित किया गया। चंड, वररुची, हेमचंद्र, मार्कण्डेय आदि वैयाकरणों ने ईसा की दूसरी शताब्दी से लगातार अठारहवीं शताब्दी तक प्राकृत के व्याकरण लिखे हैं। होयेफेर, बेबर, कौवेल, याकोबी, पिशेल, डोल्ची आदि पाश्चात्य विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण शास्त्र को प्रकाश में लाने का अथक परिश्रम किया है। भारतीय विद्वानों में वैद्य, घटगे, कत्रे, डॉ. उपाध्ये, डॉ. हीरालाल जैन, सुकुमार सेन, पं. बेचरदास आदि ने

प्राकृत भाषा के अनुसंधान को गतिशील रखा।

इसी क्रम में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने सिद्धहेमशब्दानुशासनम् के अष्टम अध्याय के आधार पर तुलसी मंजरी नाम से एक प्रक्रिया-ग्रंथ की रचना की, जो महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी, पैशाची, चुलिका पैशाची और अपभ्रंश का एक सुंदर और सुगम व्याकरण है।

इसी प्रकार जैन संघ के दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्य हैं-आचार्य सुनील सागर जी महाराज जिन्होंने अल्पायु में ही सूरीपद को प्राप्त कर ज्ञान गंगा में निमज्जन किया। जिसकी फलश्रुति है-‘सुनिल प्राकृत समग्र’ जिसमें सहस्राधिक गाथाओं की रचना विविध विषयों को आधार बनाकर की गई है-यथा-थुदी संग्रहो, णीदि-संग्रहो, भावणासारो इत्यादि। प्राकृत समग्र को जब हम गहराई से अध्ययन करते हैं तो यूँ लगता है हम आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार, नियमसार आदि को पढ़ रहे हैं।

प्राकृत समग्र को पढ़ते समय यह सहज स्फुरित होता है कि आचार्य सुनील सागर जी प्राकृत भाषा और विशेष रूप से शौरसेनी प्राकृत के प्रकाण्ड पण्डित तो हैं ही इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं के भी विज्ञ हैं। जब मैंने प्राकृत समग्र का अध्ययन किया तो मुझे लगा कि इस ग्रंथ में न केवल शौरसेनी प्राकृत का ही प्रयोग है अपितु महाराष्ट्री प्राकृत का भी सुन्दर विनियोजन हुआ है। महाराष्ट्री प्राकृत के प्रयोग के दो कारण परिलक्षित होते हैं- प्रथम और मुख्य साहित्यिक रूप से देखें तो यह कहा जा सकता है ईसा पूर्व के छठी शताब्दी से ईस्वी के तीसरी चौथी शताब्दी तक मागधी, अर्द्धमागधी तथा शौरसेनी भाषा में ग्रंथादि की रचना होती रही किंतु शनैः शनैः भाषा का विकास एवं परिवर्तन होना स्वाभाविक है। छठी शताब्दी प्रारम्भ कर 12वीं शताब्दी में जब आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत व्याकरण की रचना की तब उन्होंने आगमों की भाषा को आर्ष प्राकृत कहा उनके नियमों को स्वतन्त्र रखा, किंतु महाराष्ट्री प्राकृत का विस्तृत विवेचन किया, क्योंकि 12वीं शताब्दी के आते-आते भाषा में परिवर्तन हो चुका था और इसी भाषा ने ग्रंथ रचनाओं का रूप ले लिया था। अतः यद्यपि आचार्य जी ने अपनी कृतियों में शौरसेनी प्राकृत का मुख्यतया प्रयोग किया ही है किंतु अनेक स्थलों पर महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग भी परिलक्षित होता है।

महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग होने का दूसरा कारण है आचार्य जी बहु भाषाविद् हैं और विशेष रूप से मराठी भाषा के ज्ञाता हैं। महाराष्ट्री भाषा ही विकास को प्राप्त कर मराठी भाषा का रूप लेती है। अतः ज्ञातव्य है कि इस कारण से भी शौरसेनी के साथ महाराष्ट्री का भी प्रयोग अवश्यभावी है। सम्पूर्ण प्राकृत समग्र में काव्य के सभी रूप तो उपलब्ध होते ही हैं किंतु भाषा का प्रवाह सरल सहज रूप में प्रवाहमान दृग्गोचर होता है।

आचार्य सुनीलसागर जी की प्राकृत भाषा में निम्नलिखित रचनायें हैं- 1. थुदि संग्रहो, 2. नीदि संग्रहो, 3. भावणासारो 4. अज्जप्पसारो, 5. नियपज्ञान-सारो, 6. भावालोयणा। उन्होंने प्राकृत भाषा के सामान्य ज्ञान के लिए 7. प्राकृत-बोध की रचना की है। सभी कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है-

थुदि-संग्रहो (स्तुति संग्रह)-श्रमण संस्कृति में स्तुति का सातिशय महत्त्व है, क्योंकि यह प्रभुभक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साथ ही स्तुति करने वाला स्वयं भी स्तुत्य बन जाता है। स्तुतियों की प्राचीन परम्परा है, जिसे

आगे बढ़ते हुए आचार्य श्री सुनीलसागरजी ने अपने काव्य प्रतिभा का प्रभाव छोड़ते हुए शौरसेनी प्राकृत के विभिन्न सरस छन्दों में स्तुतियों की रचना की है। जैसे ऋषभजिन स्तुति, गोम्मटेश अष्टक, शान्तिनाथ स्तुति, पार्श्वनाथ स्तुति, वर्धमान स्तुति आदि स्तुतियाँ एवं अष्टक हैं। अन्त में रत्तिभोयण चाग-परसंसा और जन-जन के हृदय में स्थित पंडित जुगलकिशोर मुख्तार ‘युगवीर’ द्वारा रचित मेरी भावना का ‘मज्ज भावणा’ नाम से प्राकृत भाषा के गाथा छन्द में रूपान्तरण किया है, जो मेरी भावना की भाँति ही जन-जन का कल्याण करने में समर्थ है।

आचार्य स्वयं शास्त्री व स्नातक हैं, इसलिए उनका साहित्य की विभिन्न धाराओं, विधाओं, व्याकरण और भाषाओं पर अच्छा अधिकार है। प्रस्तुत कृति ‘थुदि संग्रहो’ में उन्होंने छन्दशास्त्र और वैयाकरणिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए भी अलंकारों, नवरसों और साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश किया है। प्राकृत भाषाओं में मूलतः शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग किया गया है। ‘थुदि संग्रहो’ के कुछ छन्द प्राचीन गाथाओं ‘श्लोकों का स्मरण करा कर कृति की प्रमाणिकता के प्रहरी बनकर हृदय को आल्हादित कर देते हैं। अन्त में गाथा छन्द में मंगल प्रशस्ति दी गयी है।

णीदि-संग्रहो (नीति संग्रह)-प्राकृतभाषा में प्रणीत इस ग्रन्थ में कुल 161 पद्य हैं, जिसकी विषय वस्तु को दो भागों में विभाजित किया गया है- धम्म-णीदि (धर्मनीति) जिसमें 60 पद्य हैं तथा लोग-णीदि में (लोक नीति) 101 पद्य हैं। धम्म-णीदि में जिनेन्द्र भगवान की महिमा, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, जिनधर्म की विशेषता, सम्यक्त्व की महिमा, ज्ञान की महिमा, चारित्र की महिमा, तप की दुर्लभता आदि विषयों का वर्णन किया गया है। लोक नीति के 101 पद्यों में पंडित कौन? विवेक की महिमा, दानी कौन है? मित्र का लक्षण, बन्ध मोक्ष का कारण मन, शिष्य का लक्षण, चिन्ता से हानि, किसको कैसे जीतें, अनभ्यासे विषं विद्या, किनका विश्वास नहीं करना चाहिए, किससे क्या जाना जाता है? किसके बिना क्या नष्ट हो जाता है? किनमें लज्जा नहीं करना चाहिए? आदि विषयों का सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन किया है। गाथाओं की भाषा अत्यन्त सरल होने से सर्वजनग्राह्य है। अन्त में नीति संग्रह की रचना का उद्देश्य बताया है-

धम्मत्थकाम-पत्तत्थं, कल्लणत्थंचमोक्खणं।

आइरिय-सुणीलेण, किदं णीदिअ संगहं।।।।।

भावणासारो (भावनासार)-भावना की परिभाषा करते हुए पंचास्तिकाय में कहा है- ‘ज्ञातेऽर्थे पुनः पुनश्चितनं भावना’ अर्थात् जाने हुए अर्थ का बार-बार चिन्तन करना। मूलाचार में तपभावना, श्रुतभावना, सत्त्वभावना, धृतिभावना, सन्तोषभावना, आदि बारह भावनाओं को सदा चिंतन की बात कही गयी है। साथ ही क्लेशकारिणी कांदर्पी, सांमोहि, आसुरी आदि दुर्भावनाओं से बचने के लिए कहा गया है। व्यक्ति की भावना शुद्धि हेतु आचार्य कुन्दकुन्द ने बारसाणुवेकखा, आचार्यकुमार स्वामी ने कार्तिकेयानुप्रेक्षा, आचार्य शुभचन्द्र ने ज्ञानार्णव तथा मुनि नागसेन ने तत्त्वानुशासन जैसे स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे। इनके अतिरिक्त और भी कई ग्रन्थ इस दिशा में मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध हैं।

भावनाप्रधान ग्रन्थों की शृंखला में तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मत्तिसागरजी महाराज के योग्यतम शिष्य आचार्यश्री सुनीलसागर ने प्राकृतभाषा में 72 पद्यों सहित ‘भावणासारो’ नामक ग्रन्थ की रचना की है।

इसमें उन्होंने अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधि दुर्लभ और धर्म इन बारह भावनाओं का संक्षिप्त किन्तु सारगार्भित विवेचन किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ के मंगलाचरण में सिद्धों की वन्दना के साथ ही ग्रन्थ रचना करने की प्रतिज्ञा की गयी है। ध्यान का प्रभाव, कैसी भावना करनी चाहिए? तथा भावों का फल प्रस्तुत करने वाला क्रमशः तीन पद्य दिये गए हैं। पश्चात् एक सुन्दर गाथा में धर्म का स्वरूप बताया गया है जो वर्तमान समय में सर्वथा प्रासंगिक है-

इच्छसि अप्पणत्तो जं, इच्छ परस्स तं वि या

णेच्छसि अप्पणत्तो जं, णेच्छ परस्स धम्मो य॥2॥

अर्थात् जो अपने लिए चाहते हो, वह दूसरे के लिए भी चाहो और जो अपने प्रति नहीं चाहते हो, वह दूसरे के लिए भी मत चाहो, यही धर्म है।

इसके बाद क्रमशः बारह भावनाओं का वर्णन करने में आचार्यश्री ने एक के बाद एक सुन्दर गाथाओं की रचना की है। प्रस्तुत ग्रन्थ में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया है। दृष्टान्त अलंकार तो पग-पग पर देखने को मिलता है। नव रसों में से मूलतः शान्त रस का प्रयोग किया है, किन्तु आवश्यकतानुसार अनायास ही वीर, रौद्र, वीभत्स, करुण, भय और शृंगार रसों का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ में पद्य के साथ ही अन्वयार्थ, अर्थ तथा हिन्दी में विस्तृत व्याख्या भी दी गयी है, एवं पृष्ठ संख्या भी प्राप्त हैं।

अज्झप्पसारो (अध्यात्मसार)- सन् 2007 में इसकी रचना हुई। इसमें 100 पद्य हैं। इसमें नामानुकूल विषय हैं, किन्तु अध्यात्म को बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जिससे गहन विषय भी सर्वगम्य हो गया है। यह कृति कृतिकार की अनूठी सृजनधर्मिता की द्योतक है।

साहित्यकार की अभिव्यक्ति में काव्य और शास्त्र ये दोनों दृष्टियाँ समाहित होती हैं। शास्त्र में श्रेय रहता है और काव्य में अनुभूतियों का प्रयत्न रहता है। अज्झप्पसारो ग्रन्थ में समयसार जैसी अनुभूतियों का समाकलन किया गया है। उदाहरणार्थ :

णिय अप्पा परमप्पा, अप्पम्मि अत्थि संपुण्णं।

तो किं गच्छदि बहिरे, अप्पा अप्पम्मि सव्वदा ज्ञेयो॥3॥

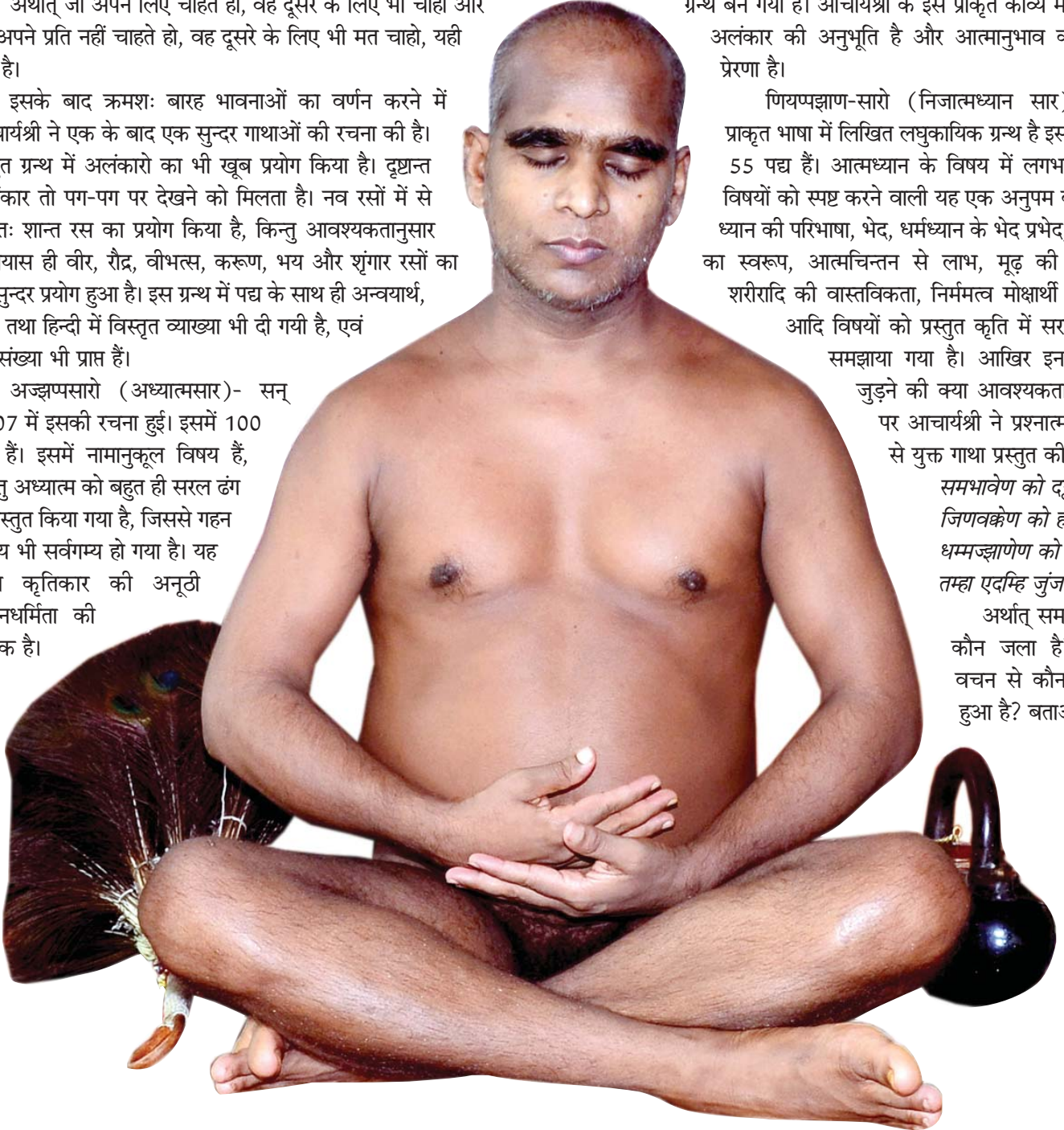
अर्थात् निज आत्मा ही परमात्मा है, आत्मा अपने आप में सम्पूर्ण है, तो फिर तुम बाहर क्यों जाते हो, आत्मा का हमेशा ध्यान करो।

यह आचार्य कुन्दकुन्द की साहित्य शृंखला में सम्मिलित करने जैसा ग्रन्थ बन गया है। आचार्यश्री के इस प्राकृत काव्य में रस है, अलंकार की अनुभूति है और आत्मानुभाव की तीव्र प्रेरणा है।

णियप्पज्ञाण-सारो (निजात्मध्यान सार)- यह प्राकृत भाषा में लिखित लघुकाव्यिक ग्रन्थ है इसमें कुल 55 पद्य हैं। आत्मध्यान के विषय में लगभग सभी विषयों को स्पष्ट करने वाली यह एक अनुपम कृति है। ध्यान की परिभाषा, भेद, धर्मध्यान के भेद प्रभेद, आत्मा का स्वरूप, आत्मचिन्तन से लाभ, मूढ़ की प्रवृत्ति, शरीरादि की वास्तविकता, निर्ममत्व मोक्षार्थी के गुण आदि विषयों को प्रस्तुत कृति में सरलता से समझाया गया है। आखिर इन सबसे जुड़ने की क्या आवश्यकता है इस पर आचार्यश्री ने प्रश्नात्मक रूप से युक्त गाथा प्रस्तुत की है-

*समभावेण को दड्ढो,
जिणवक्केण को हदो।
धम्मज्झाणेण को णट्ठो,
तम्हा एदम्हि जुंजह॥4॥*

अर्थात् समभाव से कौन जला है? जिन वचन से कौन आहत हुआ है? बताओ कौन



धर्मध्यान से नष्ट हुआ है? अर्थात् कोई नहीं, इसलिए इसमें भलीभाँति जुड़ जाओ।

भावालोयणा-25 गाथामय प्राचीन शौरसेनी भाषा में लिखी गयी भावों की आलोचना है। अपने दोषों की निंदा-गर्हा करते हुए साधक ने सामायिक व निर्ममत्व की प्रार्थना की है। इसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सामायिक का साधारण अर्थ है आत्ममिलन। यह जीवात्मा बाहरी पदार्थों में विमोहित होकर स्वयं को भूल गया है। सामायिक से स्व-स्मृति होती है। स्व-स्मृतिसे स्वकृत दोषों-पापों का बोध होता है और फिर पश्चाताप। पश्चात्ताप अर्थात् स्वनिन्दा, गर्हाञ्जआलोचना। इस आलोचना-पश्चाताप से प्रायश्चित्त होता है। प्रायश्चित्त से आत्मशुद्धि, आत्मशुद्धि से साम्य की प्राप्ति होती है।

आचार्य अमितगति के द्वात्रिंशतिका (सामायिकपाठ) की शैली में लिखी गयी यह कृति निश्चित ही भव्यजीवों के भावों को भास्वर करने में सहयोगी होगी। एक गाथा को उद्धृत करना ही पर्याप्त है, जो द्वात्रिंशतिका की कोटी में है-

सव्वेसु य मित्तीभावो, पमोदभावो हि गुणाहिगेसु।

दीणेसु कारुण्यं होदु य देव! मज्झत्थभावो पडिकूलवित्ते।।5।।

भद्रबाहु-चरियं (भद्रबाहु चरित)-यह आचार्य श्री सुनीलसागरजी की अनुठी प्राकृत कृति गद्यकाव्य है। इसमें अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी का संक्षेप में पूर्ण चरित्र है। पद्यमय मंगलाचरण के उपरान्त भद्रबाहु का जन्म, उनका बचपन, विलक्षणता, शिक्षा, भद्रबाहु की जिनदीक्षा, चंद्रगुप्त के द्वारा 16 स्वप्न देखा जाना, भद्रबाहु द्वारा स्वप्नों का फल बतलाना, फल सुनकर चन्द्रगुप्त का वैराग्य व जिनदीक्षा, उत्तरापथ में दुर्भिक्ष, भद्रबाहु की समाधि, संघभेद आदि का कथन किया गया है।

प्राकृत बोध-ईसा की प्रथम शती से 12वीं शती तक का दिगम्बर जैन साहित्य प्रायः शौरसेनी प्राकृत में लिपिबद्ध है, जैसे- आचार्य धरसेन स्वामी का जोषिणाहुड, पुष्पदन्त भूतबलीस्वामी का षट्खण्डगम, गुणधर स्वामी का कषायपाहुड, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के समयसरादि, आचार्य शिवार्य की मूलाराधना तथा कार्तिकेय स्वामी की कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि अनेक ग्रन्थ हैं। इसी प्रकार विभिन्न वाचनाओं के माध्यम से ईसा की पाँचवी शती में श्वेताम्बर आचार्यों ने अर्द्धमागधी प्राकृत में अपना साहित्य व्यवस्थित रूप से संकलित कर लिपिबद्ध किया।

प्राचीन साहित्य, दर्शन और इतिहास को समझने के लिए विभिन्न प्राकृतों का बोध आवश्यक है। प्राकृत में प्रवेशकर्ताओं को लक्ष्य कर आचार्यश्री ने इस प्राकृत व्याकरण की रचना की है। इसके संयोजन में संस्कृत-शास्त्री, भाषा-विज्ञानी, सिद्धहेमशब्दानुशासन व प्राकृत व्याकरण वृत्ति आदि प्राकृत व्याकरणों के गहन अध्येता, अनेक प्राकृत रचनाओं के रचयिता, ज्ञानयोगी आचार्यश्री सुनीलसागरजी का सम्पूर्ण ज्ञान ही प्रकट हो गया है। इस व्याकरण ग्रन्थ में वर्ण-विचार, स्वर-परिवर्तन, व्यंजन-परिवर्तन, कृदन्त-प्रकरण, तद्धित-प्रकरण, समास-प्रकरण, अव्यय-प्रकरण, लिंग-विचार, विशेषण-विचार, पर्यायवाची शब्द तथा विविध प्राकृतों की विशेषताएँ क्रमशः वर्णित हैं। प्रत्येक अध्याय के अन्त में अभ्यास हेतु अभ्यास प्रश्न भी दिये गए हैं तथा कृति के अन्त में सम्पूर्ण अधीत व्याकरण का प्राचीन कृतियों पर अभ्यास करने हेतु वाक्य रचना,

प्राकृत में लघु निबन्ध तथा अनेक स्तुतियाँ दी गयी हैं। परिशिष्ट में तीनों लिंगों के संज्ञा शब्द तथा सकर्मक क्रिया शब्द दिये गए हैं। भाषा शैली, विषय की क्रमबद्धता तथा प्रतिपादन शैली की अपूर्व सम्बद्धता के कारण प्राकृत प्रवेशार्थियों के लिए यह प्राकृत बोध कृति अत्यन्त उपयोगी है। आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज सतत ज्ञानोपयोग में लीन रहते हुए निरन्तर ग्रंथ प्रणयन का कार्य कर रहे हैं।

यह उल्लेखनीय है कि सुप्रसिद्ध विदुषी डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने “प्राकृत के दो महासूर्य” शीर्षक से मूल लेख लिखा है। इसे प्राकृत विद्या, वर्ष 21, अंक 2, अप्रैल-जून, 2019 ईसवी के पृष्ठ 27 से 35 पर तथा अन्य कुछ राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है। मूल लेख को संकुचित, संक्षिप्त, संशोधित और यत्किंचित परिवर्द्धित कर श्री सुरेश जैन ने मूल लेखक की सहमति से यह आलेख आचार्य सुनीलसागर जी पर केन्द्रित करते हुए प्रस्तुत किया है। इस लेख के पढ़ने से प्रमाणित होता है कि आचार्य सुनीलसागर जी प्राकृत के सर्वोच्च विद्वान और प्रभावी प्रवक्ता है। इतनी कम आयु में उनका प्राकृत भाषा को प्रदत्त अवदान सांस्कृतिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाना आवश्यक है। प्रभु से प्रार्थना है कि प्राकृत जगत का यह महासूर्य अपनी प्रखर किरणों से पूरे विश्व के आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रकाशित करता रहे। अपनी ऊर्जा प्रदान करता रहे और जैन संस्कृति को हिमालयीन ऊँचाई प्रदान करता रहे।

सन्दर्भ सूची -

1. पीदि-संगहो-गाथा- 161, पृ. 184 सुनील प्राकृत समग्र
2. भावणासारो-गाथा-5, पृ. 191
3. अज्झप्पसारो-गाथा-27, पृ. 264
4. गियप्पज्ञाण-सारो-गाथा-52, पृ. 319
5. भावालोयणा-गाथा-21, पृ. 329

सन्दर्भ ग्रंथ-

- संस्कृत-प्राकृत जैन व्याकरण और कोश की परम्परा-संपादक मुनि दुलहराज, आचार्य श्री मघवा निर्वाण शताब्दी महोत्सव व्यवस्था समिति, सरदारशहर राज. 1993
- सुनिल प्राकृत समग्र- आचार्य सुनील सागर, भारतीय ज्ञानपीठ, 2016
- तुलसी मंजरी- युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती लाडनू राज.
- प्राकृत वाक्य रचना बोध-युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती लाडनू राज.
- प्राकृत गद्य सोपान-प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी जयपुर, 2005
- भक्तिसंगहो-आचार्य सुनीलसागर, आ. आदिसागर अंकलीकर अंतर्राष्ट्रीय जागृति मंच, मुम्बई 2017
- बाहुबली-आचार्य सुनीलसागर(आ. आदिसागर अंकलीकर अंतर्राष्ट्रीय जागृति मंच, मुम्बई 2017
- प्राकृतभाषा-अभिलेख, सम्पादक डॉ. जयकुमार उपाध्ये, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम्, नई दिल्ली, 2014
- आचार्य तुलसी का संस्कृत-साहित्य खण्ड-2, सम्पादिका साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001



स्वर्णप्राशन संस्कार

» डॉ. शैलेश जैन एमडी (आयु.)
एसोसिएट प्रोफेसर, बाल रोग विभाग
'पुष्पदंत निकुंज', ईश्वरीपुरा वार्ड,
कटनी (मध्यप्रदेश)
मो. 9827341852



भारत की इस पावन पुनीत धरा ने कई महापुरुषों, संतो, शूरवीरों, महान तत्ववेत्ताओं को जन्म दिया है। हमारी परम्परा संस्कारों की परम्परा रही है। कहा जाता है 'संस्कारों हि गुणान्तराधानम्' संस्कार के माध्यम से व्यक्ति या वस्तु में गुणों का आधान किया जाता है जिनमें जन्म से लेकर मृत्यु तक कई संस्कार किये जाते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और आचार्यों ने इसके लिए अथक प्रयास किये।

“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्॥”

राष्ट्र स्वस्थ, निरोगी बने, इसके लिए आज भी कई सामाजिक, धार्मिक संस्थान और खुद सरकार भी चिंतित और कार्यरत है। अरबों रूपयों का बजट आज सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें टीकाकारण (वेक्सीनेशन) के रूप में खर्च कर रही हैं। फलस्वरूप आज शारीरिक स्वस्थता के प्रति तो जागरूकता बढ़ी है पर मानसिक स्वास्थ्य अब भी जहाँ का तहाँ है। मानसिक रूप से अस्वस्थ, निर्माल्य एवं असंस्कारी समाज अगर दीर्घायुष्य पाता भी है, तो आशीर्वाद के बदले ये श्राप ही होगा।

संपूर्ण विश्व में सबसे प्राचीनतम और समग्र विश्व को मार्गदर्शन देने वाले आयुर्वेद के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक और ग्राह्य योग्य है। सही मायने में स्वस्थ समाज कैसा होना चाहिए? इसकी कल्पना हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और आचार्यों ने बहुत पहले ही कर ली थी, इसलिए शारीरिक व मानसिक आरोग्य हेतु हमारे आचार्यों ने संस्कार के रूप में धार्मिक परम्परा का निर्माण किया।

जीव के मां की कुक्षि में आने के पूर्व से लेकर मृत्यु के उपरान्त तक जीवन में आने वाले सभी महत्वपूर्ण पड़ावों पर किये जाने वाले संस्कार मनुष्य में गुणों की अभिवृद्धि करने के लिए आवश्यक है। इन्हीं संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार है स्वर्णप्राशन संस्कार। जब किसी बालक का जन्म होता है तो डॉक्टर बालक के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जन्म के तुरंत बाद से लेकर विभिन्न अंतराल पर भिन्न समयावधि में टीकाकारण (वेक्सीनेशन) करवाने का परामर्श देते हैं जो कि व्याधि विशेष से बालक

की रक्षा करते हैं। किन्तु आयुर्वेदाचार्यों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व स्वर्णप्राशन संस्कार के माध्यम से व्याधि क्षमता को बढ़ा कर भिन्न-भिन्न रोगों से लड़ने की सामर्थ्य प्रदान की।

स्वर्णप्राशन दो शब्दों से मिल कर बना है जहाँ स्वर्ण यानि सोना (गोल्ड), और प्राशन यानि चटाना है। अब यह प्रश्न उठता है कि व्याधि क्षमता को बढ़ाने के लिए स्वर्ण ही क्यों?

स्वर्ण हमारे शरीर के लिए श्रेष्ठतम धातु है। स्वर्णभस्म शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है जिससे हमारे शरीर में किसी भी प्रकार के संक्रमण से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। स्वर्णभस्म कैंसर जैसी भयावह बीमारी के इलाज में भी काफी लाभकारी होती है। साथ ही यह स्मृति, एकाग्रता समन्वय और मानसिक स्वास्थ्य पर भी असरकारक है। इसलिए हमारे जीवन व्यवहार में प्राचीनकाल से ही स्वर्ण का महत्व रहा है।

सोना हमारे शरीर में कैसे भी जाना चाहिए इसलिए हमारे यहाँ शुद्ध सोने के गहने पहनने का रिवाज है। यही कारण है कि हमारे राजा, महाराजा, सेठ, और धनवान लोग सोने के बर्तनों में ही भोजन किया करते थे। सोने के गहने पहनना, सोना खरीदना, सोने के बर्तनों में भोजन करना इन सभी बातों में हमारे आचार्यों का अतिमहत्वपूर्ण दृष्टिकोण यही था कि, सोना हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता तो बढ़ाता ही है और साथ ही साथ हमारी मानसिक और बौद्धिक क्षमता भी बढ़ाता है। यह शरीर, मन एवं बुद्धि का रक्षण करने वाली अतिमहत्वपूर्ण धातु है।

स्वर्णप्राशन संस्कार

यह षोडश संस्कारों में से एक है। हमारे यहाँ जब बालक का जन्म होता है तब सोने या चाँदी की शलाका से उसकी जिह्वा पर ओम लिखने की एक परम्परा रही है, यह भी स्वर्णप्राशन संस्कार का ही एक रूप है। स्वर्णप्राशन स्वर्ण के साथ-साथ गोघृत और आयुर्वेद की कुछ मेध्य औषधियों का मिश्रण है। आयुर्वेद ग्रंथानुसार यह मिश्रण जन्म के दिन से ही शुरू कर के पूरी बाल्यावस्था तक दिया जा सकता है।

स्वर्णप्राशन के लाभ

आयुर्वेद आठ अंगों में विभाजित है। इन आठ अंगों में एक प्रमुख अंग है बालरोग या कौमारभृत्य। बालरोग के प्रमुख उपलब्ध ग्रंथ काश्यप संहिता में आचार्य काश्यप स्वर्णप्राशन के गुणों का निम्न रूप से निरूपण करते हैं-

स्वर्णप्राशन हि एतत मेधाग्निबलवर्धनम् ।

आयुष्यं मंगलम् पुण्यं वृष्यं ग्रहापहम् ॥

मासात् परममेधावी व्याधिभि न च धृष्यते ।

षडभिर्मासैः श्रुतधरः स्वर्ण प्राशनाद् भवेत्॥

(काश्यप संहिता सूत्रस्थान)

स्वर्णप्राशन मेधा (बुद्धि), अग्नि (पाचकाग्नि) व बल को बढ़ाने वाला है। यह आयुष्यप्रद, कल्याणकारक, पुण्यकारक, वृष्य, वर्ण्य और ग्रहपीड़ा को दूर करने वाला है। स्वर्णप्राशन के नित्य सेवन से बालक मेधायुक्त बनता है बालक की विभिन्न रोगों से रक्षा होती है। वह श्रुतधर (सुना हुआ सब याद रखने वाला) बनता है। यह स्वर्णप्राशन पुष्यनक्षत्र में उत्तम औषधों के साथ प्रयोग किया जाता है। पुष्यनक्षत्र में स्वर्ण और औषध पर नक्षत्र का एक विशेष प्रभाव रहता है। पुष्य नक्षत्र सत्ताइस नक्षत्रों में से एक है। पुष्य का अर्थ होता है पोषण करने वाला, ऊर्जा व शक्ति प्रदान करने वाला। विद्वान इस नक्षत्र को बहुत शुभ व कल्याणकारी मानते हैं। विद्वान इस नक्षत्र का प्राचीन चिन्ह गाय का थन मानते हैं। पुष्यनक्षत्र गाय के थन से निकले ताजे दूध सरीखा पोषणकारी, लाभप्रद व देह और मन को प्रसन्नता देने वाला होता है। पाणिनी संहिता में 'पुष्य सिद्धो नक्षत्रे' के बारे में यह लिखा है-

सिध्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि सिध्यः।

पुष्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि इति पुष्यः॥

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में प्रारम्भ किये गये सभी कार्य पुष्टिदायक सर्वथा सिद्ध होते ही हैं, निश्चित ही फलीभूत होते हैं। ऐसा माना जाता है कि कोई भी नया कार्य यदि इस शुभ मुहूर्त पर प्रारम्भ किया जाता है तो वह निश्चित

रूप से सफल होता है और शुभ परिणाम देने वाला होता है। स्वर्णप्राशन का मुख्य घटक द्रव्य स्वर्ण होता है और शास्त्रों के अनुसार स्वर्ण को खरीदने, बनाने, धारण करने के लिये पुष्यनक्षत्र बहुत ही शुभ दिन होता है। पुष्यनक्षत्र के दिन स्वर्ण के औषधीय गुण अधिक होते हैं। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार पुष्यनक्षत्र के दिन निकलने वाली किरणें स्वर्ण के गुणों को दुगुना कर देती हैं अतः इस नक्षत्र में दी जाने वाली दवा की औषधीय गुणवत्ता बढ़ जाती है। यह स्वर्णप्राशन न केवल रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हुए इन्फेक्शन से बचाता है बल्कि स्मरणशक्ति, मेधा को बढ़ाने के साथ-साथ पाचनशक्ति भी बढ़ाता है, जिसके कारण बालक हृष्ट पुष्ट व बलवान बनता है। यह शरीर के वर्ण को भी निखारता है। स्वर्णप्राशन के लाभों को हम निम्न रूप में भी व्यक्त कर सकते हैं।

मेधावर्धन : बुद्धि को तेज करने में सहायता करता है । स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।

अग्निवर्धन : भूख तथा पाचन शक्ति बढ़ाता है ।

बलवर्धन : बल तथा रोग प्रतिकार शक्ति (इम्युनिटी) बढ़ाता है जिससे बार बार होने वाली सर्दी, खांसी, बुखार जैसी बीमारियों से बच्चा सुरक्षित रहता है।

आयुषवर्धन : स्वास्थ्यपूर्ण जीवन की अवधि बढ़ाता है।

वृष्य : सार्वदैहिक शुक्र पर कार्यकर बच्चों में उत्साह और बल बढ़ाता है।

वर्ण्य : वर्ण को सुधारकर तेज प्रदान करता है।

स्वर्णप्राशन पूर्णतः नैसर्गिक रीति है जो बालक को उत्तम स्वास्थ्य, बल व बुद्धि प्रदान करती है। हजारों वर्षों से बालकों के सर्वांगीण स्वास्थ्यवर्धन के लिये उपयोग में लायी जा रही है। अतः स्वर्णप्राशन बल, वीर्य, आयु, स्मृति व बुद्धि को बढ़ाने के साथ ही बालक के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में सक्षम व उपयोगी है।

स्मृति शेष

1. श्रीमती गुलाबबाई जैन (पिड़रुआ वाले), सागर
2. श्री कस्तूरचंदजी जैन (बंधा वाले), सागर
3. श्री विमल कुमारजी जैन (हटा वाले), सागर
4. श्री कन्हेदीलालजी सिंघई एवं ध.प. श्रीमती शांतिबाई सिंघई, सागर
5. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री सेठ अरुण कुमार जैन (टायर वाले), सागर
6. श्री सेठ विमलकुमारजी जैन, पगारा, जिला छिंदवाड़ा
7. श्री मुन्नालालजी जैन (टोपी वाले), कटनी
8. श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन पगारा, जिला छिंदवाड़ा
9. श्री प्रेमचंदजी जैन (हीरापुर वाले), सागर
10. श्री सेठ बाबूलालजी जैन (व्याख्याता), सागर
11. श्री बाबूलालजी जैन (तिगोड़ा वाले), सागर
12. श्री अंशित गोदरे पिता श्री अनिल गोदरे, सागर
13. श्रीमती पुष्पाबाई जैन ध.प. श्री जयकुमारजी जैन (खटोरा वाले), सागर
14. श्री किशनचंदजी जैन (सोडरपुर वाले), सागर
15. श्री शिखरचंदजी (पारगुवां वाले), सागर
16. श्री चौधरी छक्कीलालजी जैन, डोंगरगाँव

पाठक प्रतिक्रिया

आदरणीय संपादकजी,

सादर जय जिनेन्द्र !

गोलापूर्व जैन पत्रिका का अप्रैल-जून 2019 अंक नई साज-सज्जा, नए कलेवर, लाभदायक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री सहित प्राप्त हुआ। सम्पादकीय में दशलक्षण पर्व के लक्षणों पर प्रकाश डालकर आपने बहुत सामयिक चर्चा की है। विश्वास है पाठक चिंतन करेंगे। कुशल सम्पादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई। आपने मेरे लेख को भगवान ऋषभदेव के चित्रों से अलंकृत कर प्रकाशित किया है, इस हेतु मैं आभारी हूँ।

-आपका

सुभाष सिंघई

सीनियर मैनेजर (से.नि.)

पी.एन. बैंक, कटनी

प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन मूल्य



» प्रो. भागचंद्र जैन 'भागेन्दु'

निर्देशक, संस्कृत, प्राकृत तथा जैन विद्या

अनुसंधान केन्द्र, दमोह

फोन : 07812-221135, मो. 9425455338

प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में भारतीय परम्परा में बहुलता और विविधता के सन्दर्भ में 'प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन मूल्यों' का निदर्शन इस आलेख में किया गया है।

प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार मानव जीवन एकांगी के स्थान पर सर्वांगीण माना गया है। इसलिए धर्म के साथ अर्थ और काम का भी विवेचन किया गया है। मानवीय जीवन में विविधता है और उसे एक पक्षीय नहीं बनाया जा सकता।

भारतीय परंपरा में इस बात पर बहुत अधिक बल दिया गया है कि व्यक्ति प्रामाणिक जीवन जीये। आज का जीवन भौतिकता प्रधान है, धर्म की तुलना में यह काम और अर्थ प्रधान युग है। ऐसी भौतिक चकाचौंध में भी पूजनीय तो वे ही लोग हैं जो शुद्ध, समर्पित, सेवाभावी, साधनारत जीवन जीते हैं और सिद्धांतों में अडिग हैं। आज के युग में नैतिकता घटी है। नैतिकता के अभाव में अवमानना स्वाभाविक है। वस्तुतः मूल्य रहित कोई व्यक्ति अथवा समाज अपनी पूर्ण परिणति और प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता। भारतीय और विशेष रूप से प्राकृत परंपरा कर्म प्रधान और गुणमूलक है। पर कर्म सिद्धांत नियतिवाद का पर्याय नहीं है। स्वेच्छ और पुरुषार्थ से व्यक्ति कर्मों के परिणामों को बदल सकता है। उसके लिए उचित जीवन मूल्य और आचरण आवश्यक है। बात आरंभ करते ही मेरे समक्ष दो महान आप्त पुरुषों का व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन चित्रपट की तरह सामने आ जाता है।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के दो महान क्रान्तदृष्ट आचार्य जिन्हें जनमानस ने अर्हत, 'जिन' और तीर्थंकर-धर्मतीर्थ प्रवर्तक माना। लोक मंगल और कल्याण की बात करने वाले इन दोप.ज्ञा पुरुषों ने लोक भाषाओं में अपने अनुभवों को लोक के साथ बाँटा और ज्योनार की तरह सबके कल्याण के लिए परोस दिया।

महावीर जिन लोकभाषाओं के पुरोधा बने उन्हें बाद में 'प्राकृत' नाम

से अभिहित किया गया और बुद्ध जिन लोकभाषाओं के पुरोधा बने उन्हें 'पालि' नाम से सम्बोधित किया गया। हम कृतज्ञ हैं उन महान आचार्यों की तपस्या के, जिन्होंने इन्हें ग्रंथों में गूँथकर हम सब तक पहुँचाया। और तब हम सोच पा रहे हैं, कह पा रहे हैं कि 'प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन मूल्य' विषय पर विचार करना आज अधिक सामयिक और महत्वपूर्ण हो गया है।

छठवीं शती के इन दो महान आप्त पुरुष महावीर और बुद्ध के व्यष्टि और समष्टि के लोक मंगल के लिए किये कार्यों-उपदेशों से इसका पता चलता है। ये दोनों 'भगवत्ता' को इसलिए प्राप्त हुए क्योंकि इन्होंने व्यष्टि और समष्टि के कल्याण के लिए जन सामान्य जिसे सबसे अंतिम आदमी कहा जाता है, उसकी समझ में आने वाली बोलियों और भाषाओं को अपनाया। वे लोक मंगल के लिए लोक भाषाओं का प्रयोग कर अपने उपदेशों के माध्यम से व्यष्टि और समष्टि से समग्र रूप से इसलिए जुड़ पाए क्योंकि वे उन्हीं की भाषाओं में उनके कल्याण की बात सहजता के साथ उन तक पहुँचाते थे। यहाँ बोलियाँ बाद में 'प्राकृत' और 'पालि' के नाम से अभिहित हुईं।

महावीर ने उस 'अर्ध मागधी' को माध्यम बनाया जिसमें बोलियों की विविधता को समाहित किया गया था। आम आदमी जिसे आज कहा जाता है वह अंतिम 'जन' था। जिसे महावीर की 'समवशरण सभाओं में निर्बाध रूप से सम्मिलित होने का अधिकार था। बाद में प्राकृत आगम और साहित्य में प्रस्तुत किया गया है। उसे इस दृष्टि से जाँचना-देखना आवश्यक है जहाँ राजगृह का 'दर्दुरक' कमल पुष्प लेकर महावीर के समवशरण में सम्मिलित होने के लिए जा रहा है, वहीं सम्राट श्रेणिक अपने पूरे राजतंत्र के साथ समवशरण में पहुँचने के लिए अपने राज-भवन से निकलता है। ये कुछ ऐसे सन्दर्भ हैं जो इतने अलंकृत और रूपकों के रूप में प्राकृत आगम एवं आगमिक साहित्य में निबद्ध मिलते हैं जिनमें से सामान्य जन और सर्वोच्च सत्ता के सिंहासन पर प्रतिष्ठित सम्राट तक को एक पथ पर चलते हुए प्रस्तुत करते हैं।

अर्ध मागधी आगमों और आगमिक साहित्य के कुछ बिन्दु यहाँ प्रस्तुत हैं :-

1. नायाधम्म कहाओ :

द्वादशांग आगमों में 'नायाधम्म कहाओ' छठा अंग है। यह अंग एक प्रकार से 'आकर' अंग है। प्रस्तुत आगम में आत्मा की उन्नति के क्या हेतु हैं, किन कारणों से जीवन अधोगत होता है, आहार का उद्देश्य, संयमी जीवन की कठोर साधना, शुभ परिणाम, अनासक्ति, श्रद्धा का महत्व आदि विषयों पर कथाओं के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। ये कथाएँ जीवन के उत्थान के लिए हैं। इनमें अनुभव का अमृत है।

इस ग्रंथ के सातवें अध्ययन 'रोहिणी गाए' का प्रसंग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैसा कि राजगृह नगर में धन्ना सार्थवाह की चार पुत्रवधुओं-उज्जिता, भोगवती, रक्षिका और रोहिणी का उदाहरण जीवन मूल्यों का प्रशस्त निदर्शक है। नेष्ठी धन्ना अपनी चारों पुत्रवधुओं की परीक्षा के लिए पाँच-पाँच शालि के दाने उन्हें देता है। प्रथम पुत्रवधू ने फेंक दिये। दूसरी ने प्रसाद समझकर खा लिये। तीसरी ने उन्हें संभालकर रखा और चौथी ने खेती करवाकर उन्हें खूब बढ़ाया। श्रेष्ठी ने चतुर्थ पुत्रवधू रोहिणी को ग4हस्वामिनी

बनाया। वैसे ही गुरु पंच दाने रूप महाव्रत शाली के दाने शिष्यों को प्रदान करता है। कोई उसे नष्ट कर डालता है, दूसरा उसे खानपान का साधन बना लेता है। कोई उसे सुरक्षित रखता है, और कोई उसे उत्कृष्ट साधना कर अत्यधिक विकसित करता है।

‘योग्यं योग्येन योजयेत्’- इस छोटी सी उक्ति का संज्ञापन यह कथा प्रसंग अपने भीतर विशाल जीवन मूल्य संजोए हुए है। वास्तव में ‘योजकस्तत्र दुर्लभः’ अर्थात् योग्यतानुकूल योजना करने वाला कोई विरला ही होता है। धन्य सार्थवाह उन्हीं विरल योजकों में से एक था। अपने परिवार की सुव्यवस्था करने के लिए उसने जिस सृष्ट्रबूझ से काम लिया, वह सभी के लिए मागदर्शक है।

इसी आगम के ‘तृतीय अध्ययन’ में चम्पा नगरी के दो श्रेष्ठियों के पुत्रों में ‘पय पानीवत प्रेम’ के दिग्दर्शनपूर्वक एक सटीक रूपक प्रस्तुत है। एक का चरित इस तथ्य का ज्ञापक है कि ‘संशयात्मा विनश्यति’ और दूसरे का कृत्य ‘श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्’ का निदर्शक है। यह प्रकरण जीवन मूल्यों की इस श्रृंखला का नियामक है कि सम्पूर्ण सफलताप्राप्ति की अनिवार्य शर्त है- पूर्ण निष्ठा, समग्र उत्साह और परिपूर्ण मनोयोग को उसमें लगाना।

इसी आगम के प्रथम अध्ययन ‘उत्खिन्नताणां’ (उत्खिन्न ज्ञात) अभयकुमार मेघकुमार की ज्ञात-कथा के तत्त्व हम हजारों वर्ष बाद कबीर की उलटवासियों में देख पाते हैं।

2. उवासग दसाओ (उपासकाध्ययन) :

यह सातवाँ आगम ग्रंथ है। इसमें दश श्रावकों के कथानकों के द्वारा जैन गृहस्थों के धार्मिक नियम समझाए हैं। ये उपासक अपनी धर्म साधना में अत्यंत संलग्न थे और नाना प्रकार की विघ्न बाधाओं के आने पर भी अपनी साधना से च्युत नहीं हुए।

आनंद धनिक श्रावक है। इसका चरित्र इस बात का निर्देशक है कि व्यक्ति उत्पादन तो करे किन्तु उसका उपभोग ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के अनुरूप करे। इस आगम में विवेकशील नागरिकों को भौतिक सुखों की नश्वरता और जीवन के यथार्थ प्राप्य का संदेश आत्म स्वरूप के अधिगम पूर्वक दिया गया है। मनुष्य जीवन भर अपने पारिवारिक, सामाजिक तथा लौकिक दायित्वों के निर्वाह में ही लगा रहे, यह उचित नहीं है। इसमें यह निर्देशित है कि व्यक्ति अपने जीवन को आत्मा के चिंतन, मनन, अनुशीलन आदि में लगाए। आनंद ने श्रावक व्रत ग्रहण करके करणीय और अकरणीय कार्यों का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में आनंद के साथ ही अन्य नौ श्रावकों के चरित्र भी आदर्श आचरण संहिता के प्रतिपादक हैं।

3. अनुत्तरोवाइय दसाओ (अनुत्तरौपपातिक दशा) :

यह द्वादशांगी का नवमा अंग है। शब्दार्थ के अनुसार ‘अनुत्तर, उपपात और दशा’ शब्दों से ‘अनुत्तरौपपातिक दशा’ शब्द बना है। अनुत्तर : अनुत्तर विमान, उपपात : उत्पन्न होना, और दशा : अवस्था या दश संख्या का सूचन। असमें ऐसे साधकों का वर्णन है जिन्होंने यहाँ से आयुष्य पूर्ण कर अनुत्तर विमानों में जन्म लिया और फिर मनुष्य जन्म पाकर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

इस श्रुतांग में श्रेणिक, धन्यकुमार आदि के विशिष्ट चरित्रों के माध्यम से उपवास, तपश्चरण, संन्यास विधि आदि के उत्कृष्ट क्रियात्मक चित्रण करके

ग्रिन्थ तपोनिष्ठा और त्याग के आदर्श जीवन मूल्य अभिव्यंजित हुए हैं।

4. उत्तरज्झयणाणि (उत्तराध्ययन सूत्र) :

‘उत्तराध्ययन सूत्र’ जैन आगम साहित्य का प्रतिनिधि आगम है। इसमें जीवन निर्माण हेतु मूल्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। विनयशील बनने, परीषहों पर विजय प्राप्त करने, धर्म श्रवण कर उसे आचरण में लाने, अप्रमत्त बनने, समाधिमरण अपनाने, अज्ञान को त्यागते हुए क्षरिक विषय सुकों में अनासक्त रहने, पाँच समिति तीन गुप्तियों का पालन करने आदि का वर्णन इसमें सहज प्राप्त होता है। अनित्य, अशरण, एकत्व आदि भावनाएँ भी इसके विभिन्न अध्ययनों में पुष्ट हुई हैं। मोक्षमार्ग के सभी पक्षों एवं जिज्ञासाओं का आवश्यक समाधान इस ग्रंथ में उपलब्ध होता है।

उत्तराध्ययन का प्रारंभ ‘विनय’ से होता है। विनय की पृष्ठभूमि पर ही गृहस्थ और प्रव्रजित दोनों का विशाल भव्य प्रसाद टिका रहता है। वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में जहाँ मुनियों में निरंतर गिरावट देखी जा रही है, वहाँ तो ‘विनय सूत्र’ ही नहीं, पूरा का पूरा उत्तराध्ययन आचरणीय है। उत्तराध्ययन का प्रथम अध्ययन ‘विणयसुयं’ के सूत्र वचन अंक गणित में बिन्दु की तरह महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ का यह अध्ययन वर्तमान शिक्षा पद्धति की विसंगतियों को नियंत्रित करने में पूर्णतः सक्षम है। इसमें विनीत और अविनीत शिष्य का स्वरूप दिक्लाकर अविनीत दुःशील का निष्कासन सभी संस्थानों से वैसे ही किया जाता है जैसे जिस कुतिया के कान पीप पड़ जाने से सड़ जाते हैं, वह जहाँ भी जाते हैं उससे गंदगी और रोग फैलने का डर रहता है, इसीलिए उसे लोग तिरस्कार पूर्वक निकाल देते हैं। इसी प्रकार दूषित आचार-विचार वाले संघ या गुरु के प्रतिकूल आचरण वाले अनुशासनहीन शिष्य को सभी स्थानों से तिरस्कार पूर्वक निकाल दिया जाता है। वस्तुतः यह ग्रंथ शिष्य की आदर्श आचरण संहिता है।

इस ग्रंथ का द्वितीय अध्ययन ‘परीषह विजय’ जीवन की कला है। इस अध्ययन की शिक्षाएँ, उपसर्गों को जीतने की मनोवैज्ञानिक विधि और मानसिक संतुलन बनाये रखने हेतु जीवन मूल्यों की निदर्शक हैं।

आठवाँ ‘कापिलीय अध्ययन’ मानव मन की एक चिरंतन समस्या का समाधान देता है। लोभ-अलोभ और राग-विराग का संघर्ष जीवन में सदा से चलता रहा है। कपिल का अन्तर्द्व द्वे राग से विराग की ओर उन्मुख करता है। दो मासा स्वर्ण के लिए रात भर भयकने वाला विशाल साम्राज्य से भी तृप्त नहीं हुआ। लोभ, असंतोष, अतृप्ति के गहन कूप में डूबता ही गया, डूबता ही गया, पर डूबते को तिनके का सहारा मिला, वापस मुडू और एक सूत्र पर अयक गया-

इइ दुप्पूए इमे आया। -8.16

यह मान काङ्गा दुप्पू है। लोभ की खाई कभी भरने वाली नहीं है।

लाहा लोहो पवड्डइ। -8.17

लाभ से लोभ निरंतर बढ़ता ही जाता है। इस दुस्तर सागर को पार कराने वाली एक ही नाव है-

सव्वेसु काम जाएसु, पासमाणो न लिप्पइ। -8.4

समस्त कामभोगों में सब प्रकार से देखता हुआ भी अनदेखा रहे, उनमें डूबे नहीं, तैरने की कला से काम सागर को तैरता रहे। यही इसका जीवन मूल्य है।

‘नमि पव्वज्जा’ नामक नवम अध्ययन एकत्व भावना तथा विरक्ति के चञ्चलतम जीवन मूल्यों का उद्घाटक है। वस्तुतः यह अध्ययन वैराग्य और अनासक्ति का जीवन्त शास्त्र है।

‘दुमपत्तयं’ शीर्षक दशम अध्ययन में मानव जीवन के प्रत्येक क्षण को सार्थक करने हेतु मूल्यों की विवेचना की गई है।

‘हरिएसिज्ज’ : हरिकेशीय शीर्षक बारहवाँ अध्ययन धर्म-समन्वयवादी जीवन मूल्यों के चिन्तन का परिचायक है।

अरिष्ट नेमि के भाई रथनेमि का आख्यान नारि-चरित्र का उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित करता है। राजीमती का कथन नारी के शील के लिए गौरव शिला है।

‘उत्तराध्ययन सूत्र’ में मानव के व्यक्तित्व में औदात्य की सम्प्रतिष्ठा और जीवन शोधन की कला का मनोवैज्ञानिक शैली में सांगोपांग विवेचन हुआ है। इसमें कर्मानुसार जाति का सिद्धांत मानवता की प्रतिष्ठा के लिए आया है-
कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।

बइस्सो कम्मुणा होइ, सुत्रो हवइ कम्मुणा।। -25.33

इसी प्रकार श्रमण, ब्राह्मण, मुनि और तपस्वी के आदर्श रूप को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है-

समयाए समणो होइ, बम्भचरेण बम्भणो।

नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो।। -25.32

5. दसवेयालिय सुत्तं (दशवैमलिक सूत्र) :

मूल आगमों में दशवैकालिक का महत्वपूर्ण स्थान है। काल को छोड़ विकाल अर्थात् संध्या समय में इसका अध्ययन किया जाता है। इसीलिए यह ग्रंथ दशवैकालिक कहलाता है। इसमें श्रमण जीवन की आचरण संहिता का निरूपण है। धर्म शास्त्र के इतिहास में आचार्यों और चिन्तकों द्वारा विश्लेषित ‘धर्म’ की शताधिक परिभाषाएँ प्राप्त होती हैं। विश्व के जितने भी चिन्तक हुए उन सभी ने धर्म पर चिन्तन किया पर धर्म की जितनी व्यापक परिभाषा ‘दशवैकालिक’ में दी गई है, अन्यत्र दुर्लभ है। यथा-

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।

देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।।

-दसवेयालिय सुत्तं 1.1

(धर्म सर्वोत्तम मंगल है। उस धर्म का लक्षण है- अहिंसा, संयम और तप। जिसका मन सदा धर्म में लीन रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं)

अस ग्रंथ में भिक्षु चर्या के अंतर्गत ‘माधुकरी वृत्ति’ का सुंदर विवेचन हुआ है। जैन श्रमण किसी को भी बिना पीड़ा पहुँचाए शुद्ध सात्विक आहार सूक्ष्म अहिंसा की मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखकर ग्रहण करता है। जैसा कि निम्नलिखित सूत्र में स्पष्ट किया गया है-

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियई रसं।

न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं।।

-दसवेयालिय सुत्तं 1.2

जिस प्रकार भ्रमर, वृक्षों के पुष्पों में से थोड़ा-तोड़ा रस पीता है, (तथा किसी भी) पुष्प को पीड़ा नहीं पहुँचाता (म्लान नहीं करता), और वह अपने आपको भी तृप्त कर लेता है।

भ्रमर उतना ही रस ग्रहण करता है जितना उदर पूर्ति के लिए आवश्यक

होता है। वह अगले दिन के लिए कुछ भी संग्रह करके नहीं रखता, यहाँ जीवन मूल्य की यह अभिव्यंजना है कि श्रमण अपनी संयम यात्रा के लिए जितना आवश्यक हो, उतना ही लें, संचय न करें।

यह विश्लेषण केवल श्रमणों के लिए नहीं है, वरन् शासक सामान्यजन (प्रजा) के कल्याण के लिए कैसे व्यवहार करे, यह भी अभिव्यंजित करता है।

दशवैकालिक में साधक को सर्वोच्च विकास हेतु कौनसे जीवन मूल्य आत्मसात करना आवश्यक है, उन्हें सोदाहरण विश्लेषित किया गया है। इस दृष्टि से आचार-अनाचार, वाणी विवेक, इन्द्रिय संयम, कषाय-विजय, विनय-सम्पन्नता के विवेचन बहुत मनोहारी हैं।

शौरसेनी प्राकृत ग्रंथों के कतिपय बिन्दु

शौरसेनी प्राकृत भाषा में जीवन मूल्यों का विवेचन करने वाला साहित्य ‘चरणानुयोग साहित्य’ के अंतर्गत आता है। इसमें श्रावक एवं साधु के आचरण तथा चर्या विधि का वर्णन होता है। व्यक्तिगत आचरण के सुधार, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक प्रतिष्ठा, सुराष्ट्र एवं समाज विकास की दृष्टि से इस प्रकार के साहित्य का विशिष्ट स्थान है। मुनि एवं गृहस्थ के निर्दोष आचरण उसकी उत्पत्ति, उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि तथा धारण किये गये चारित्र की रक्षा का विवेचन ‘चरणानुयोग’ का विषय क्षेत्र माना गया है।

चरणानुयोग साहित्य का मूल स्रोत द्वादशशंग वाणी है, जिसके प्रथम आगम ‘आचारंग सुत्त’ में मुनि-आचार तथा सप्तम आगम ‘उवासगज्जयण सुत्त’ में श्रावकाचार का विस्तृत वर्णन है। परवर्ती आचार्यों ने उसी के आधार पर प्रचुर साहित्य की रचना की है। इस प्रकार के साहित्य में प्रशस्त जीवन मूल्यों का यथेष्ट निदर्शन सहज ही होता है।

मुनि-आचार संबंधी प्रमुख ग्रंथ

1. **पवयणसारो (प्रवचनसार) :** आचार्य कुन्दकुन्द ने दिगंबर मुनि पद की दीक्षा के लिए आवश्यक कर्तव्य कार्यों की विवेचना इस ग्रंथ के ‘चारित्राधिकार’ में की है। और उन जीवन मूल्यों का विवेचन किया है जो 28 मूलगुण धारी साधुओं के लिए आवश्यक हैं।

2. **णियमसारो (नियमसार) :** इस ग्रंथ की गाथा सं. 77 से 157 तक (81 गाथाओं में) मुनि चर्या के लिए आवश्यक साधन रूप छह आवश्यकों आदि का विवेचन किया है।

3. **अट्ट पाहुइ (अष्ट पाहुइ) :** आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित ‘अट्ट पाहुइ’ (दर्शन, सूत्र, चरित्र, बोध, भाव, लिंग, शील, मोक्ष प्राभूत) ग्रंथों में भी मुनि जीवन के मूल्यात्मक साहित्य का मनोवैज्ञानिक शैली में सरस विवेचन किया गया है।

4. **रयणसारो :** आ. कुन्दकुन्द द्वारा रचित यह अत्यंत मूल्यवान, दिशादर्शक स्व-पर विज्ञान का खजाना है। अपावनताओं के इस युग में 167 गाथात्मक यह कृति जीवन मूल्यों की समर्थ संवाहिका है।

5. **बारस अणुवेक्खा (द्वादशानुप्रेक्षा) :** आ. कुन्दकुन्द द्वारा रचित इस ग्रंथ में वर्णित अनित्य, अशरण आदि 12 अनुप्रेक्षाओं के विवेचन द्वारा शाश्वत जीवन मूल्यों का निदर्शन हुआ है।

6. **मूलाचार :** यह मुनि आचार का विवेचन करने वाला सर्वप्रथम

स्वतंत्र ग्रंथ माना गया है। इसके रचनाकार आचार्य वट्टकेर (प्रथम शती का अंतिम तथा दूसरी शती का प्रारंभिक चरण) माने गए हैं। इसके 12 अधिकार हैं जिनमें 1252 गाथाएँ हैं।

इस ग्रंथ के 'समयसाराधिकार' में शास्त्र के सार का प्रतिपादन करते हुए चारित्र को सर्वश्रेष्ठ कहा है। जीवों की रक्षा के लिए 'यतना' को सर्वश्रेष्ठ कहा है। प्रश्नोत्तरी शैली में समस्या प्रस्तुत करके समाधान भी निरूपित है :-

कथं चरे? कथं चिट्टे? कथमासे? कथं सए?

कथं भुंजेज्ज भासेज्ज कथं, पावं ण बज्जदि?॥1012॥

(साधु या साध्वी) किस प्रकार आचरण करे, कैसे खड़ा हो? कैसे बैठें? कैसे सोएँ? कैसे खाएँ और कैसे बोलें? जिससे कि पाप कर्म का बंधन न हो?

इसका समाधान निम्नलिखित गाथा में मिलता है-

जदं चरे, जदं चिट्टे, जदमासे, जदं सए।

जदं भुंजेज्ज, भासेज्ज एवं पावं न बज्जिइ॥1013॥

(साधु या साध्वी) सावधानी पूर्वक आचरण करें, सावधानी पूर्वक उठें, सावधानी पूर्वक बैठें, सावधानी पूर्वक सोएँ, सावधानी पूर्वक आहार करें और सावधानी पूर्वक बोलें। इससे पाप कर्म का बंधन नहीं होता।

'दशवैकालिक' एवं 'मूलाचार' इन दोनों ग्रंथों में साधु संघ के अनुशासन हेतु निर्धारित जीवन मूल्यों की विवेचना की गई है।

7. भगवती आराधना (अपरनाम मूलाराधना) : इसके रचनाकार आ. शिवार्य (प्रथम शताब्दी) हैं। इसमें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र और तप इन जीवन मूल्यात्मक चार आराधनाओं का विवेचन है। प्रधानतया मुनिधर्म का ही यहाँ वर्णन है।

8. कार्तिकेयअणुवेस्खा (कार्तिकेयानुप्रेक्षा) : स्वामी कार्तिकेय ने इस ग्रंथ में बारह अनुप्रेक्षाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है तथा सन्दर्भानुसार जीव आदि सात तत्त्व, अहिंसा आदि द्वादश व्रत, क्षमा आदि दश धर्म, बारह प्रकार के तप एवं ध्यान का वर्णन है। विस्तार पूर्वक आचार का स्वरूप एवं आत्म शुद्धि की प्रक्रिया भी इसमें दर्शाई गई है।

श्रावकाचार संबंधी साहित्य

अहिंसा आदि बारह व्रतों का धारण, द्यूत क्रीड़ा आदि सप्त व्यसन त्याग एवं रात्रि भोजन त्याग, देव-शास्त्र एवं गुरु की आराधना आदि श्रावकाचार धर्म के मूल लक्षण हैं। ये सभी तत्त्व जीवन मूल्यों के सर्जक हैं। अस विषय को लेकर शौरसेनी प्राकृत में प्रचुर साहित्य का प्रणयन हुआ। कुछ प्रमुख ग्रंथ निम्नलिखित हैं :-

वसुनंदी श्रावकाचार : इसके रचनाकार आचार्य वसुनंदी (12वीं शती पूर्वार्द्ध) का विशेष महत्व है। क्योंकि उन्होंने व्यक्ति से समाज, समाज से राष्ट्र एवं राष्ट्र से विश्व के सुधार की कल्पना कर समाज तथा विश्व के नव निर्माण के संदर्भ में उसके व्यक्तिगत आचरण के सुधार हेतु जीवन मूल्यों की

विवेचना की है।

इसी प्रकार प्राकृत भाषा में रचित श्रावकाचार संबंधी अन्य ग्रंथों में पाहुड़ दोहा, सावय-धम्मपण्णती (हरिभद्र), सावय-धम्मदोहा (लक्ष्मीचंद्र, 15वीं शती) सिद्धंतत्थसारो (सिद्धान्तार्थसार) (महाकवि रङ्गधू), वित्तसारो (वृत्तसार अथवा आचार सार अथवा चारित्रसार) आदि ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। ये सभी ग्रंथ गृहस्थ के आत्मानुशासन हेतु हैं। अणुव्रत और शीलव्रत के माध्यम से गृहस्थ आत्मानुशासन में रहे, यही समष्टि के लिए व्यष्टि का सबसे बड़ा अवदान है।

प्राकृत काव्य साहित्य

प्राकृत साहित्य में अनेक सरस काव्यों की भी रचना हुई है। इसमें महाकाव्य, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य, कथा, मुक्तक गीति काव्य आदि सभी विधाओं में जीवन मूल्यात्मक पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है। उक्त विधाओं में से कतिपय प्रतिनिधि रचनाओं से जीवन मूल्यात्मक प्रसंग यहाँ विवेचन है :-

1. रावणवहो, सेतुबन्ध महाकाव्यम् : रावणहो अरनाम 'सेतुबन्ध' प्राकृत भाषा का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। यह महाराष्ट्री प्राकृत में रचित है। रावणवध अथवा दशमुखवध नाम से भी यह प्रचारित है। उसके रचयिता महाकवि प्रवरसेन (पाँचवीं शताब्दी) हैं।

इस महाकाव्य में जीवन मूल्य विधायक पर्याप्त सामग्री सुलभ है। इस महाकाव्य के नायक का चरित्र स्वयं आदर्श मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार सत्पुरुषों के संबंध में एक उक्ति देखिये-

ते विरला सप्पुरिसा जे अभणन्ता घडूँति कज्जालावे।

धोअ चिअ ते वि दुमा जे अमुणिअकुसुमनिग्गमा देन्ति फलं॥3.9॥

(जो बिना कुछ कहे ही कार्य कर देते हैं, ऐसे सत्पुरुष विरले ही होते हैं। उदाहरण के लिए बिना पुष्पों के फल देने वाले वृक्ष बहुत कम होते हैं।)

समर्थ पुरुषों को लक्ष्य करके कहा गया है-

आहिअ समराअमणा वसणम्मि अ उच्छवे अ समराअमणा।

अवसाअअविसमत्था, धीरच्चिअ होन्ति संसए वि समत्था॥3.20॥

(समर्थ लोग संशय उपस्थित होने पर धीरता ही धारण करते हैं। संग्राम उपस्थित होने पर वे अपने आपको समर्पित कर देते हैं। सुख और दुःख में वे समभाव रखते हैं और संकट उपस्थित होने पर विचार-पूर्वक कार्य करते हैं।)

2. गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती) : 'गाहा सत्तसई' शृंगार रस प्रधान एक मुक्तक काव्य है जिसमें प्राकृत के सर्वश्रेष्ठ कवियों और कवयित्रियों की चुनी हुई लगभग 700 गाथाओं का संग्रह है। विविध अलंकारों से सज्जित ध्वनि-अर्थ-प्रधान से गाथाएँ महाराष्ट्री प्राकृत में आर्या छंद में लिखी गई हैं। इस कृति का संग्रहकर्ता हाल अथवा आंध्रवंश के सातवाहन (69 ई) को माना जाता है।

(शेष अगले अंक में)

1. 'दशवैकालिक सूत्र' की गाथाओं से ये गाथाएँ निम्न रूप से तुलनीय हैं-

प्र.- कथं चरे? कथं चिट्टे? कथमासे: कथं सए?

कथं भुंजतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई?॥30॥

उ.- जयं चरे, जयं चिट्टे, जयमासे, जयं सए।

जयं भुंजतो भासंती, पावं कम्मं न बंधई॥31॥



जयपुर में अनूठा प्रयोग

गोबर की लकड़ी से अंतिम संस्कार

पेड़ों व पर्यावरण को बचाने के लिए राजस्थान की राजधानी जयपुर में नई पहल की जा रही है। इस पहल को देशभर में अपना लिया जाए तो रोजाना हजारों पेड़ों को काटने से बचाया जा सकता है। जयपुर में चांदपोल मोक्षधाम में लकड़ी के बजाय गोबर से बनी लकड़ी (गोकाष्ठ) से अंतिम संस्कार किया गया। देशभर में गोबर के कंडों से अंतिम संस्कार किये जा रहे हैं मगर जयपुर में पहली बार गोबर की लकड़ी से दाह संस्कार किया गया।

गोबर से अंतिम संस्कार करवाने वाले नागपुर निवासी विजय लाम्या भी इस नए प्रयोग के लिए जयपुर आए। विजय ने बताया कि नागपुर सहित पूरे महाराष्ट्र में अब तक करीब 4000 अंतिम संस्कार उपलों से करवा चुके हैं लेकिन जयपुर में पहली बार गोबर के गोकाष्ठ का प्रयोग किया जा रहा है। लकड़ी के जलने से कार्बन डाई ऑक्साइड निकलती है जबकि गोकाष्ठ के जलने से धुएँ में ऑक्सीजन निकलती है जो कि स्वस्थ पर्यावरण के लिए भी बेहतर है।

रोज 100 दाह संस्कार

जयपुर में रोजाना हो रहे 100 दाह संस्कार के लिए 50 हजार क्विंटल लकड़ी काम में आ रही है। दाह संस्कार के लिए रोजाना करीब 200 पेड़ों को काटा जा रहा है। अगर लकड़ी के स्थान पर गोकाष्ठ का उपयोग किया जाए तो रोजाना 200 पेड़ों का जीवन बचाया जा सकता है।



सेहत के लिए लाभकारी

लकड़ी के जलने पर कार्बन डाई ऑक्साइड निकलती है। उपले जलने पर 40 प्रतिशत तक ऑक्सीजन निकलती है। वहीं अगर गोकाष्ठ का उपयोग बढ़ता रहा तो गायों की स्थिति में भी सुधार होगा।

गौशाला में तैयार

गोसेवा परिवार समिति की ओर से संचालित श्री नारायणधाम गौशाला बगरू में गाय के गोबर से गोकाष्ठ बनाया जा रहा है। समिति के विष्णु अग्रवाल ने बताया कि गौशालाओं में मशीन लगाई है जिसमें ताजा गोबर डालने पर गोकाष्ठ बनकर बाहर आती है। इन्हें सुखा लिया जाता है। हाथ से बने उपलों की अपेक्षा गोकाष्ठ मजबूत होता है। शव आसानी से जल जाता है। ज्यादा से ज्यादा लोगों को गोकाष्ठ का उपयोग करना चाहिए।

सकारात्मक दृष्टिकोण

» सचेन्द्र जैन

एक आदमी ने सारी जिंदगी की कमाई लगाकर एक बेहद सुंदर सा घर बनाया। उसमें सुख-सुविधा के सारे साधन जुटाए। कोई भी कमी नहीं छोड़ी। मित्रों ने भी उसके मकान की तारीफ की, उसे प्रसन्नता हुई। उसे लगा कि उसके जीवन में कुछ सार्थक काम किया। लेकिन घर तैयार होने के कुछ ही दिनों बाद उसमें आग लग गई और पूरा मकान जलकर राख हो गया। दोस्त और सहकर्मी उसे सांत्वना देने पहुँचे लेकिन उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह आदमी जरा भी विचलित नहीं है बल्कि खुश है। सांत्वना देने आए लोगों ने पूछा कि क्या घर के जल जाने की कोई चिंता नहीं है?

आदमी ने जवाब दिया- मैं ईश्वर का आभारी हूँ क्योंकि मैं अगले ही हफ्ते उस मकान में शिफ्ट होने वाला था। मैं खुश हूँ कि मेरा परिवार बच गया। वस्तुतः यही स्वस्थ सकारात्मक दृष्टिकोण है। वह आदमी जानता था कि दूसरा घर तो बन सकता है लेकिन खोया हुआ परिवार नहीं मिल सकता। जीवन में यही संतुलित मानसिकता होनी चाहिए।

सकारात्मक दृष्टिकोण के अभाव में आज जरा-जरा सी बात पर अवसाद हमें घेर लेता है। हम कुंठित हो जाते हैं। अतः हमें सकारात्मक सोच के साथ जीवन का आनंद लेने का प्रयास करना चाहिए।

मो. 9179649313

पुत्र का पत्र पिता के नाम

पूज्य पिताजी!
आपके आशीर्वाद से
आपकी भावनाओं-इच्छाओं
के अनुरूप
मैं अमेरिका में व्यस्त हूँ।
यहाँ पैसा, बंगला, साधन सब है
नहीं है तो केवल समय।
मैं आपसे मिलना चाहता हूँ
आपके पास बैठकर
बातें करना चाहता हूँ
आपके दुःख-दर्द को
बाँटना चाहता हूँ
परंतु क्षेत्र की दूरी
बच्चों के अध्ययन की मजबूरी
कार्यालय का काम करना जरूरी
क्या करूँ? कैसे कहूँ?
चाह कर भी
स्वर्ग जैसी जन्मभूमि और माँ के
पास
आ नहीं सकता।
पिताजी!
मेरे पास अनेक संदेश आते हैं-
'माता-पिता सब बेचकर
भी बच्चों को पढ़ाते हैं
और बच्चे सबको छोड़कर
परदेश चले जाते हैं
नालायक पुत्र
माता-पिता के किसी काम नहीं
आते हैं।'
पर पिताजी मैं कहाँ जानता था
इंजीनियरिंग क्या होती है?
मैं कहाँ जानता था कि
पैसे की कीमत क्या होती है?
मुझे कहाँ पता था कि
अमेरिका कहाँ है?
मेरा कॉलेज, पैसा और अमेरिका
तो बस आपकी गोद ही थी न?
आपने ही मंदिर न भेजकर
स्कूल भेजा

पाठशाला नहीं कोचिंग भेजा
आपने अपने मन में
दबी इच्छाओं को पूरा करने
इंजीनियरिंग/पैसा/पद की कीमत
गोद में बिठाकर सिखाई
माँ ने भी दूध पिलाते हुए
मेरा राजा बेटा बड़ा आदमी बनेगा
गाड़ी-बंगला होगा हवा में उड़ेगा
कहा था
मेरी लौकिक उन्नति के लिए
घी के दीपक जलाए थे।

मेरे पूज्य पिताजी!
मैं बस आपसे
इतना पूछना चाहता हूँ
मैं आपकी
सेवा नहीं कर पा रहा
मैं बीमारी में
दवा देने नहीं आ पा रहा
मैं चाहकर भी
पुत्र धर्म नहीं निभा पा रहा
मैं हजारों किलोमीटर दूर
बंगले में और आप
गाँव के उसी पुराने मकान में।
क्या इसका दोष सिर्फ मेरा है?
-आपका पुत्र

एक शिक्षक की कलम से

परीक्षा समाप्ति के बाद और परिणाम आने से पहले
एक शिक्षक का विद्यार्थी के माता-पिता को पत्र

प्रिय माता-पिता!
परीक्षाओं का दौर
लगभग समाप्ति की ओर है।
अब आप अपने बच्चों के
रिजल्ट को लेकर
चिंतित हो रहे होंगे।
लेकिन कृपया याद रखें,
वे सभी छात्र
जो परीक्षा में शामिल हो रहे हैं,
इनके ही बीच में
कई कलाकार भी हैं,

जिनकी फिजिकल फिटनेस
फिजिक्स के अंकों से ज्यादा
महत्वपूर्ण है।
यदि आपका बच्चा
मेरिट अंक प्राप्त करता है
तो ये बहुत अच्छी बात है।
लेकिन यदि वह
ऐसा नहीं कर पाया तो
उससे कृपया
उसका आत्मविश्वास न छीनें।
उसे बताएँ कि सब कुछ ठीक है
और ये सिर्फ परीक्षा ही है।
वह जीवन में इससे कहीं ज्यादा
बड़ी चीजों को करने के लिए बना
है।
इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता
कि
उसने कितना स्कोर किया है।
उसे प्यार दें और उसके बारे में
अपना फैसला न सुनाएँ।
यदि आप उसे खुशमिजाज बनाते
हैं
तो वह कुछ भी बने
उसका जीवन सफल है।
यदि वह खुशमिजाज नहीं है
तो वो कुछ भी बन जाए
सफल कतई नहीं है।
कृपया ऐसा करके देखें
आप देखेंगे कि आपका बच्चा
दुनिया जीतने में सक्षम है।
एक परीक्षा या
एक 90 प्रतिशत की मार्कशीट
आपके बच्चे के
सपनों का पैमाना नहीं है।

-एक अध्यापक

'दिशाबोध' मई 2017 से साभार



जिन्हें गणित में पारंगत होना
जरूरी नहीं है।
इनमें अनेकों उद्यमी भी हैं,
जिन्हें इतिहास या
अंग्रेजी साहित्य में
कुछ कठिनाई
महसूस होती होगी,
लेकिन ये ही आगे चलकर
इतिहास बदल देंगे।
इनमें संगीतकार भी हैं,
जिनके लिए
रसायन शास्त्र के अंक
कोई मायने नहीं रखते।
इनमें खिलाड़ी भी हैं,

भारतीय नागरिकों के मूल अधिकार



भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 द्वारा धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध किया गया है। अनुच्छेद 16 द्वारा लोक नियोजन के विषय में अवसर की समानता का प्रावधान किया गया है, यह प्रावधान भारतीय नागरिकों के मूल अधिकारों के अंतर्गत किये गये हैं। अनुच्छेद 15 एवं 16 के प्रावधान निम्न हैं :-

अनुच्छेद 15

धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध

- राज्य, किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।
- कोई नागरिक केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर-
 - दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश या
 - पूर्णतः या भागतः राज्य निधि से पोषित या साधारण जनता के प्रयोग के लिए समर्पित कुओं, तालाबों, स्नानघाटों, सड़कों और सार्वजनिक समागम के स्थानों के उपयोग के संबंध में किसी भी नियोग्यता, दायित्व, निर्बन्धन या शर्त के अधीन नहीं होगा।
- इस अनुच्छेद की कोई बात राज्य को स्त्रियों और बालकों के लिए कोई विशेष उपबंध करने से निवारित नहीं करेगी।
- इस अनुच्छेद की या अनुच्छेद 29 के खण्ड (2) की कोई बात राज्य को सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए नागरिकों के किन्हीं वर्गों की उन्नति के लिए व अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई विशेष उपबंध करने से निवारित नहीं करेगी।

अनुच्छेद 16

लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता

- राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समता होगी।
- राज्य के अधीन किसी नियोजन या पद के संबंध में केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्म-स्थान, निवास या इनमें से किसी के आधार पर न तो कोई नागरिक अपात्र होगा और न उससे विभेद किया जाएगा।
- इस अनुच्छेद की कोई बात संसद को कोई ऐसी विधि बनाने से निवारित नहीं करेगी जो किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र की सरकार के या उसमें के किसी स्थानीय या अन्य प्राधिकारी के अधीन वाले किसी वर्ग या वर्गों के पद पर नियोजन या नियुक्ति के संबंध में ऐसे नियोजन या नियुक्ति से पहले उस राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के भीतर निवास विषयक कोई अपेक्षा विहित करती है।
- इस अनुच्छेद की कोई बात राज्य को पिछड़े हुए नागरिकों के किसी वर्ग के पक्ष में, जिनका प्रतिनिधित्व राज्य की राय में राज्य के अधीन सेवाओं में पर्याप्त नहीं है। नियुक्तियों या पदों के आरक्षणों के लिए उपबंध करने से निवारित नहीं करेगी।

अनुच्छेद 25 अत्यंत महत्वपूर्ण है यह अनुच्छेद हमें धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। अनुच्छेद इस प्रकार है :-

अनुच्छेद 25

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता :

- लोक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य तथा इस भाग के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए, सभी व्यक्तियों को अंतःकरण की स्वतंत्रता का और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का समान हक होगा।
- इस अनुच्छेद की कोई बात किसी ऐसी विद्यमान विधि के पर्वतन पर प्रभाव नहीं डालेगी या राज्य को कोई ऐसी विधि बनाने से निवारित नहीं करेगी जो-
 - धार्मिक आचरण से संबद्ध किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक या अन्य लौकिक क्रियाकलाप का विनियमन या निर्बन्धन करती है,
 - सामाजिक कल्याण और सुधार के लिए या सार्वजनिक प्रकार की हिन्दुओं की धार्मिक संस्थाओं को हिन्दुओं के सभी वर्गों और अनुभागों के लिए खोलने का उपबंध करती है।

स्पष्टीकरण-1 : कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिक्ख धर्म के मानने का अंग समझा जाएगा।

स्पष्टीकरण-2 : खंड (2) के उपखंड (ख) में हिन्दुओं के प्रति निर्देश का यह अर्थ लगाया जाएगा कि उसके अन्तर्गत सिक्ख, जैन या बौद्ध धर्म के मानने वाले व्यक्तियों के प्रति निर्देश है और हिन्दुओं की धार्मिक संस्थाओं के प्रति निर्देश का अर्थ तदनुसार लगाया जाएगा।

इस प्रकार इस अनुच्छेद 25 का स्पष्टीकरण 2 बौद्ध और जैनों को

हिन्दुओं से अविभक्त करता है। अर्थात् हिन्दू का अर्थ बौद्ध-जैन बताता है। विशेष ध्यातव्य है कि गत वर्ष गठित संविधान समीक्षा आयोग ने संस्तुति की है कि इस स्पष्टीकरण को हटा दिया जाना चाहिए।

जैन धर्म, बौद्ध धर्म और हिन्दू या वैदिक धर्म एक नहीं है। यह स्थापित मान्यता है और इस सन्दर्भ में अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं। पं. जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है-

“जैन धर्म और बौद्ध धर्म निश्चित ही हिन्दू या वैदिक धर्म नहीं है। तथापि उनका आविर्भाव भारत में हुआ और वे भारतीय जीवन, संस्कृति व दर्शन के अभिन्न अंग हैं। भारत में कोई भी जैन या बौद्ध धर्मावलम्बी शत-प्रतिशत भारतीय चिंतन और संस्कृति की उपज है, फिर भी वह हिन्दू धर्मावलम्बी नहीं है। इसलिए भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना पूर्णतः भ्रामक है।” (पं. जवाहरलाल नेहरू/ डिस्कवरी ऑफ इंडिया)

स्वतंत्रता के बाद भारत के संविधान बनने के दौरान 25 जनवरी 1950 को भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू एवं दूसरे महत्वपूर्ण नेताओं से जैनों का एक प्रतिनिधिमंडल मिला और धारा 25 (2ख) से उत्पन्न होने वाली भ्रान्तियों के संबंध में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल से स्पष्ट तौर पर कहा कि जैन हिन्दू नहीं हैं और तुरंत 31 जनवरी 1950 को इस बारे में एक लिखित स्पष्टीकरण जारी किया। इस प्रपत्र का मूल पाठ निम्न है :-

संख्या 33/94/50
प्रधानमंत्री सचिवालय
नई दिल्ली
31 जनवरी 1950

प्रिय महोदय,

25 जनवरी के प्रधानमंत्री से मिले जैनों के एक प्रतिनिधिमंडल के संबंध में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जैनों को अपने धर्म समुदाय के भविष्य के बारे में आशंका करने का कोई भी कारण नहीं है। आपके प्रतिनिधिमंडल ने धारा 25 की ओर ध्यान दिलाया है कि जो संविधान की व्याख्या मात्र करती है। यह व्याख्या धारा की मात्र एक व्यवस्था को लागू कर नियम को सीमित कर देती है। इस तरह आप देखेंगे कि इसमें केवल जैनों का ही नहीं बल्कि बौद्ध और सिखों का भी उल्लेख है। स्पष्ट है कि बौद्ध हिन्दू धर्मी नहीं है, इसलिए यह सोचने का कोई कारण नहीं कि जैनों को हिन्दू माना गया है। यह सत्य है कि जैन कुछ मामलों में हिन्दुओं के काफी करीब हैं और दोनों में काफी कुछ रीति-रिवाज समान हैं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि वे एक भिन्न धार्मिक समुदाय है और उनकी इस स्वीकृत स्थिति को संविधान किसी भी तरह से प्रभावित नहीं करता।

भवदीय
हस्ताक्षर
ए.वी. पाई

प्रधानमंत्री के प्रमुख निजी सचिव

हमारी जैन संस्कृति जितनी प्राचीन है उतनी ही समृद्ध भी है। हमने लोकहित की अनेक संस्थाएँ बनाई हैं। हमारा संविधान हमें ऐसी संस्थाओं की स्थापना और संचालन का अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 26 में स्पष्ट उल्लेख है कि कोई भी धार्मिक सम्प्रदाय या उसका अनुभाग ऐसी

संस्थाओं का संचालन कर सकता है।

अनुच्छेद 26

धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता

लोक व्यवस्था, सदाचार और स्वास्थ्य के अधीन रहते हुए, प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय या उसके किसी अनुभाग को-

- क. धार्मिक और पूर्ण प्रयोजनों के लिए संस्थाओं की स्थापना और पोषण का,
- ख. अपने धर्म विषयक कार्यों का प्रबंधन करने का,
- ग. जंगम और स्थावर सम्पत्ति के अर्जन और स्वामित्व का, और
- घ. ऐसी सम्पत्ति का विधि के अनुसार प्रशासन करने का अधिकार होगा।

धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थिति की स्वतंत्रता

एक और महत्वपूर्ण अनुच्छेद का हम यहाँ उल्लेख करना चाहेंगे। हमारे जैन समाज ने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की है। अरबों रुपये का व्यय इन शिक्षण संस्थाओं पर होता है किंतु इनमें धार्मिक पढ़ाई या तो होती नहीं या अल्प होती है। जब पदाधिकारियों से इस सन्दर्भ में चर्चा की जाती है तो उनका एक ही जवाब होता है कि संविधान हमें ऐसा करने की अनुमति नहीं देता। जबकि संविधान कुछ शर्तों के साथ ऐसी अनुमति देता है। प्रथमतः यदि संस्था सरकार से अनुदान नहीं ले रही है तो वह ऐसी शिक्षा देने के लिए स्वतंत्र है। आज तमाम हिन्दू, सिख, जैन, मुस्लिम, क्रिश्चियन संस्थाएँ ऐसी शिक्षा दे रही हैं। राज्य से सहायता प्राप्त संस्थाओं को धार्मिक उपासना और धार्मिक स्वतंत्रता के सन्दर्भ में अनुच्छेद 28 इस प्रकार है :-

अनुच्छेद 28

कुछ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता

1. राज्य निधि से पूर्णतः पोषित किसी शिक्षा संस्था में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी।
2. खंड (1) की कोई बात ऐसी शिक्षा संस्था को लागू नहीं होगी जिसका प्रशासन राज्य करता है किंतु जो किसी ऐसे विन्यास या न्यास के अधीन स्थापित हुई है जिसके अनुसार उस संस्था में धार्मिक शिक्षा देना आवश्यक है।
3. राज्य से मान्यता प्राप्त या राज्य निधि से सहायता पाने वाली शिक्षा संस्था में उपस्थित होने वाले किसी व्यक्ति को ऐसी संस्था में दी जाने वाली धार्मिक शिक्षा में भाग लेने के लिए या ऐसी संस्था में या उससे संलग्न स्थान में की जाने वाली धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के लिए तब तक बाध्य नहीं किया जाएगा जब तक कि उस व्यक्ति ने या यदि वह अवयस्क है जो उसके संरक्षक ने, इसके लिए अपनी सहमति नहीं दे दी है।

इसका अर्थ यह हुआ कि (1) राज्य किसी विशेष धार्मिक शिक्षा के लिए संस्था की स्थापना कर उसका पोषण कर सकता है (2) यदि व्यक्ति की पूर्वानुमति है तो धार्मिक उपासना में व्यक्ति को आने के लिए बाध्य किया जा सकता है। (3) राज्य निधि से सहायता प्राप्त शिक्षा संस्था में धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है।



प्राचीन जैन प्राकृतिक गुफा थियागदुर्गम विल्लुपुरम (तमिलनाडु)



» विजय कुमार जैन 'बाबाजी'

पूर्व वरिष्ठ रक्षाधिकारी

सागर (म.प्र.), मो. 09926437063



जैन धर्म अन्य धर्म जैसे बौद्ध और हिन्दू धर्म के साथ मध्यकालीन तमिलनाडु राज्य में प्रचलित था तथा इसकी उपस्थिति तमिलवासियों में गहराई तक थी। जैन धर्म को शैव नयनारों और वैष्णव आलवारों के द्वारा चलाए गए भक्ति आंदोलन के पूर्व पल्लव और पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। यद्यपि 7वीं शताब्दी के पश्चात् जैन अनुयायियों का उत्पीड़न प्रारंभ हो गया परंतु जैन धर्म के सिद्धांत, शिक्षाएँ और नीतियाँ आमजन में इतनी गहरी पैठी हुई थी कि जैन धर्म का फलना-फूलना मध्यकाल के बाद की शताब्दियों तक जारी रहा। मध्यकालीन शताब्दियों के बाद जैन धर्म का तमिलनाडु में प्रचलन कम हो गया। साथ ही पूजा स्थलों, गुफाओं और मंदिरों का बलपूर्वक अधिग्रहण और रूपांतरण अन्य धर्मावलंबियों के द्वारा प्रारंभ हो गया। इन परिवर्तित और अधिग्रहीत मंदिरों, गुफाओं का अस्तित्व आज भी विद्यमान है, परंतु इन गुफाओं और मंदिरों का प्राचीन इतिहास केवल पुरातत्व के साहित्य और विद्वानों तक ही सीमित है। आइये, आज तमिलनाडु प्रांत की ऐसी ही एक प्राचीन जैन गुफा के बारे में जानते हैं।

थियागदुर्गम नामक स्थान तमिलनाडु के विल्लुपुरम जिले में स्थित है। यह स्थान चेन्नई-सेलम मार्ग पर चेन्नई से लगभग 235 कि.मी. दूरी पर कल्लाकुरीची से 13 कि.मी. दूर पूर्व दिशा में स्थित है। यह स्थान विल्लुपुरम जिला मुख्यालय से 65 कि.मी. दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित है। थियागदुर्गम कस्बे के बाहरी क्षेत्र में कल्लाकुरीची जाने वाली सड़क के निकट एक ऊँची पहाड़ी के शिखर पर एक गुफा बनी हुई है जिसमें शैल शैल्याएँ, जैन प्रतिमाएँ विद्यमान हैं। प्राचीन काल में यह गुफा एक प्राकृतिक गुफा थी जिसका उपयोग जैन आचार्यों और मुनियों के द्वारा ध्यान, पठन-पाठन और निवास के रूप में किया जाता था। वर्तमान में इस गुफा का स्वरूप बदल देने के कारण इसकी प्राकृतिकता नष्ट हो गई है। इस प्राकृतिक गुफा में एक तीर्थंकर प्रतिमा के साथ एक यक्षी प्रतिमा विराजमान है। आमजन इसे 'मलाई अम्मान मंदिर' के रूप में जानते हैं जो जैन गुफा मंदिर का परिवर्तित नाम है।

इस गुफा के प्रवेश द्वार की ओर दो रक्षक देवियों की स्थापना हिन्दू धर्मावलंबियों के द्वारा कुछ वर्षों पूर्व ही की गई है। गुफा के अंदर प्रवेश करते

ही एक शंकुनुमा चट्टान पर तीर्थंकर प्रतिमा और यक्षिणी धर्म देवी (अम्बिका) की प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। शैल शैल्याओं का अस्तित्व नजर नहीं आता है क्योंकि पूरी गुफा के भीतर टाइल्स जड़वा दी गई है और प्राकृतिक चट्टानों पर प्लास्टर कर दिया गया है। इस कृत्य से जैन शैल शैल्याओं का अस्तित्व संकट में प्रतीत होता है। जैन यक्षी अम्बिका जो कि दक्षिण भारत में धर्म देवी के नाम से भी जानी जाती है, को यहाँ हिन्दू मतावलंबी दुर्गा या मलाई अम्मान के रूप में पूजते हैं। जैन तीर्थंकर प्रतिमा को आम हिन्दू मतावलंबी संत या मुनिस्वर के रूप में सम्मान देते हैं। यद्यपि जैन प्रतिमा के पाद पीठ पर कोई लांछन या चिह्न उपस्थित नहीं है जिससे इस प्रतिमा के किसी विशेष तीर्थंकर होने का अनुमान लगाया जा सके, परंतु शारीरिक विशेषताओं और भंगिमा के आधार पर विद्वानों ने इसे तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा माना है।

जिन प्रतिमा के दोनों तरफ चँवर उकेरे गए हैं तथा पार्श्व में प्रभामंडल का निरूपण उसमें से निकलती हुई शिखाओं के साथ किया गया है। प्रतिमा के मुख से शांति और पवित्रता झलकती है। प्रतिमा के पाद पीठ पर सिंहों का अंकन है जिनका मुख दर्शक की तरफ है। साथ ही प्रतिमा के मस्तक के ऊपर तीन छत्रों का निरूपण किया गया है। शारीरिक अंगों के निरूपण में एक लचीलापन है, प्रतिमा सुखासन में ध्यानरत है एवं पैरों की उंगलियों के मध्य काफी जगह दर्शाई गई है। निष्कर्ष में हम यही कह सकते हैं कि यह जिन प्रतिमा 8वीं शताब्दी के दूसरे कालांश से संबंधित है और पल्लव कला उदाहरण है। यक्षी धर्म देवी की प्रतिमा त्रिभंग भंगिमा में खड़ी दर्शाई गई है। उनके दाएँ हाथ में आम्रगुच्छ है और वाम हस्त नारी परिचारिका के मस्तक के ऊपर है। उनके दोनों पुत्रों का निरूपण पार्श्व में किया गया है जो कि यक्षी के कंधों तक की ऊँचाई के हैं। यक्षी के दक्षिण में वाहन सिंह का निरूपण किया गया है और सुपारी के वृक्ष को पके हुए फलों के साथ यक्षी प्रतिमा के पार्श्व में दर्शाया गया है। यह प्रतिमा भी 8वीं शताब्दी की पल्लव कला का अनुपम उदाहरण है। अभी कुछ महीनों पहले थियागदुर्गम तीर्थ पर तमिल श्रावकों में जैन धर्म के प्रति जागरूकता लाने के लिए अहिंसा पदयात्रा का सफल आयोजन किया गया था।

समाज गौरव सम्मान से सम्मानित व्यक्तित्व

धरणेन्द्र कुमार जैन (आई.ए.एस.)

बुंदेलखंड की ऊर्जावान माटी में सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव धसान (टीकमगढ़) में श्रावक श्रेष्ठी श्री आनंदकुमार-गुलाबबाई जी जैन के घर आंगन में 13 नवंबर 1969 को जन्मे धरणेन्द्रजी हमारे समाज के प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि में हिन्दी मीडियम विद्यालय में पढ़कर देश के सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में आई.ए.एस. चयनित होकर आपने अनेक पदों को सुशोभित किया है।

जबलपुर से सिविल इंजीनियर व राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षा संस्थान भोपाल से एमटेक करने के बाद आपने उसी महाविद्यालय में व्याख्याता का पद पाया जहाँ से शिक्षा ग्रहण की। अपनी धुन के पक्के श्री धरणेन्द्रजी ने भारतीय इंजीनियरिंग सेवा में भी चयनित हुए व केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग मुख्यालय निर्माण भवन, नई दिल्ली में कार्यपालन मंत्री रहे लेकिन आपका मन आई.ए.एस. करने में लगा हुआ था।



जिसे आपने पाकर ही चैन की साँस ली। आप आई.ए.एस. बने व अपर कलेक्टर, अनुविभागीय दण्डाधिकारी, अपर जिला दंडाधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, आयुक्त नगर निगम सहित अनेक पदों पर कार्य किया। वर्तमान में म.प्र. शासन के उपसचिव का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। अनेक प्रशिक्षण, सेमिनार में आपने सहभागिता कर अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया है।

यदि जीवन में लगन हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। उक्त उक्ति को धरणेन्द्रजी ने सार्थक किया है। न केवल ग्राम, परिवार, समाज का नाम रोशन किया है, बल्कि हम सबका सौभाग्य भी बढ़ाया है। महासभा ऐसे व्यक्तित्व को पाकर गौरवान्वित है। हम आपका शत-शत अभिनंदन करते हुए कामना करते हैं कि समाज को आपके अनुभवों का लाभ प्राप्त होता रहे। आप यशस्वी हों। इसी कामना के साथ। -महासभा परिवार

श्रीमती आशा अजय जैन (सागर)

प्रसन्नता है कि समाज की महिलाएँ निरंतर आगे बढ़कर समाज को गौरवान्वित कर रही हैं। समाज द्वारा आयोजित परिचय सम्मेलनों का अनेक वर्षों से संचालन कर रही श्रीमती आशाजी छिंदवाड़ा समाज के श्रेष्ठी श्री धनपाल-शीलाजी जैन के यहाँ 21 अप्रैल 1973 में जन्मी। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी, संस्कृत, कन्नड़, ब्राह्मी लिपि की जानकार होकर पुण्योदय संघ छिंदवाड़ा की अध्यक्ष रहीं। अनेक पदों पर आपने कार्य किया है। वर्तमान में वैश्य महासम्मेलन की नगर अध्यक्ष, गौराबाई महिला मंडल कटरा, सागर की मार्गदर्शिका हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में



आपकी कविता, लेख छपते रहते हैं। 'यादें विद्याधर की' सचित्र का लेखन भी आपने किया है। आकाशवाणी छिंदवाड़ा, सागर, जबलपुर से प्रस्तुतियाँ दी हैं। नेशनल यूथ प्रोजेक्ट में चीन बॉर्डर तवांग में कैम्प में सहभागिता की है। सामाजिक, सांस्कृतिक मंचों की कुशल संचालक व वक्ता, चित्रकला, खेल, टेबल टेनिस में प्रदेश स्तर पर सहभागिता भी आपने की है। समाज ऐसी उत्कृष्ट प्रतिभा को पाकर गौरवान्वित होते हुए कामना करती है कि आप निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ती रहे, समाज व राष्ट्र को गौरवान्वित करती रहे। इसी कामना के साथ। -महासभा परिवार

हँसी-ठिठौली

■ एक दुकानदार अपने ग्राहक के बेटे की शादी में गया। खाना खाने के बाद लिफाफा पकड़ा के आ गया।

दूसरे दिन ग्राहक ने लिफाफे खोले। दुकानदार के लिफाफे में एक पर्ची निकली-
पिछला बकाया : 845 रु.
शादी के जमा : 100 रु.
टोटल बाकी : 745 रु.

■ घर आए मेहमान ते छोटे बच्चे का आईक्यू टेस्ट करने के उद्देश्य से पूछा- बेटे, तुम दाएँ हाथ से लिखते हो या बाएँ हाथ से? जी मैं पेंसिल से लिखता हूँ। बच्चे ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया।

■ पंडितजी ने कथा सुनाई। कथा का सार था कि इंसान कुछ साथ लेकर नहीं आता है। कथा समाप्त के बाद पंडितजी सब कुछ साथ लेकर चले गए।

■ एक बार दो मनचले युवक एक समारोह में

खाना खाने चले गए। समारोह में घर वालों ने एक युवक से पूछा- जी हमने आपको पहचाना नहीं, आप कैसे आए? युवक ने कहा- मैं लड़के वालों की तरफ से हूँ।

दूसरे युवक से पूछा तो उसने कहा- जी मैं लड़की वालों की तरफ से हूँ। घर वालों ने कहा- खाना बेशक खाओ लेकिन यहाँ कोई शादी नहीं हो रही है, हमारे पिताजी की तेरहवीं है आज।



द्वैदीप्यमान संत

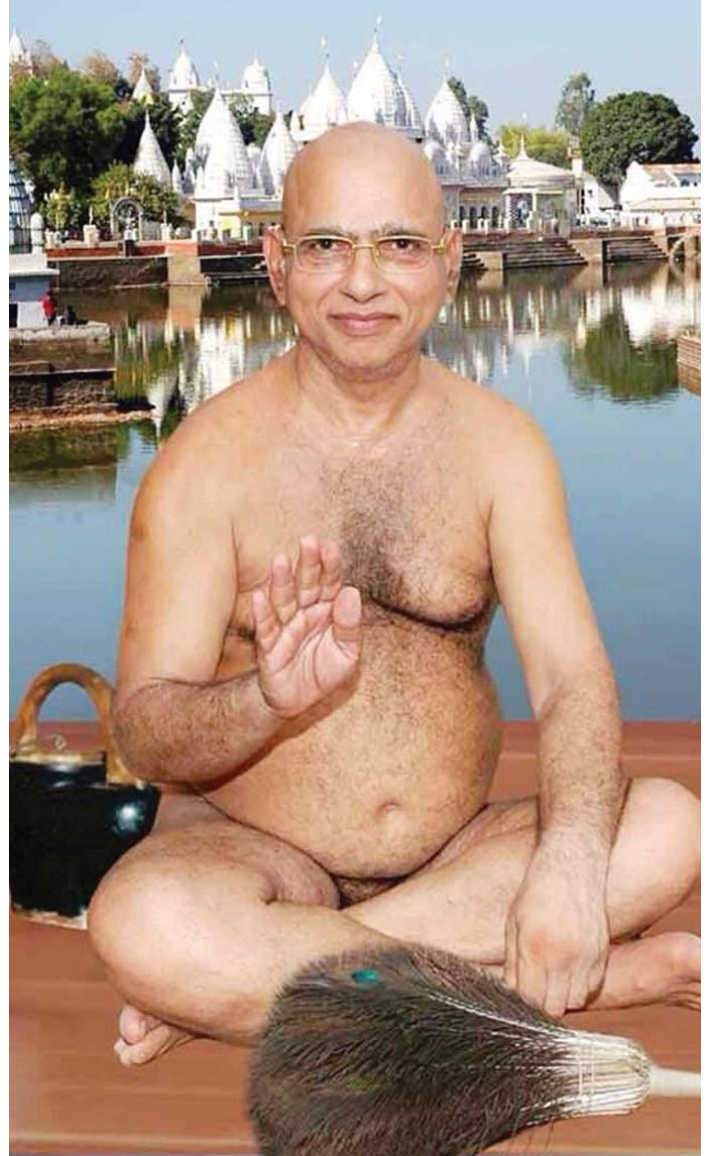
आचार्य 108 वर्धमान सागरजी



» श्रीमती सुषमा जैन
भिलाई (म.प्र.), मो. 7587880546

अन्तिम तीर्थेश श्री वर्धमान के अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में वर्तमान के वर्धमान बने। श्री वर्धमान सागर जी महाराज के द्वैदीप्यमान व्यक्तित्व में वैराग्य, करुणा और वात्सल्य की त्रिवेणी सदैव परिलक्षित होती है। उनका स्नेहिल आशीष भक्तों के हृदय पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाता है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्ति सागर जी की गौरवशाली आचार्य परम्परा के पंचम पट्टधीश संयम साधना और सरलता के धनी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ऐसे सौभाग्यशाली आचार्य हैं जिन्हें अपने जीवन में तीन तीन आचार्य भगवन्तों का चरण सान्निध्य प्राप्त हुआ। मध्यप्रदेश में नर्मदा किनारे सनावद नगर में श्री कमल चन्द जी एवं श्रीमती मनोरमा जी के यहाँ 18 सितम्बर 1950 में पर्वराज पर्यूषण के उत्तम आर्जव के दिन एक बालक का जन्म हुआ। उन्होंने अपने पुत्र का नाम यशवन्त रखा। यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ किया बालक यशवन्त ने। अपनी कुशाग्र बुद्धि सहज सरल व्यवहार से वे सभी के लाड़ले और प्रिय रहे। यशवन्त जी के जन्म से पहले माता पिता को 12 संतानों के वियोग का दारुण दुख सहना पड़ा। बाल्यावस्था में ही बालक यशवन्त माँ की ममतामयी छाँव से वंचित हो गये। माँ की मृत्यु ने बालमन को झकझोर दिया। वे मन में विचार करते क्या यही संसार है। जन्म मरण सुख दुख के बारे में विचार करते रहने के साथ पढ़ाई, खेलकूद के साथ पिता के काम में हाथ भी बँटाते रहते। 1864 में बड़वानी में आचार्य श्री महावीर कीर्ति एवं आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के दर्शन करे। उनके मन में विचार आया कि मुनि बनने से जीवन में समता व शान्ति मिल सकती है। दोनों आचार्य भगवन के सनावद आगमन से धर्म की ओर रुझान वृद्धिगत होता रहा। 1965 में आचार्य श्री वीरसागर जी की शिष्या निर्भीक

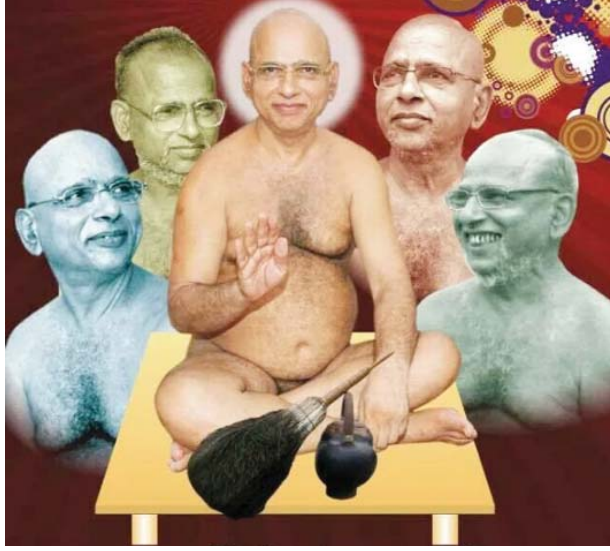


धर्म संरक्षिका आर्थिका 105 श्री इन्दुमति माता जी 105 श्री सुपाश्वर मति माता जी और 105 श्री विद्यामति माता जी का चातुर्मास सनावद में हुआ। उनके सानिध्य में यशवन्त जी ने अनुभव किया कि वैराग्य मार्ग पर चलने से शान्ति और आनन्द की अनुभूति होगी। आचार्य श्री वीरसागर जी की शिष्या गणिनी प्रमुख आर्थिका 105 श्री ज्ञानमति माता जी ने चार आर्थिकाओं और दो क्षुल्लिका माता जी के साथ सनावद में चातुर्मास किया। यशवन्त जी माता जी के साथ विहार करके मुक्तागिरि पहुँचे वहाँ आपने ज्ञान मति माता जी से 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। बाद में यशवन्त ब्रह्मचारी जी ने आचार्य विमलसागर जी से 1968 में बागीदौरा में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया और आचार्य श्री शिवसागर जी के संघ में रहकर माँ जिनवाणी का अध्ययन करने लगे साथ ही संघ में साधु जनों की वैयावृत्ति करते रहते थे। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी की परम्परा के द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के चरणों में श्री महावीर जी में शान्ति वीर नगर में जैनेश्वरी दीक्षा के लिए निवेदन कर श्री फल चढ़ाया। आचार्य श्री शिवसागर जी ने उन्हें श्री सम्मद शिखर जी की

वन्दना करने को कहा। इसी बीच आचार्य महाराज की समाधि हो गई। आचार्य श्री शिवसागर जी की समाधि के बाद 24 फरवरी 1968 को महावीर जी में मुनि श्री धर्मसागर जी आचार्य पद पर आसीन हुए। उसी दिन उन्होंने 11 दीक्षाएँ प्रदान कीं। इनमें सबसे कम उम्र बाल ब्रह्मचारी श्री यशवन्त जी को भी जैनेश्वरी दीक्षा प्राप्त हुई, वे वर्धमान सागर बन गये। अन्तिम तीर्थेश श्री वर्धमान के अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में वर्तमान के वर्धमान बने। श्री वर्धमान सागर जी महाराज के दैदीप्यमान व्यक्तित्व में वैराग्य, करुणा और वात्सल्य की त्रिवेणी सदैव परिलक्षित होती है। उनका स्नेहिल आशीष भक्तों के हृदय पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाता है। दीक्षा के बाद मुनि श्री वर्धमान सागर जी को आहार में अनंतराय लगातार होने से शारीरिक दुर्बलता आती गई। पर मनोबल बढ़ता रहा। वर्धमान सागर जी ने साधु जीवन में भगवान की भक्ति की शक्ति को औषधि रूप उपयोग कर दुबारा नेत्रों की ज्योति एवं वाणी को पुनः प्राप्त किया। अपने विद्या गुरु आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी से माँ जिनवाणी का गहन अध्ययन किया। किशनगढ़ में गुरुवर आचार्य श्री धर्मसागर जी के चरण सानिध्य में विहार के मध्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ससंघ का अद्भुत मिलन प्रसंग वर्धमान सागर जी की स्मृति में एक अनुपम उपहार स्वरूप आज भी विद्यमान है। मुनि श्री वर्धमान सागर जी की गुरु भक्ति और ज्ञान प्राप्ति की लगन, विनय पूर्ण व्यवहार से आचार्य श्री धर्मसागर जी आचार्य श्री देशभूषण जी आचार्य श्री विद्यानंद जी का स्नेहाशीष सदैव मिलता रहा। आचार्य श्री धर्मसागर जी की समाधि के पश्चात मुनि श्री अजितसागर जी आचार्य पद पर आसीन हुए।

मुनि श्री वर्धमान सागर जी अपने संघ सहित भींडर में विराजित आचार्य श्री अजितसागर जी के चरणों में पहुँच गये। लगभग तीन वर्ष तक आचार्य महाराज ने वर्धमान सागर जी को अध्ययन कराते हुए आगम के गूढ़ रहस्यों से अवगत कराया। श्री वर्धमान सागर जी भी आचार्य महाराज को पितृ तुल्य आदर देते हुए सदैव उनकी व संघ की सेवा व वैयावृत्ति करने को तत्पर रहे। आचार्य श्री अजितसागर जी महाराज ने मुनि श्री वर्धमान सागर जी का संघ के प्रति समर्पण भाव निर्दोष चर्या वात्सल्यपूर्ण व्यवहार, देव, शास्त्र, गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा के साथ बहुआयामी व्यक्तित्व को परख कर तथा अपने स्वास्थ्य में आई गिरावट को जानते हुए एक पत्र में लिखित आदेश दिया कि “मैं मेरी समाधि के बाद मुनि श्री वर्धमान सागर जी को आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण आचार्य परम्परा का पट्टाधीश नियुक्त करता हूँ।” मुनि श्री ने प्रार्थना कि मैं तो साधक ही ठीक हूँ मेरे निर्बल कन्धों पर इतना भार क्यों डाल रहे हैं।

आचार्य श्री अजितसागर जी की समाधि के पश्चात 24 जून 1990 आषाढ शुक्ल दूज को राजस्थान के पारसोला नगर में आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी संघ सान्निध्य में मुनि श्री वर्धमान सागर जी को आचार्य पद पर



प्रतिष्ठित किया गया। आचार्य श्री विद्यानंद जी ने इस मंगल अवसर पर अपना स्नेह और आशीर्वाद पिच्छिका भेज कर प्रकट किया। श्री क्षेत्र तारंगा जी से विहार कर संघ विजय नगर में था तभी श्री निर्मल कुमार सेठी जी और श्री नीरज जी श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में भगवान गोमटेश बाहुबली के महामस्तकाभिषेक 1993 का आमन्त्रण लेकर पहुँचे। गुजरात के विजय नगर से राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के क्षेत्रों की वन्दना करता हुआ संघ कर्नाटक में श्रवणबेलगोला पहुँचा। आचार्य वर्धमान सागर जी ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्ति सागर जी की अक्षुण्ण परम्परा के

पंचम पट्टाधीश के रूप में अपना गरिमामय सानिध्य प्रदान किया। आचार्य श्री ने लगातार 1993, 2006 एवं 2018 में हुए महामस्तकाभिषेकों में धार्मिक सहिष्णुता, सहजता सरलता एवं वात्सल्य से सभी साधु संतों सहित इन महोत्सवों को एक अनूठी गरिमा प्रदान करी। आचार्य श्री ने इस सफलता का श्रेय सदैव अपने पूर्वाचार्यों का आशीर्वाद ही बताया। इसी तरह श्री क्षेत्र धर्मस्थल में होने वाले पंच कल्याणक एवं बाहुबली मस्तकाभिषेक में भी लगातार अपना सानिध्य प्रदान किया। विहार करते हुए अनेक सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्रों के दर्शन करते हुए 2009 एवं 2011 का चातुर्मास तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी में धर्म प्रभावना करते हुए संपन्न हुआ। आचार्य वर्धमान सागर जी ने अनेक जैनेश्वरी दीक्षाएँ प्रदान कीं। संघ में अनुशासन के साथ आचार्य श्री का वात्सल्यमयी व्यवहार हमेशा परिलक्षित होता है। चतुर्विध संघ में समाधि सल्लेखना के समय क्षपक के प्रति आपका वात्सल्यमयी संबोधन देकर धर्मांत का पान कराते हुए उनकी समाधि साधना को संपन्न कराया। विदुषी आर्थिका विशुद्ध मति माता जी की समाधि के समय निर्यापक आचार्य श्री वर्धमान सागर जी थे। आर्थिका विशुद्धमति माता जी की समाधि के समय मुझे यह सौभाग्य मिला। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी की सहजता, सजगता से माता जी को संबोधन देना, संपूर्ण संघ का परस्पर वात्सल्य और अपनी गुरु परम्परा का निर्वाह, आगमोक्त चर्या का पालन करना। पूज्य विशुद्धमति माता जी ने आचार्य वर्धमान सागर जी पूजा लिखी। पूजा में माता जी ने गुरु परम्परा के सभी आचार्य भगवंतों के गुणों को आचार्य वर्धमान सागर जी में समाहित करते हुए पूजा की ये पंक्तियाँ लिखीं।

*‘हो शान्ति सिन्धु सी निर्भयता, हो वीर सिन्धु सी निर्मलता।
शिवसागर जी सा अनुशासन हो, हो धर्म सिन्धु सी निसपृहता।
संयत वाणी चिन्तन शक्ति से हो अजित सूरि सी दृढ़ता।
इन सर्व गुणों का संचय हो ,वृद्धिगत हो मन की मृदुता।।’*

-आर्थिका विशुद्धमति माता जी

अंत में मैं यही भावना करती हूँ उनकी चरणरज एवं मार्गदर्शन हमें सदा ऐसे ही वात्सल्य से मिलता रहे। इन्हीं भावनाओं के साथ आचार्य श्री के चरणों में शत शत नमन करते हुए अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

पंद्रहवाँ अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन 'संस्कार-2019' विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सांनंद संपन्न

(सुभाष चौधरी)

नैनागिरि। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा विगत चौदह वर्षों से आयोजित किये जा रहे अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलनों की कड़ी में इस वर्ष 15वाँ दो दिवसीय परिचय सम्मेलन संस्कार-2019, श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की समवशरण स्थली, परम पूज्य मुनिवर श्री वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की मोक्ष स्थली, बुंदेलखंड के प्रख्यात सिद्ध क्षेत्र श्री नैनागिरि में 12-13 अक्टूबर 2019 को आयोजित किया गया। अब तक आयोजित किये गये 15 परिचय सम्मेलनों में नैनागिरि सिद्धक्षेत्र पर यह तृतीय परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया जो विभिन्न कार्यक्रमों के साथ भव्यता पूर्वक सांनंद संपन्न हुआ।

श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में पर्वतराज पर स्थित चौबीसी जिनालय में भगवान श्री पार्श्वनाथजी का मस्तकाभिषेक, शांतिधारा, पूजन, जिनालयों की वंदना करने के उपरान्त 12 अक्टूबर शनिवार को प्रातःकालीन बेला में मंगलाचरण के साथ विधायक बंडा श्री तरवरसिंह के मुख्य आतिथ्य में, श्री मोतीलाल मुकेश कुमार सांधेलिया दलतपुर द्वारा ध्वजारोहण कर सम्मेलन का शुभारंभ किया गया। इस परिचय सम्मेलन के ध्वजारोहण के अवसर पर विभिन्न स्थानों से पधारे महानुभावों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। चित्र अनावरण कु. खुशबू, कु. महक जैन पुत्री श्रीमती संध्या-दीपक जैन, सन्मति वस्त्र भंडार सागर एवं दीप प्रज्वलन कु. शुभा सिंघई पुत्री श्रीमती दीपा-राजेश सिंघई, पडवार वाले सागर द्वारा किया गया।

प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि बंडा विधायक तरवरसिंह, कार्यक्रम

अध्यक्ष श्री महेन्द्र जैन बड़ागाँव टीकमगढ़, स्वागताध्यक्ष श्री सुरेश जैन आईएएस भोपाल अध्यक्ष न्यासी मंडल, नैनागिरि, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन, पूर्व न्यायाधीश, भोजन सौजन्यकर्ता इंजी. श्री नवलचंदजी-श्रीमती रजनी गोदरे मुंबई, श्री संतोष जैन कैटरर्स सागर, श्री ऋषभकुमारजी चंदेरिया, चंदेरिया परिवार कोतमा एवं नाश्ता सौजन्यकर्ता श्री अशोक कुमार चक्रेश कुमार जैन महावीर रोडवेज, नेहा नगर, सागर एवं संस्कार पत्रिका हेतु थैला के सौजन्यकर्ता श्री निर्मल कुमार बारवां वाले एवं प्रमोद कुमार पाटन वाले बड़ा मलहरा, ने अपनी गरिमापूर्ण सहभागिता दी।

'संस्कार पत्रिका' का विमोचन अतिथियों सहित महासभा के पदाधिकारियों, संपादक मंडल के सदस्य श्री जिनेश जैन बहरोल, सुरेन्द्र खुर्देलिया, महेन्द्र सेठ बहरोल, सुबोध जैन हीरापुर सागर के साथ अभय कुमार इंजी. श्री आलोक जैन छिंदवाड़ा किया गया। युवक-युवतियों हेतु पृथक-पृथक भागों में प्रकाशित इस संस्कार पत्रिका में अब तक के सर्वाधिक 1464 युवक-युवतियों के परिचय प्रकाशित किये गये जिसका सांख्यिकी विश्लेषण श्री जिनेश जैन बहरोल सागर द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के कार्यकारी महामंत्री श्री देवेन्द्र लुहारी, सागर, डॉ. श्री अरविंद जैन प्राचार्य सागर एवं श्री श्रीयांश जैन संग सेल्स सागर द्वारा किया गया।

दो दिवसीय परिचय सम्मेलन में बड़ी संख्या में युवक-युवतियों द्वारा अपना-अपना परिचय दिया गया। दोनों दिवसों में परिचय देने वाले प्रथम दस प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। श्रीमती आरती जैन सागर, श्रीमती





आशा अजय सागर एवं श्रीमती कविता जैन दमोह द्वारा रोचक ढंग से इस कार्यक्रम का संचालन किया गया। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महासभा के मालवांचल इकाई द्वारा दो दिवसीय नेत्र परीक्षण एवं निःशुल्क चश्मा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। परिचय सम्मेलन में उक्त जनहितैषी सराहनीय कार्य लगातार सफलतापूर्वक आयोजित किया जाता है जिसमें नेत्र विशेषज्ञ डॉ. गजेन्द्र सिंह इंदौर एवं उनकी टीम के डॉ. दिलीप सनोटिया, डॉ. देवेन्द्र चौहान, डॉ. निखिल सतवासकर, डॉ. रोहित यादव, डॉ. रवि वर्मा ने नेत्र परीक्षण किया। शिविर के सफल संचालन में श्री अरविंद जैन सुनवाहा इंदौर, श्री नरेन्द्र सेठ इंदौर सहित सहयोगी बंधुओं का अथक योगदान रहता है। नैनागिरि एवं उसके आसपास के ग्रामीण अंचलों से लगभग तीन हजार लोगों ने नेत्र परीक्षण कराया गया। और उन्हें दवाएँ वितरित की गईं। 2608 लोगों को निःशुल्क चश्मा वितरण किया गया। विधायक श्री प्रद्युम्नसिंह लोधी ने भी शिविर में नेत्र परीक्षण कराया और चश्मा प्राप्त किया। इसी प्रकार महासभा के मंत्री डॉ. शचीन्द्र मोदी, एमडी तेंदूखेड़ा एवं उनकी टीम द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, मधुमेह परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अनेक लोगों ने स्वास्थ्य परीक्षण कराया। डॉ. सौरभ जैन बीडीएस सागर ने निःशुल्क दन्त परीक्षण शिविर भी लगाया जिसमें अनेक लोगों ने अपना दंत परीक्षण कराया।

सम्मेलन के प्रथम दिवस महासभा के उपाध्यक्ष एवं महिला सभा के संयोजकगण श्री चक्रेश शास्त्री भोपाल, श्री विनोद जैन कोतमा, श्री सुरेश जैन मारौरा के संयोजकत्व में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न नगरों में नवगठित महिला सभा इकाई की बहनों के साथ विभिन्न स्थानों से पधारी माताओं-बहनों ने उपस्थित रहकर अपने विचार व्यक्त किये। सायंकालीन बेला में युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र खुर्देलीय, श्री श्रीयांश जैन संग सेल्स द्वारा की

गई। इसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने उपस्थित रहकर अपने विचार व्यक्त किये और महासभा में अपने सहयोग की बात रखी।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, महाविद्यालयीन व्यावसायिक, तकनीकी शिक्षा, हायर सेकंडरी एवं हाईस्कूल परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले 100 से अधिक मेधावी छात्र-छात्राओं को महासभा द्वारा चेतना सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही चेतना सम्मान प्राप्त कर रहे हायर सेकंडरी के छात्रों में से सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले श्री समर सिंघई रीठी को, श्री बालचंद्र जैन नरवां की स्मृति में हेमंत कुमार बसंत कुमार दिलीप कुमार पूर्व आयकर अधिकारी द्वारा 11 हजार रु., प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। हाईस्कूल के छात्रों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली कु. पलक जैन इंदौर को स्व. कोमलचंद-ताराबाई कोतमा की स्मृति में 5 हजार रु., प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती आरती जैन सागर ने किया।

दिनांक 13 अक्टूबर को प्रातः पर्वतराज पर स्थित श्री चौबीसी जिनालय में भगवान श्री पार्श्वनाथजी का मस्तकाभिषेक, शांतिधारा, पूजन, तीर्थराज की वंदना की गई। तदुपरांत श्री सुनील चौधरी, श्री नेमीचंद चौधरी सागर ने चित्र अनावरण एवं श्रीमती मैनारानी जैन मातेश्वरी, श्री राजेश सिंघई, दिलीप सिंघई पडवार वाले सागर ने सपरिवार दीप प्रज्वलन किया। मुख्य अतिथि विधायक बंडा प्रद्युम्नसिंह थे। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री हुकुमचंद जैन शिक्षक बम्होरी, स्वागताध्यक्ष सेठ सनत कुमार जैन अजंता क्लॉथ स्टोर्स सागर, भोजन सौजन्यकर्ता श्री सिंघई सुरेन्द्र कुमार संतोषकुमार जैन घड़ी, बीटीआईआरटी परिवार सागर, श्रीमती चिंतामणि जैन, श्री आशीष जैन, अनुराग जैन, श्री पाइप परिवार, सागर एवं नाश्ता सौजन्यकर्ता श्री शीलचंद्र मनोज कुमार जैन पनवारी वाले, बड़ा मलहरा के साथ महासभा के पदाधिकारीगण, देश के विभिन्न प्रदेशों से पधारे सामाजिक बंधुगण बड़ी

संख्या में उपस्थित थे।

परिचय सम्मेलन के उपरांत दोपहर में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती कलशा गोदरा सागर एवं उनकी टीम ने बेहतरनी प्रस्तुति दी जिसे सभी ने मुक्त कंठ से सराहा। दोपहर में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष जैन घड़ी की अध्यक्षता में महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया। जिसका संचालन महासभा के कार्यकारी महामंत्री श्री देवेन्द्र लुहारी सागर द्वारा किया गया। उनके द्वारा महासभा द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इस दौरान महासभा के अध्यक्ष श्री संतोष जैन घड़ी ने निदेशक मंडल, ट्रस्ट कमेटी, शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार आगामी तीन वर्षों हेतु मनोनीत किये गये महासभा के पदाधिकारियों की जानकारी से अवगत कराया। तेरहवें/शांति विधान के अवसर पर गिफ्ट एवं बायना नहीं दिये जाने के संबंध में वर्ष 2017 के परिचय सम्मेलन के दौरान लिये गये निर्णय के बारे में सभी को पुनः स्मरण कराते हुए आह्वान किया कि इस कुरीति को बंद करना आवश्यक है। अतः सभी लोग इसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अपनी समाज से इस कुरीति का अंत हो सके। महासभा निदेशक श्री ऋषभ चंदेरिया, महामंत्री श्री सुभाष चौधरी, महिला सभा संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री, डॉ. अजित जैन बम्होरी सहित कई महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये एवं महासभा द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए

शाश्वत तीर्थ सम्मेलनशिखरजी में बनने जा रहे बुंदेलखंड भवन, जिन मंदिर एवं श्री वर्णी चिकित्सा निधि का वार्षिक प्रतिवेदन, महिला सभा के गठन के संबंध में जानकारी दी गई तथा अधिवेशन के अंत में आभार श्री विनोद जैन कोतमा ने प्रकट किया।

महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान ही समाज के विद्वानों, समाज सेवा, राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले 3 महानुभावों को प्रतिवर्ष चंदेरिया परिवार कोतमा, घड़ी परिवार सागर एवं बैटरी परिवार सागर के सौजन्य से समाज गौरव सम्मान से सम्मानित किया जाता है। इसी कड़ी में इस वर्ष पं. श्री नरेन्द्रजी जैन गाजियाबाद, श्री धरणेन्द्र जैन बड़ागाँव, आईएस भोपाल एवं श्रीमती आशा अजय सागर को शॉल-श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र सहित 11-11 हजार रु. की सम्मान राशि भेंट कर 'समाज गौरव' से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का संचालन श्री देवेन्द्र लुहारी ने किया।

12-13 अक्टूबर को आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रमों का समापन और इस आयोजन को अपनी मेहनत से सफल बनाने वाले सहयोगी बंधुगण, डॉक्टर और उनकी टीम, प्रविष्टि संनलकर्ताओं एवं परिचय सम्मेलन के दौरान विभिन्न कार्यों में सहयोग कर रहे कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। सभी को स्मृति चिह्न भेंट कर उनका सम्मान किया गया। इस प्रकार उक्त दो दिवसीय कार्यक्रम समारोहपूर्वक सानंद संपन्न हुआ।

क्षमावाणी एवं सम्मान समारोह संपन्न

जबलपुर। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर बरियावाला ट्रस्ट, हनुमानताल, जबलपुर द्वारा क्षमावाणी एवं सम्मान समारोह 2019 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष जैन (घड़ी) का सकल जबलपुर समाज द्वारा सम्मान किया गया। श्री



संतोषजी का सम्मान शॉल-श्रीफल एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर समाज के पदाधिकारी श्री कोमलचंद जैन अध्यक्ष, अजयकुमार जैन मंत्री एवं ट्रस्ट कमेटी के अन्य पदाधिकारियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेन्द्र चौधरी, श्री तुलसीराम द्वारा की गई। श्री संतोष जैन द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक क्षत्र में प्रदान की गई उत्कृष्ट सेवाओं एवं गोलापूर्व समाज के उत्थान एवं संगठन हेतु किये गये प्रयासों की समाज द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

इस अवसर पर पं. श्री ऋषभकुमारजी जैन (नवापारा राजिम) छत्तीसगढ़ का भी धार्मिक क्षेत्र में उनके सक्रिय योगदान हेतु समाज द्वारा शॉल-श्रीफल एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम

के मुख्य अतिथि विधायक श्री विनय सक्सेना थे। इस अवसर पर समाज के बच्चों एवं महिलाओं ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये, प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान किया गया एवं चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें समाज के ही चिकित्सक डॉ. अंकित

सेठ, डॉ. पुष्पेन्द्र जैन एवं डॉ. आरती जैन ने मेडिकल चेकअप किया। कार्यक्रम का संचालन संजय सेठ एवं संयोजन अजय कुमार जैन ने किया।



कु. नेहा को सुयश

प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. शीतलचंदजी जैन जयपुर के सुपुत्र श्री शरद जैन-पुत्रवधू श्रीमती दीप्ति जैन की सुपुत्री कु. नेहा ने दसवीं बोर्ड परीक्षा में 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। अखिल भारतवर्षीय गोलापूर्व महासभा की ओर से उन्हें बहुत-बहुत बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन 'संस्कार-2019' (12 एवं 13 अक्टूबर 2019) का सांख्यिकीय विश्लेषण

(जिनेश जैन 'बहरोल', सागर)

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा वर्ष 2005 से लगातार दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन का सफल आयोजन कर हमारे समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों की परिचयात्मक पत्रिका 'संस्कार पत्रिका' का प्रतिवर्ष प्रकाशन किया जा रहा है एवं संस्कार 2019 के रूप में इस पत्रिका का पंद्रहवाँ अंक इस वर्ष प्रकाशित किया गया है। हमें खुशी है कि हमारे समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों के लिए रिश्ते तलाशने में 'संस्कार पत्रिका' अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। वर्ष 2005 में सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि से प्रारंभ होकर समूचे बुंदेलखंड के विभिन्न स्थलों भंडा, शाहगढ़, अहारजी, पटेरियाजी, नैनागिरिजी, गढ़ाकोटा, बड़ागाँव एवं सागर में एवं महाकौशल क्षेत्र के बहोरीबंद एवं छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती नगर कोतमा में भी सफलतापूर्वक परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है।

सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में तीसरी बार परिचय सम्मेलन आयोजित किया

गया है। इस अवसर पर प्रकाशित 'संस्कार 2019' के रूप में इस परिचयात्मक पत्रिका के 15वें संस्करण में संकलित विवाह योग्य युवक-युवतियों के विवरण का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर हमारे समाज की वास्तविक प्रगति प्रतिबिंबित होती है। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भारत के उन सभी राज्यों म.प्र., छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश जहाँ हमारे समाज के बंधु निवासरत हैं, के महानगर, शहर, कस्बे एवं ग्रामों सहित दूरस्थ अंचलों में निवासरत बच्चों की प्रविष्टियाँ प्रकाशित की गई हैं। चूँकि हमारा समाज मूलतः बुंदेलखंड में निवास करता है, अतः स्वाभाविक रूप से इसमें सर्वाधिक प्रविष्टियाँ सागर संभाग की हैं।

'संस्कार-2019' में कुल 1464 परिचय प्रकाशित किये गये हैं जिनमें युवकों के 928 एवं युवतियों के 536 परिचय प्रकाशित किये गये हैं। 'संस्कार 2019' में युवकों की प्रकाशित कुल 928 प्रविष्टियों का विवरण इस प्रकार है :-

क्र.	शिक्षा	संख्या	विशेष
1.	इंजीनियर	193	इनमें से एमटेक-26, एमई-2, एमएस-2, एमबीए-8, पीजीडीएम-1, डिप्लोमा-3, सीडेक-1 है
2.	एमबीए	74	(बीई-9, बी.फार्म-3, बी.एड.-1)
3.	बीबीए	8	
4.	एमसीए	6	(साथ में एमएसडब्ल्यू-1)
5.	बीसीए	13	
6.	फार्मैसी	18	एमफार्म-7, बीफार्म-10, डी-फार्म-1
7.	डॉक्टर	11	इनमें एमबीबीएस-3, एमडीएस-1, बीडीएस-2, विटनरी-1, बीएएमएस-2, बीएचएमएस-2 हैं
8.	पीएचडी	3	2 अध्ययनरत हैं
9.	सी.ए.	14	7 अध्ययनरत, जिसमें 1 सीएस के साथ अध्ययनरत
10.	सी.एस. (कंपनी सेक्रेटरी)	5	1 अध्ययनरत
11.	एम.लिब.	1	
12.	एल.एल.बी.	22	2 अध्ययनरत
13.	बी.एड./डी.एड.	97	एमएड-1, बीएड-58, डीएड-38
14.	पोस्ट ग्रेजुएट	149	साथ में पीजीडीसीए, डीसीए, एमएसडब्ल्यू, आईटीआई भी की है
15.	ग्रेजुएट	233	साथ में डीसीए, एमएसडब्ल्यू, आईटीआई डिप्लोमा भी हैं
16.	हायर सेकंडरी से अधिक	2	
17.	हायर सेकंडरी	68	
18.	हाई स्कूल	6	
19.	हाई स्कूल से कम	-	
20.	जानकारी नहीं दी	5	
	कुल	928	

व्यवसायी समाज होने के बाद भी हमारे समाज के 51.07 प्रश तकनीकी, चिकित्सकीय एवं अन्य व्यावसायिक शिक्षा के साथ उच्च शिक्षित, 20.79 प्रश इंजीनियर, 91.91 प्रश ग्रेजुएट एवं उससे ऊपर, 8.8 प्रश मात्र हायर सेकंडरी या उससे कम हैं जो कि अच्छा व्यवसाय करने के अतिरिक्त प्रायवेट, मल्टीनेशनल कंपनियों में कार्यरत रहने के अलावा विभिन्न बैंकों में पीओ/सहायक तथा न्यायालयों, पोस्ट ऑफिस, रेलवे, इंडियन ऑइल, वन विभाग, स्वास्थ्य, पंचायत ग्रामीण विकास आदि

शासकीय विभागों में विभिन्न पदों (सहायक संचालक उद्योग, साइंटिस्ट प्रथम श्रेणी इसरो, सहायक प्राध्यापक, उप कोषालय अधिकारी, एसडीओ एक्साइज इंस्पेक्टर, उपनिरीक्षक, रेंजर, रेलवे लोको पायलट, इंजीनियर स्टेनो, शिक्षक, पटवारी, संविदा शिक्षक, अतिथि शिक्षक आदि पदों पर कार्यरत हैं।

इसी तरह संस्कार-2019 में युवतियों की प्रकाशित कुल 536 प्रविष्टियों का विवरण इस प्रकार है :-

क्र.	शिक्षा	संख्या	विशेष
1.	इंजीनियर	105	एमटेक-18, एमई एमबीए-1, एमबीए-6, बीएड-1, डिप्लोमा-2
2.	एमबीए	41	बीई-7, साथ में 1 सीए अध्ययनरत
3.	बीबीए	1	बीबीए वेब डिजाइनिंग-1
4.	एमसीए	8	साथ में एमएसडब्ल्यू-1
5.	बीसीए	-	पोस्ट ग्रेजुएट के साथ बीसीए अकेले कोई नहीं
6.	फार्मैसी	8	एमफार्म-5, बीफार्म-2 एवं एमएससी डीफार्म-1
7.	डॉक्टर	6	एमबीबीएस-1, बीडीएस-3, बीएएमएस-1 एवं बीएचएमएस एमडी-1
8.	पीएचडी	4	चारों अध्ययनरत, जिनमें 1 एमटेक के बाद पीएचडी कर रही है
9.	सीए	13	9 अध्ययनरत जिसमें 1 सीएस के साथ अध्ययनरत
10.	सीएस (कंपनी सेक्रेटरी)	2	
11.	एम. लिब.	-	
12.	एलएलबी	6	1 एलएलएम एवं 1 बीबीए है
13.	बीएड/डीएड	128	एमएड-1, बीएड-74, बीटीसी-1, डीएड-52
14.	पोस्ट ग्रेजुएट	135	साथ में बीसीए, एमसीएम, एग्रीक्लचर, इंटीरियर डिजाइननिंग, पीजी डीसीए, डीसीए, एमएसडब्ल्यू, आईटीआई भी की है
15.	ग्रेजुएट	62	साथ में डीसीए, एमएसडब्ल्यू, फैशन डिजाइनिंग, न्यूट्रीशियन, ब्यूटीशियन डिप्लोमा भी है
16.	हायर सेकंडरी से अधिक-		
17.	हायर सेकंडरी	11	
18.	हाईस्कूल	4	
19.	हाईस्कूल से कम	-	
20.	जानकारी नहीं दी	3	जबकि वे उपनिरीक्षक मंडी बोर्ड में एवं प्रायवेट कंपनी में कार्यरत भी हैं
	कुल	536	

संस्कार 2019 में प्रकाशित प्रविष्टियों में 59.88 प्रश तकनीकी, चिकित्सकीय एवं अन्य व्यावसायिक शिक्षा के साथ उच्च शिक्षित, 19.58 प्रश इंजीनियर, 97.20 प्रश ग्रेजुएट एवं उससे ऊपर एवं मात्र 2.79 प्रश हायर सेकंडरी या उससे कम हैं जो कि प्रायवेट, मल्टीनेशनल कंपनियों में कार्यरत रहने के अतिरिक्त विभिन्न बैंकों में पीओ/सहायक तथा न्यायालयों, ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, रेलवे, इंडियन ऑइल, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य, पंचायत ग्रामीण विकास आदि शासकीय विभागों में विभिन्न पदों (सहायक संचालक-उद्योग, विषय वस्तु विशेषज्ञ, स्पेशलिस्ट ऑफिसर, सहायक प्राध्यापक, रेलवे इंजीनियर, उपनिरीक्षक, स्टेनो, शिक्षक, लेखापाल, पटवारी, संविदा शिक्षक, अतिथि शिक्षक आदि पदों पर भी कार्यरत हैं।

प्रकाशित प्रविष्टियों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि हमारे समाज में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय जागृति आई है। युवकों के साथ-साथ युवतियाँ भी शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रही हैं जो कि सराहनीय है।

विश्लेषण में यह विचारणीय बिंदु भी सामने आता है कि विवाह योग्य युवतियों के लिए 18 वें एवं युवक के लिए 21 वर्ष शासन द्वारा भले ही निर्धारित हो लेकिन इस आयु वर्ग की एक भी प्रविष्टि संस्कार-2019 में प्रकाशनार्थ प्राप्त नहीं हुई है जिससे स्पष्ट है कि विवाह करने की आयु बढ़ी है एवं प्राप्त प्रविष्टियों में 30 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बड़ी संख्या में युवा अभी अविवाहित हैं जिनके संबंध में प्रयास करना आवश्यक है।

महिला सम्मेलन 2019 सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन एवं युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिनांक 12-13 अक्टूबर 2019 को श्री सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रथम दिवस 12 अक्टूबर को दोपहर 3.30 बजे से महासभा के अन्तर्गत गठित महिला प्रकोष्ठ का महिला सम्मेलन सेवा निवृत्त माननीय न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन भोपाल के मुख्य आतिथ्य, श्रीमती प्रमीला जैन टीकमगढ़ की अध्यक्षता एवं श्रीमती गुणमाला जैन “घड़ी” सागर के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। महिला सम्मेलन का प्रारंभ सागर इकाई की श्रीमती अंजू सेठ, श्रीमती आरती सवाई, श्रीमती सुलेखा जैन के मंगलाचरण से हुआ। सम्मेलन में विभिन्न इकाईयों की संरक्षिकाएं, अध्यक्ष, मंत्री एवं समाज की विशिष्ट महिला शक्ति मंच की शोभा बढ़ा रहीं थी। सर्वप्रथम महिला प्रकोष्ठ के संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री, भोपाल ने गत वर्ष में महिला प्रकोष्ठ में हुई प्रगति एवं आगामी वर्ष के लिए योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान में 08 महिला इकाईयों कार्यरत है एवं लगभग 400 महिलाओं द्वारा इन इकाईयों की सदस्यता ग्रहण की गई है। आगामी सम्मेलन तक 20 इकाईयों के गठन तथा 1000 सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है। श्री चक्रेश शास्त्री ने सभी इकाईयों द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए इकाईयों के पदाधिकारी एवं सदस्यों को बधाई दी।

सतना से हमारे बीच उपस्थित वरिष्ठ समाजसेवी एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न संस्थाओं में राष्ट्रीय पदों को शोभित करने वाली श्रीमती रश्मि जैन ने ‘घटती जैन जनसंख्या चिंतन का विषय’ पर बोलते हुए जैन जनसंख्या घटने के मुख्य कारणों में बताया कि जैन समुदाय के व्यक्तियों द्वारा अपने नाम के आगे सरनेम में खण्डेलवाल, तारण, चंदेरिया, सिंघई, पोरवाल, गंगवाल आदि लिखे जाते हैं, जिसके कारण वास्तविक जैन जनसंख्या का ज्ञान नहीं हो पाता। उन्होंने कहा कि आज अंतरजातीय विवाहों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिसके कारण यदि जैन समाज की लड़की जैनेतर समाज में विवाह करती है तो इससे भी हमारी संख्या में कमी आई है और यदि जैनेतर लड़की समाज में आती है तो वह अपना पूर्व धर्म व संस्कार नहीं छोड़ना चाहती और परिवार में भी उन्हीं संस्कारों को रोपित करती है, जिससे आगे की पीढ़ी और परिवार समाज से कट जाता है। अगले कारणों के रूप में लव जेहाद जैसे ज्वलंत मुद्दों को भी चिंतनीय बताया। इसके बाद उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा के कारण आज युवक-युवती की विवाह की उम्र अधिक होने लगी है, जिसके कारण बच्चे पैदा करने की क्षमता खत्म हो जाती है, इससे भी जैन जनसंख्या प्रभावित हो रही है। उन्होंने एक कारण यह भी बताया कि पहले बच्चे बस दो या तीन का नारा था, फिर हम दो हमारे दो की नीति आई और अब हम दो हमारा एक की नीति चल रही है, जिसका सीधा प्रभाव जनसंख्या पर पड़ता है। उक्त अनेक कारणों से जैन जनसंख्या में गिरावट आई है। अतः निश्चित ही एक चिंतनीय विषय है, जिस पर समग्र समाज को विचार करना होगा।

सम्मेलन में कटनी से पधारी गोलापूर्व त्रैमासिक पत्रिका की सह संपादिका डॉ. (श्रीमती) रंजना पटोरिया ने ‘संयुक्त परिवारों का विघटन और समाज पर प्रभाव’ विषय पर बात करते हुए कहा कि ‘मिट्टी का मटका

और परिवार की कीमत’ सिर्फ बनाने वाले को होती है, तोड़ने वाले को नहीं। सच वे बुजुर्ग बड़े संवेदनशील स्थित में होते हैं जो हमारी संस्कृति के संवाहक हैं। आज वे ही परिवार को चुभने लगे हैं। पाश्चात्य संस्कृति एवं भौतिकता का प्रभाव इतना बढ़ा है कि उच्च शिक्षा, उच्च पदाभिलाषा एवं अति महत्वकांक्षाओं ने संयुक्त परिवार जो हमारी संस्कृति की मूल अवधारणा थी, को छिन्न-भिन्न कर दिया है। माँ आज नौकरी पर जाती है और बच्चे आया पर निर्भर होते हैं। बुजुर्ग माँ-पिताजी नौकरों पर निर्भर हो गए हैं। बढ़ती उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति और गिरते मानवीय मूल्यों को लोग ‘जनरेशन गैप’ की संज्ञा देने से नहीं चूकते। वास्तविकता यह है कि समाज पर एकल परिवारों और व्यक्तिवादिता का प्रभाव हावी हो गया है। हम अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं, इसमें नई पीढ़ी का कोई दोष नहीं है। दोष तो हममें है। हमने जो किया है हमारे बच्चे भी हमारे साथ वही करेंगे। सोशल नेटवर्क साईट जैसी तकनीक ने विश्व को एक दूसरे के पास ला दिया है तो इस तकनीक ने लोगों में आपस में खटास और एकाकीपन भी भर दिया है। संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण ही आज बच्चों में उच्चश्रृंखलता दिखाई देती है। वे मंदिर के स्थान पर मदिरालय जा रहे हैं।

अगले वक्ता के रूप में सफल मंच संचालिका श्रीमती आरती सिंघई ‘घड़ी’ ने ‘सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव’ विषय पर विचार रखे। श्रीमती आरती जी ने कहा कि यह युग संचार क्रांति का युग है और यदि सोशल मीडिया का उपयोग न करे तो हम दुनिया में पीछे रह जाएंगे। सोशल मीडिया ने समाज और सामाजिक जीवन को अच्छे और बुरे दोनों प्रकार से प्रभावित किया है। जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह सोशल मीडिया के भी दोनों पहलू हैं। सोशल मीडिया का सकारात्मक पहलू है कि, आज लोगों के बीच की दूरियाँ एकदम खत्म हो गई हैं, कोई खबर मिनटों में पूरी दुनिया में पहुंच जाती है। लोग सोशल मीडिया के माध्यम से व्यवसाय आदि में उन्नति कर रहे हैं। सोशल मीडिया के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। सोशल मीडिया ने लोगों को असामाजिक बना दिया है। वाट्सएप, फेसबुक आदि में लोग घंटों समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया के कुछ अच्छे तो कुछ बुरे प्रभाव समाज पर पड़े हैं। जरूरत है अच्छाई ग्रहण करने और समय व तकनीक का सदुपयोग करने की।

‘उपजातिय संगठनों की आवश्यकता’ विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्रीमती हिमांशी जैन सागर ने कहा कि आज सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की विभिन्न उपजातियों को अपने-अपने संगठन बनाकर अपनी उपजाति को संगठित कर सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के विकास हेतु आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि गोलापूर्व उपजाति ने दिगम्बर जैन धर्म की रक्षा करते हुए समाज को गौरवान्वित किया है, इस उपजाति से अनेक साधु-साध्वी बने हैं। इस उपजाति में अनेक उच्च कोटि के विद्वान हुए हैं, जिन्होंने जिन शासन की प्रभावना की है। श्रीमती हिमांशी जी ने कहा कि गोलापूर्व महासभा अपने प्रारंभ से कहती आई है कि सभी उपजातियां अपने संगठन बनाये, इसी से हमारा विकास और उन्नति संभव है। उन्होंने बताया कि उक्त भावना को लेकर गत वर्ष 2018 में गोलापूर्व महासभा ने अपने शताब्दी वर्ष समारोह के दौरान विभिन्न उपजातियों के अध्यक्ष/संयोजकों को आमंत्रित किया,

व उनसे संगठन हेतु आव्हान किया। इस अवसर पर बघेरवाल, पल्लीवाल, परवार, हूमड़, तारण, जैसवाल आदि उपजातियों के पदाधिकारियों ने अपने विचार भी रखे और एकता की बात भी की। साथ ही महासभा के इस कार्य की प्रशंसा भी समग्र जैन समाज में हो रही है।

सम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं के अतिरिक्त महिला इकाईयों के विभिन्न पदाधिकारियों क्रमशः छिंदवाड़ा से श्रीमती मधु जैन, संयोजक, दमोह से श्रीमती सीमा जैन अध्यक्ष, मकरोनिया सागर से श्रीमती संध्या जैन अध्यक्ष, टीकमगढ़ से श्रीमती नीलम जैन “शिशु निकेतन” संयोजक, भोपाल से श्रीमती आशा खुर्देलिया मंत्री एवं सागर 1-2 इकाई से श्रीमती आशा सेठ अध्यक्ष के द्वारा अपनी इकाईयों की गत वर्ष की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। उपस्थित जनसमुदाय ने महिला इकाईयों द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं गतिविधियों की करतल ध्वनि से अनुमोदना की। अधिवेशन के दूसरे दिवस महिला प्रकोष्ठ के संयोजकगण श्री चक्रेश शास्त्री भोपाल, श्री विनोद जैन कोतमा एवं श्री सुरेश जैन मारोरा इन्दौर का महासभा के अध्यक्ष श्री संतोष जैन “घड़ी” श्री सुभाष चौधरी महामंत्री, श्री देवेन्द्र लुहारी कार्यकारी महामंत्री एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। महिला सम्मेलन का संचालन श्रीमती ममता जैन सागर, श्रीमती ज्योति जैन दमोह एवं श्रीमती सुषमा जैन ‘गोना’ सागर ने किया तथा स्वागत एवं व्यवस्था में श्रीमती सुनीता अरिहन्त सागर, श्रीमती सुजाता जैन भोपाल एवं श्रीमती नीलम जैन ‘शिशु निकेतन’ टीकमगढ़ ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

जीवकाण्ड पर विद्वत संगोष्ठी में 50 से अधिक विद्वानों ने पढ़े आलेख



अलवर। राजस्थान की प्रसिद्ध भूमि अलवर जैन नसिया में चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज के शताब्दी संयम वर्ष के दौरान गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के परमशिष्य उच्चारणाचार्य, भक्तामर वाले बाबा श्री विनम्रसागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में 5 से 8 अक्टोबर तक गोम्मतसार जीवकाण्ड विषय पर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन अखिल भारतीय जैन विद्वत शास्त्री परिषद संस्थान (रजि.) द्वारा आयोजित की गई। बाल ब्रह्मचारी प्रदीप भैया ‘पीयूष’ के नेतृत्व में 50 से अधिक लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों ने संगोष्ठी में अपने आलेख पढ़े व आचार्यश्री विनम्रसागरजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। नवदीक्षित मुनिराज व आर्थिका माताजी ने भी आलेखों का वाचन किया।

पत्र संपादक के नाम

प्रिय संपादक जी,

गोलापूर्व जैन (त्रैमासिक) वर्ष 14 अंक 51-53 जुलाई 2018-मार्च 2019 संयुक्तांक पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस पत्रिका से अत्यंत कम मूल्य में बहुमूल्य एवं विविध सामाजिक जानकारी प्राप्त कर अच्छा लगता है। मन को संतोष मिलता है। साफ, स्वच्छ, निर्मल एवं पवित्र संपादन के लिए पूरे संपादक मण्डल और विशेषतः प्रधान संपादक राजेन्द्र जैन “महावीर” को हार्दिक बधाई। राजेन्द्र जी देश के सुप्रसिद्ध वक्ता, वरिष्ठ चिंतक लेखक और संपादक है। उन्हें विशेष साधुवाद। वे साहित्यिक समुद्र से अनमोल मोती खोजकर इस पत्रिका में संकलित करते हैं। पत्रिका का गुणवत्ता मुद्रण सराहनीय है।

इस संदर्भ में यह स्मरणीय है कि गोलापूर्व समाज की स्थापना नैनागिरि में हुई थी। नैनागिरि से ही गोलापूर्व जैन पत्रिका का लंबी अवधि तक प्रकाशन होता रहा। इस समाज के पदाधिकारियों का यह कर्तव्य है कि नैनागिरि में गोलापूर्व समाज, आचार्य गोल्लार्चय तथा मुनिवर क्षमासागर जी की स्मृतियों की स्थापना और गोलापूर्व पत्रिका के प्रकाशन को स्थायी स्वरूप प्रदान किया जाय। इस ऐतिहासिक कार्य में सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन जनकल्याण संस्थान अपना पूर्ण सहयोग देने के लिए सदैव उत्सुक तत्पर रहेगी।

यह सराहनीय है कि अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के वर्तमान पदाधिकारियों ने महासभा की स्थापना के द्वितीय शताब्दी के प्रवेश के अवसर पर 15वाँ परिचय सम्मेलन 12 तथा 13 अक्टूबर, 2019 को नैनागिरि में आयोजित किया। इस अवसर पर हमें स्वागताध्यक्ष के रूप में सभी आगंतुकों का स्वागत करने का अच्छा अवसर मिला। समाज के अधिकांश सदस्य पधारें और अपनी जड़ों को अभिसिंचित किया। अपनी जन्मस्थली को विकसित करने की अभिलाषा व्यक्त की। नैनागिरि में संत से सिद्ध बने आचार्य वरदत्त और उनके साथी चार मुनिवरों को प्रणाम किया। सिद्ध शिला के दर्शन किए। सिद्ध मंदिर का अवलोकन किया। भगवान पार्श्वनाथ की चरण रज से पावन और सुगंधित माटी को चंदन की भाँति अपने माथे पर लगा कर अपने साथियों से मिल-जुलकर वापस गए।

● सुरेश जैन (आई.ए.एस.)

अध्यक्ष, जैन तीर्थ नैनागिरि उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद, नई दिल्ली प्रबंध निदेशक, विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, भोपाल उपाध्यक्ष, कामयाब, नई दिल्ली

● न्यायमूर्ति विमला जैन

30, निशात कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462003
दूरभाष (नि) 0755 2555533
मो. 9425010111

विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मेलन नेमावर में हुआ

शिक्षक चाहे तो शिक्षा की 'दशा' व 'दिशा' बदल सकते हैं : आचार्यश्री विद्यासागरजी



नेमावर। विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर 2019 को शिक्षक सम्मेलन व सम्मान समारोह संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। शिक्षक सन्दर्भ समूह भोपाल द्वारा आयोजित उक्त आयोजन में देश के प्रमुख शिक्षाविदों सहित पाँच सौ से अधिक शिक्षक उपस्थित हुए। चयनित 51 शिक्षकों को शिक्षाविद् डॉ. गुलाब चैरसिया स्मृति से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि मूर्त को अमूर्त से बाँधकर मूर्त तक पहुँचाने का उपक्रम वही कर सकता है जिसमें दया, करुणा भरी होती है। शिक्षकों का स्थान अभिभावकों से भी उच्च है, क्योंकि वे अपने शिष्य को श्रेष्ठ बनाने का कार्य बिना किसी भेदभाव के करते हैं। शिक्षक यदि तय कर ले तो शिक्षा की दशा व दिशा दोनों बदलने में सक्षम है।

आचार्यश्री ने मातृभाषा को शिक्षा का श्रेष्ठ माध्यम बताते हुए कहा कि विश्व में अनेक देश स्वतंत्र हुए आज उनमें से अधिकांश उन्नति के शिखर पर हैं, हम चीन, फ्रांस, जापान, जर्मनी, रशिया आदि कई देशों को देखे तो उनकी उन्नति का आधार स्व भाषा ही है वहाँ शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। भारत को 70 वर्ष से अधिक समय हो गया लेकिन हम भाषा के मामले में स्वतंत्र नहीं हैं, यदि हमने भाषा का माध्यम नहीं बदला तो आगामी अनेकों वर्षों तक हमें उन्नति के लिए राह देखनी पड़ेगी।

हृदय तक बात पहुँचाने का माध्यम है भाषा

आचार्यश्री ने अनेक संस्मरणों के माध्यम से कहा कि मातृभाषा हृदय की भाषा होती है, हमें कभी सपने अंग्रेजी में नहीं आते हैं क्योंकि वो हमारे हृदय की भाषा नहीं है। भारत में अंग्रेजी आई तभी से भारतीय शिक्षा पद्धति का पतन प्रारंभ हो गया था। हमारे शास्त्रों में तीन हजार श्लोकों में पाँच सौ

प्रकार के विमान बनाने की विधि थी। हमारा इतिहास अंग्रेजी में नहीं मिलेगा। यदि हमने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया तो देश 170 वर्ष तक भी उन्नति नहीं कर पाएगा।

हिन्दी-संस्कृत पढ़ने से सक्रिय होते हैं दोनों मस्तिष्क

अंग्रेजी पढ़ने से केवल हमारा एक तरफ का मस्तिष्क ही सक्रिय होता है, जबकि हिन्दी-संस्कृत पढ़ने से दोनों मस्तिष्क सक्रिय होते हैं, माँ की गोद में जो भाषा सुनी है वो भाषा जीवनभर हम बदल नहीं सकते हैं। अंग्रेजी से उन्नति हमारा भ्रम है, अभिभावकों को भी अपना विचार बदलना पड़ेगा। देश में स्वभाषा का कार्य हो रहा है लेकिन चींटी की गति से हो रहा है।

मत मांगते समय 'हिन्दी' बाकी समय 'अंग्रेजी' नहीं चलेगा

आचार्यश्री ने चुटीले अन्दाज में अनेक बातें कहीं। देश की जनता सत्तर प्रतिशत तक तो आज भी ग्रामों में रहती है, जब नेता मत (वोट) माँगने जाते हैं तो वे वहाँ की मातृभाषा में ही भाषण देते हैं, मत मांगते हैं लेकिन लोकसभा, विधानसभा में अंग्रेजी बोलते हैं। ये सब बंद करना होगा। देश की आजादी के समय महात्मा गांधी ने कहा था कि देश अभी लोकतंत्र के लायक नहीं है, आज वैसा ही दिखाई दे रहा है।

जो शिक्षक को मिलता है वह दुनिया में किसी को नहीं मिलता

आचार्यश्री ने कहा कि सन् 1935 में ही इण्डियन बैंक, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना हो गई थी, यह 'इण्डिया' हम पर थोपा गया है, भारत को आजादी से पहले ही 'इण्डिया' में बांधने का कार्य प्रारम्भ हो गया था। हमें इस भ्रमजाल को समझना होगा। हमें तो सम्पूर्ण विश्व से प्रेम है, 'वसुधैव कुटुम्बक' की भावना है लेकिन इतना ध्यान रहे विश्व का कल्याण जब भी होगा तब भारत से ही होगा।



शिक्षक समुदाय को भरपूर आशीर्वाद देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि जो एक शिक्षक को मिलता है वह दुनिया में किसी को नहीं मिलता। जिस भाषा में भारत था उसी में रहे, हृदय तक जो बात पहुँचा सकता है, वह भाषा ही है। भारत को विश्वगुरु बनाकर देखो सारे ऋषि चुक जाएँगे।

हार्ट-हेड-हेण्ड से हो शिक्षा - अतुल कोठारी

गुजरात के प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. अतुल कोठारी ने कार्यशाला में प्रेरक उद्बोधन देते हुए कहा कि विदेशों में व्यक्ति का चरित्र वहाँ के टेलर बनाते हैं, हमारे यहाँ टेलर के कपड़ों से नहीं व्यक्तित्व से चरित्र निर्माण होता है। शिक्षक कक्षा का राजा होता है यदि वह चाहे तो नैतिक मूल्यों के संस्कारों के माध्यम से नई पीढ़ी को चारित्रवान बना सकता है। आज भी भारत में मूलभूत सिद्धांत समाप्त नहीं हुए हैं, उन पर मिट्टी पड़ गई है, उन्हें हटाने की आवश्यकता है, हम भौतिक दृष्टि से आगे बढ़ रहे हैं लेकिन नैतिक चारित्रिक रूप से हम पिछड़ते जा रहे हैं। हमें हार्ट-हेड-हेण्ड से शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। जितनी अंग्रेजी को बढ़ाते जाएँगे उतनी हमारी दुर्दशा होती चली जाएगी। जो अपनी भाषा नहीं सीख सकता वह कोई भाषा नहीं सीख सकता है। आज समाज आधारित शिक्षा की आवश्यकता है शिक्षा व्यापार बन गई है, लोकतांत्रिक देश का बुद्धिजीवी वर्ग यदि सरकार पर निर्भर हो जाएगा तो लोकतंत्र कभी सफल नहीं हो सकता। जो स्वयं के आचरण से सिखाते हैं वहीं आचार्य हैं।

आचार्यश्री जैसे तो रविवार को ही देशना प्रदान करते हैं, शिक्षक सन्दर्भ समूह के समन्वयक डॉ. दामोदर जैन भोपाल के आग्रह पर विश्व शिक्षक दिवस मनाने की स्वीकृति प्रदान की। सभी शिक्षकों को आचार्यश्री द्वारा रचित 'जैन गीता' व शिक्षा उपयोगी सामग्री भेंट की गई। शिक्षा के प्रति समर्पित

इक्यावन शिक्षकों को शिक्षक सन्दर्भ समूह द्वारा डॉ. गुलाब चैरसिया स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. रीना जैन जबलपुर, राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद, डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ ने किया। इस अवसर पर प्रख्यात शिक्षाविद् श्री अतुल कोठारी अहमदाबाद, डॉ. भंडारकर, डॉ. वृषभप्रसाद शास्त्री वर्धा, वनविकास निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री गुरुप्रसाद शर्मा, लोकशिक्षण इन्दौर के संभागीय संयुक्त संचालक श्री मनीष वर्मा, श्री विजेन्द्र भदौरिया भोपाल, श्री टी.एन.मिश्रा भोपाल, श्री विपिन जैन, नसरुल्लागंज, श्री मनोज जैन, श्री विवेक शर्मा हरदा, श्री विष्णु जायसवाल (सिनर्जी संस्था), श्री योगेश मालवीय सहित अनेक शिक्षाविद् उपस्थित थे। सभी का सम्मान सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र के सर्वश्री संजय मेक्स, ब्र.सुनिल भैया, ब्र.संजय भैया, जिनेन्द्र काला आदि ने किया। डॉ. दामोदर जैन ने बताया कि यह 26 वॉ अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस था, जो आचार्यश्री के सान्निध्य में मनाया गया। प्रतिवर्ष आचार्यश्री के सान्निध्य में एक दिन शिक्षकों का उन्मुखीकरण व मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

आचार्यश्री से कक्ष में हुई विशेष चर्चा में आचार्यश्री ने कहा कि शिक्षकों को अब स्वयं आगे आना होगा। इस हेतु क्या करना है, कैसे करना है यह कार्य योजना बननी चाहिए। सर्वश्री दामोदर जैन, मनीष वर्मा, राजेन्द्र महावीर जैन, डॉ.रीना जैन व सिद्धोदय तीर्थ के पदाधिकारी ब्र.सुनील भैया (अनंतपुरा) चर्चा में सम्मिलित हुए। लगभग आधे घण्टे तक आचार्यश्री ने देश की शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के अनेक उपाय बताये। श्री दामोदर जैन ने आचार्यश्री की भावनाओं को क्रियान्वित करने के लिए पूर्ण योजना के साथ कार्य करने का आश्वासन दिया।

प्रेषक : अनुपमा जैन
217, सोलंकी कालोनी, सनावद
मो.नं. 9407492577

मड़वरा के इतिहास में पहली बार विद्वत संगोष्ठी

आचार्य विशुद्धसागर जी श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं : मुनिश्री सुप्रभ सागर



ललितपुर। गणेश वर्णी नगर, महावीर विद्या विहार मड़वरा में परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य परम पूज्य, अध्यात्म योगी मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज व मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिगम्बर जैन समाज और भक्तोच्छसत चातुर्मास समिति मड़वरा के तत्वावधान में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 2 से 3 नवंबर 2019 तक दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर के संयोजन में अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुई। उल्लेखनीय है कि पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी जी की सृजनभूमि और विद्वानों की नगरी मड़वरा के इतिहास में पहलीबार विद्वत संगोष्ठी का आयोजन हुआ है।

इस संगोष्ठी में डॉ. सुशील जैन मैनपुरी, अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्र परिषद के महामंत्री ब्र. जयकुमार जी निशांत भैया जी, टीकमगढ़, वरिष्ठ विद्वान डॉ रमेश चंद्र जी दिल्ली, काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी में जैन-बौद्ध दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक जी जैन वाराणसी, प्राचार्य निहालचंद्र जी बीना, प्रतिष्ठाचार्य विनोद जैन जी रजवांस, प्रतिष्ठाचार्य विमल सौरया जी टीकमगढ़, डॉ नरेंद्र जैन जी गाजियाबाद, डॉ. महेंद्र मनुज जी इंदौर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल में जैन दर्शन के प्राध्यापक डॉ. पंकज जी भोपाल, ओजस्वी वक्ता राजेन्द्र जी %महावीर% सनावद, राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित डॉ विमल जैन जी जयपुर, डॉ सुनील संचय जी ललितपुर (संगोष्ठी संयोजक), राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित व सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर राजस्थान में प्राकृत विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सुमत जैन जी उदयपुर, डॉ आशीष शास्त्री वाराणसी, मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़ में जर्नलिज्म विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर मयंक अलीगढ़, प्रभावना जनकल्याण परिषद के महामंत्री डॉ निर्मल जी शास्त्री टीकमगढ़, पंडित शीतलचंद्र जैन जी ललितपुर, प्रभावना जनकल्याण परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष सुनील शास्त्री टीकमगढ़, सादूमल के जैन विद्यालय में अधीक्षक संतोष शास्त्री, शुभम शास्त्री, मड़वरा आदि विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर अहिंसा करुणा के संपादक मनीष शास्त्री शाहगढ़, डॉ

संजय जैन भोपाल, ब्रजेश शास्त्री बड़ागांव, पंडित ऋषभ वैद्य बड़ागांव, शीलचंद्र शास्त्री ललितपुर, शोभाराम शास्त्री ककरवाहा, पंडित श्रीत्रदन टीकमगढ़, निर्मल सिंघई, हर्षित शास्त्री, प्रमोद शास्त्री, प्रवीण शास्त्री आदि विद्वानों की उपस्थिति भी प्रमुख रूप से रही।

संगोष्ठी के पांच सत्रों में अध्यक्षता क्रमशः डॉ रमेश चंद्र जी दिल्ली, डॉ सुशील जी मैनपुरी, प्रो अशोक जी वाराणसी, पंडित विनोद जी रजवांस, पंडित निहालचंद्र जी बीना ने की। संचालन क्रमशः डॉ सुनील जैन संचय, डॉ पंकज जैन, डॉ आशीष वाराणसी, डॉ महेंद्र मनुज, राजेन्द्र महावीर ने किया। प्रत्येक सत्र में सारस्वत अतिथि क्रमशः डॉ नरेंद्र जी गाजियाबाद, ब्र. जय कुमार जी निशांत, शीलचंद्र शास्त्री, डॉ. विमल जी जयपुर, पं. विमल जी सौरया रहे।

इस दौरान मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज ने अपनी दिव्य देशना में कहा कि आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज ने अपने आध्यत्मिकता से परिपूर्ण ओजस्वी व उर्जावान प्रवचनों के माध्यम से जन जन तक पहुंचने का प्रयास किया है। आचार्यश्री बहुविज्ञ एवं बहुश्रुत आचार्य हैं। मुनि श्री प्रणत सागर जी महाराज ने कहा कि आचार्य विशुद्ध सागर जी जन-जन के संत हैं। उन्होंने अनेक चेतन और अचेतन कृतियों का सृजन किया है। आभार चातुर्मास समिति के अध्यक्ष डॉ वी सी जैन, चातुर्मास समिति के संयोजक राजू सौरया और रज्जू जैन, शिखर चंद्र सिलोनिया ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर संगोष्ठी में सम्मिलित विद्वानों को स्मृति चिन्ह, माला, श्रीफल, कलश देकर भक्तोच्छसत चातुर्मास समिति मड़वरा और दिगम्बर जैन समाज मड़वरा के पदाधिकारियों डॉ वी सी जैन, राजू सौरया, रज्जू जैन, शिखर चंद्र सिलोनिया, जे के जैन, माणक चंद्र जैन, कछेदी लाल जैन, राकेश जैन, उमेश जैन, सनत जैन, प्रियंक सराफ, प्रदीप जैन, डी के सराफ, अभिषेक जैन, प्रवीण जैन, प्रमोद बजाज, प्रकाशचंद्र जैन आदि ने सम्मानित किया। पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी जी की सृजनभूमि मड़वरा की जैन समाज ने भी इस संगोष्ठी में अपूर्व उत्साह दिखाया है उनके आतिथ्य की भी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। विद्वानों द्वारा मड़वरा के भव्य दिगंबर जैन मंदिरों के दर्शन से मन आह्लादित हो गए।

गोलापूर्व महासभा राजस्थान प्रांत का वार्षिक अधिवेशन एवं स्नेह मिलन समारोह संपन्न



जयपुर। दिनांक 12 जनवरी 2020 को दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा राजस्थान प्रान्त का वार्षिक प्रांतीय अधिवेशन एवं स्नेह मिलन समारोह जयपुर में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सिंधुलता विमल कुमार जैन (महामंत्री), श्रीमती चेतना विपुल जैन एवं वैभव जैन जयपुर थे। प्रातःकाल सामूहिक शांति विधान पूजन का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने भक्ति पूर्वक जिनेन्द्र अर्चना की। श्रीमान राजेश कुमार शास्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छोटे बच्चों की दौड़ प्रतियोगिता, महिला एवं पुरुष वर्ग म्यूजीकल चेरर रेस एवं एक मिनट प्रतियोगिता आयोजित की।

प्रांतीय अधिवेशन का शुभारंभ सुश्री प्रतीक्षा जैन के मंगलाचरण से हुआ। सर्वप्रथम समारोह के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि पंडित घनश्याम दासजी श्रीमती किरण जी व्यावर वालों का अभिनंदन एवं स्वागत किया गया तथा महासभा की ओर से उन्हें एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। महासभा के अध्यक्ष चौधरी सुनील कुमार जैन ने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी आगंतुकों का अभिनंदन करते हुए नव वर्ष की शुभकामनाएं दी। उसके बाद

सभी नवविवाहित युगलों का परिचय एवं सम्मान किया गया। बोर्ड परीक्षा में 75% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली छात्रों को सम्मानित किया गया तथा विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल करने वाले अनेक समाज के सदस्यों को सम्मानित किया गया। डॉ.शीतलचंदजी जैन (संरक्षक) ने अपने उद्बोधन में सभी को मंगल आशीर्वाद दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के सभी विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों को पारितोषिक वितरण किया गया। इस अवसर पर डॉ. सनतकुमार जैन, प्रो. हुकुमचंद जैन, वैद्य फूलचंद जैन, वैद्य संतोषकुमार जैन, श्री हेमन्त कुमार जैन, श्री कैलाशचन्द मलैया, पंडित रमेशचंद जैन, पं. प्रद्युम्न जैन, श्री विजय कुमार जैन आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे। समारोह में राजस्थान निवासी लगभग 150 से अधिक गोलापूर्व समाज के सदस्यों ने सहभागिता कर कार्यक्रम को गौरवान्वित किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के उपाध्यक्ष डॉ.बी.सी.जैन ने किया।

- चौधरी सुनील कुमार जैन (अध्यक्ष)
- विमल कुमार जैन (महामंत्री)

अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की कोतमा महिला इकाई का गठन

कोतमा। दिनांक 24.1.2020 को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा के महिला सभा अंतर्गत महिला इकाई कोतमा की कार्यकारिणी के मनोनयन किया गया। आगामी कार्यकलापों संबंधी अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा के उपाध्यक्ष एवं महिला इकाई के संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री एवं श्री विनोद जैन की उपस्थिति में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर धर्मशाला कोतमा में बैठक संपन्न हुई। बैठक में महिला इकाई कोतमा की कार्यकारिणी में निम्नानुसार मनोनयन किया गया।



श्रीमती सुषमा जैन



श्रीमती सुलभा जैन

श्रीमती प्रभा जैन (मंगलम), श्रीमती सुलोचना जैन (अशोक ड्रेसेस), श्रीमती सरोज जैन (चंदेरिया आभूषण), श्रीमती शकुन जैन (किशान वस्त्रालय), श्रीमती नविता जैन (अभिनन्दन), श्रीमती कुसुम जैन (मसाला

वाले) श्रीमती बबिता जैन (सत्कार रेस्टोरेंट) को संरक्षक मनोनीत किया गया। इसी प्रकार श्रीमती सुषमा जैन (जनता प्रोविजन) को अध्यक्ष, श्रीमती नविता जैन (शुभम फैशन) को उपाध्यक्ष, श्रीमती सुलभा जैन (किशान वस्त्रालय) को मंत्री, श्रीमती संगीता जैन (सृष्टि फैशन) को उपमंत्री, श्रीमती राखी जैन (मंगलम) को कोषाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया। कार्यकारिणी सदस्यों में श्रीमती ममता जैन (पूर्व पार्षद), श्रीमती शिल्पा जैन (अशोक ड्रेसेस), श्रीमती संगीता-सुदीप जैन, श्रीमती रश्मि जैन (मंगलम), श्रीमती प्रभा जैन (सम्राट इंटरप्राइजेज), श्रीमती रजनी-कैलाश जैन, श्रीमती पूजा जैन (जैन साइकिल), श्रीमती नीलू जैन (जैन पुस्तक), श्रीमती संगम-विकास जैन, श्रीमती रचना जैन (साक्षी साड़ी) का मनोनयन किया गया।

पद्मश्री सम्मान से नवाजी गई डॉ. शांति जैन, बुदेलखंड की माटी हुई गौरवान्वित सम्मान से बढ़ जाता है काम करने का जज्बा : डॉ. शांति

बकस्वाहा (छतरपुर)। भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री मध्यप्रदेश / बुदेलखंड के सुविख्यात जैन तीर्थ नैनागिरि व द्रोणगिरि के निकटवर्ती छतरपुर जिले की बकस्वाहा तहसील मुख्यालय पर जन्मे स्व. हेमराज जैन की (बिहार गौरव गान लिखने वाली) बेटी डॉ. शांति जैन को लोक साहित्य पर विशेष कार्य करने और उनकी साहित्य साधना के लिए नवाजा गया है। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शांति जैन का जन्म 4 जुलाई 1946 को हुआ था, जिन्होंने एम. ए. (संस्कृत एवं हिंदी), पी.एच.डी., डी लिट, संगीत प्रभाकर की शिक्षा प्राप्त की है। बिहार प्रांत के भोजपुर जिले के आरा नगर में स्थित एचडी जैन कॉलेज से प्रोफेसर एवं संस्कृत की विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। आप आकाशवाणी, दूरदर्शन की कलाकार एवं कवियत्री हैं। आप पिछले कई दशक से पटना (बिहार) में रह रही हैं। आपके पिता स्व. हेमराज जैन नौकरी के लिए आरा गए थे।



डॉ. शांति जैन

स्वर संगम मे भी माहिर : साहित्य पर पकड़ के साथ-साथ उनकी मधुर आवाज डॉ. शांति जैन की पहचान रही है। 1970 के दशक में रेडियो पर उनका गाया रामायण बेहद लोकप्रिय हुआ था। जयप्रकाश नारायण जब बेहद बीमार होकर घर पर थे तो डॉ. शांति जैन उनके घर जाकर रोज रामायण सुनाया करती थी।

सम्मान का गौरव : डॉ. शांति जैन को वर्ष 2009 में संगीत नाटक अकादमी का राष्ट्रीय सम्मान राष्ट्रपति द्वारा मिला था तो मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2008 में राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान दिया था। इसके अलावा के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा शंकर सम्मान, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नेशनल सीनियर फैलोशिप सम्मान, ऑल इंडिया रेडियो का राष्ट्रीय सम्मान, चैती पुस्तक के लिए बिहार सरकार का राजभाषा सम्मान तथा कलाकार सम्मान सहित अनेको सम्मान प्राप्त हुए हैं।

साहित्य साधना में विशिष्ट योगदान : आपकी श्रेष्ठतम रचनाओं में एक वृत्त के चारों ओर, हथेली का आदमी, हथेली पर एक सितारा (काव्य), पिया की हवेली, छलकती आंखें, धूप में पानी की लकीरें, सांझ घिरे लागल, तरनुम, समय के स्वर, अंजुरी भर सपना (गजल, गीत संग्रह), अश्मा, चंदनबाला (प्रबंधकाव्य), चैती (पुरस्कृत), कजरी, ऋतुगीत : स्वर और स्वरूप, व्रत और त्योहार : पौराणिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, उगो है सूर्य, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम (पुरस्कृत), बिहार के भक्तिपरक लोकगीत, व्रत-त्योहार कोश, तुतली बोली के गीत (लोक साहित्य), वसंत सेना, वासवदत्ता, कादंबरी, वेणीसंहार की शास्त्रीय समीक्षा (क्लासिक्स), एक कोमल क्रांतिवीर के अंतिम दो वर्ष (डायरी) सहित कई दर्जन लोकप्रिय किताबें लिख चुकी हैं। आप कई संस्थानों की पदाधिकारी व सदस्य रह चुकी हैं और 75 साल की उम्र में भी डॉ. शांति जैन आज भी लेखन कला में काफी सक्रिय हैं।

पद्मश्री सम्मान क्या है : भारत सरकार द्वारा आम तौर पर सिर्फ

भारतीय नागरिकों को दिया जाने वाला भारत देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, जो देश के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों कला, शिक्षा, साहित्य, समाज सेवा आदि में बहुमूल्य विशिष्ट योगदान व असाधारण प्रदर्शन करने वालों को मान्यता प्रदान करने के लिए दिया जाता है, जो भारत के नागरिक पुरस्कारों के पदानुक्रम में यह भारतरत्न की श्रृंखला में चौथा पुरस्कार है, जिसकी स्थापना 1954 में की गई थी। पद्म पुरस्कारों की सिफारिश राज्य सरकार/संघ राज्य प्रशासन, केंद्रीय मंत्रालय/विभाग के साथ-साथ उत्कृष्टता संस्थानों आदि से प्राप्त की जाती है। इसके बाद एक समिति इन नामों पर विचार करती है। पुरस्कार समिति

जब एक बार सिफारिश कर देती है, फिर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और राष्ट्रपति इस पर अपना अनुमोदन देते हैं और इसके बाद गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर इन सम्मानों की घोषणा की जाती है। यह सम्मान भारत देश के महामहिम राष्ट्रपति महोदय के कर कमलों से सौंपा जाता है।

डॉ. शांति ने जाहिर की खुशी : डॉ. शांति जैन ने कहा कि सम्मान मिलने की खुशी है, लेकिन यह थोड़ी देर से मिला है। सम्मान मिलने से लोगों का ध्यान जाता है, यह अच्छी बात है। सम्मान हमारे अंदर उत्साह भरता है, ऊर्जा मिलती है।

● राजेश रागी-रत्नेश भैया पत्रकार

वृद्धजनों के साथ बाँटी गए साल की खुशियाँ

छिंदवाड़ा। श्री दिगंबर जैन अनेकांत महिला मंडल एवं गोलापूर्व महिला इकाई के तत्वावधान में गोधूलि वृद्धाश्रम में आयोजित कार्यक्रम में मंडल की सदस्यों ने वृद्धजनों के बीच नववर्ष की खुशियाँ बाँटी। इस अवसर पर भजन-कीर्तन कर रोचक गेम्स खिलाए गए एवं गिफ्ट भी बाँटी गए। मंडल की सदस्यों ने वृद्धजनों के साथ चाय-नाश्ते का आनंद लिया। वृद्धजनों ने मिलकर सभी सदस्यों के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की। वहीं इस कार्यक्रम में वृद्धजनों के चेहरों पर मुस्कान नजर आई।



स्वस्तिकधाम जहाजपुर में राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन में उमड़े युवा प्रतिकूलता के क्षणों में घबराये नहीं वह है युवा : आ.ज्ञानसागर



मनीष जैन (शाहगढ़) एवं डॉ. मनीषा जैन युवा सम्मेलन में जैन युवा रत्न से सम्मानित किये गये।

स्वास्तिकधाम जहाजपुर। बीसवें तीर्थंकर 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के अतिशय से आच्छादित अल्प समय में विदुषी आर्थिका स्वस्तिभूषण माताजी की प्रेरणा से विकसित नवोदित तीर्थ जहाजपुर (राजस्थान) में गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2020 को राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सराकोद्वारक आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज, आचार्य विनीतसागरजी, आर्थिका स्वस्तिभूषण माताजी संसंघ के सान्निध्य व युवारत्न श्री हंसमुख गांधी इन्दौर के मुख्य संयोजन में देशभर के हजारों युवाओं ने सम्मिलित होकर इतिहास रचा।

सम्मेलन का शुभारंभ प्रातः 9:30 बजे भव्य झण्डारोहण से किया गया। मुख्य अतिथि निशांत जैन आई.ए.एस., हंसमुख गांधी, महोत्सव अध्यक्ष विनोद जैन, महामंत्री ज्ञानेन्द्र जैन, ट्रस्ट अध्यक्ष जौहरीलाल जैन ने आचार्य संघ के पावन सान्निध्य में सर्वप्रथम राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का व देशभर से पधारे युवा अध्यक्ष व जैन जगत की युवा प्रतिभाओं ने 20 स्थानों पर एक साथ ध्वजवंदन, राष्ट्रगान, मंगलाष्टक के साथ झण्डारोहण किया। राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किये गए। झण्डारोहण का शानदार संयोजन दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप 'पुष्प' इन्दौर के सर्वश्री राकेश विनायका, आशीष जैन सूत वाले, रितेश जैन आदि ने किया।

देश के प्रख्यात मोटिवेशनल स्पीकर श्री सोमिल दलाल मुम्बई ने एक घण्टे तक फैमिली बिजनेस पर अपना प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए बताया कि परिवार का व्यवसाय बढ़ाने में जो खुशियाँ हैं वह कहीं नहीं हैं, नौकरी हल नहीं है, हम नौकरी देने वाले बनें, हमारे खून में वह बिजनेस गुण नैसर्गिक रूप से मिला हुआ है। प्रारम्भ में कृतिका जैन, बीना जैन ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किये।

राजस्थान सरकार में वित्त सचिव के पद पर कार्यरत युवा आई.ए.एस. निशांत जैन ने कहा कि मात्र जैन कुल में जन्म लेने से हम जैन नहीं कहला सकते हैं इसके लिए हमें जैनत्व के संस्कारों से संस्कारित होना पड़ेगा। बचपन में पाठशाला व छहढ़ाला तक अध्ययन करना होगा। संचालन हंसमुख गांधी, पवन बगडिया, राजेन्द्र जैन 'महावीर' ने किया।

श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिकधाम की प्रणेता आर्थिका स्वस्तिभूषण माताजी ने कहा कि आप सभी सौभाग्यशाली हैं जिन्हें भूगर्भ से प्रकट प्रतिमा के दर्शन का सौभाग्य मिला है। प्रतिमा प्रकटीकरण के साक्षात् प्रत्यक्षदर्शी शिक्षक श्री भानुकुमार जैन ने प्रतिमा प्रकटीकरण के बारे में सम्पूर्ण घटनाक्रम से अवगत कराया। मगध विश्वविद्यालय के प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया ने युवाओं को व्यसनमुक्त रहने की प्रेरणा दी। स्वागत भाषण महोत्सव अध्यक्ष श्री विनोद जैन ने दिया। इस अवसर पर देशभर की

चुनी हुई युवा प्रतिभाओं व युवा अध्यक्षों को जैन युवा रत्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राजस्थान सरकार के वरिष्ठ आई.ए.एस. श्री नवीन जैन, एडिशनल एस.पी. श्री पवन जैन कोटा व पदाधिकारियों ने सभी का सम्मान किया।

राष्ट्र के नाम सम्बोधन देते हुए सराकोद्वारक आचार्यश्री ज्ञानसागरजी

महाराज ने कहा कि देश की आजादी में पाँच हजार जैनियों ने बलिदान दिया है। उन्होंने अनेक प्रसंग सुनाते हुए अमरचंद बाठिया, दानवीर भामाशाह, सरलाबेन, साराभाई, स्व. मिश्रीलाल गंगवाल आदि के कार्यों का उल्लेख करते हुए युवाओं को प्रेरणा दी कि नैतिकता के विकास के लिए व्यसन मुक्ति का संकल्प ले, प्रतिकूलता के क्षणों में घबराये नहीं। संघस्थ बाल ब्र. अनिता दीदी ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला। अन्तर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. एस.पी. भारिल्ल जयपुर ने भी उद्बोधन दिया। प्रख्यात पार्श्वगायक किशोरकुमार फ्रेम रॉकस्टार चिंतन बाकीवाला इन्दौर द्वारा रात्री में रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ भजन प्रस्तुत किए गए।

उपरांत देश के 31 युवा अध्यक्षों का सम्मान किया गया साथ ही संयोजक मंडल के सर्वश्री पवन बगडिया (कोषाध्यक्ष म.प्र.क्रिकेट एसोसिएशन), आर.के.जैन (एक्सआईजे), नरेन्द्र चोकलिया, यशकमल अजमेरा, विजय दुगोरिया, प्रदीप लुहाडिया, सुंदर कोठारी, सुरेश कासलीवाल, दिलीप जैन, प्रदीप जैन लाला, विनोद जैन, प्रवीण पोद्दार, विकास जैन आदि का सम्मान किया गया। संचालन राजेन्द्र जैन महावीर ने किया, आभार श्री हंसमुख गांधी ने व्यक्त किया।



अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की महिला इकाइयों की गतिविधियाँ



मध्यप्रदेश सरकार द्वारा मध्याह्न भोजन में अंडा देने के विरोध में गोलापूर्व महिला इकाई सागर-1 एवं 2 तथा मकरोनिया महिला इकाई ने रैली निकाली।



गौराबाई दि. जैन मंदिर में सिद्धचक्र मंडल विधान में महिला इकाई सागर-1 एवं सागर-2 ने द्रव्य सामग्री अर्पित कर प्रभावना की।

गोलापूर्व महिला इकाई सागर-2 ने घरोंदा आश्रम में जरूरतमंदों को टॉवेल, नाश्ता, सेनेटरी नेपकिन वितरित कर मकर संक्रांति पर्व मनाया।



गोलापूर्व महिला इकाई सागर-1 एवं सागर-2 की सभी बहनों ने विचार संस्था द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा में उपस्थिति दर्ज की।



बाल दिवस के उपलक्ष्य में महिला इकाई छिंदवाड़ा ने नोनिया करबल में स्कूली बच्चों के बीच नेहरू जयंती मनाई।

मंगलगिरि पंचकल्याणक में महिला इकाई द्वारा माता-पिता की गोद भराई संपन्न हुई। गौराबाई मंदिर में भजन भी हुए।

मकर संक्रांति पर छिंदवाड़ा महिला इकाई ने पतंगबाजी एवं हल्दी कुमकुम का आयोजन किया।

परिचय सम्मेलन



परिचय पत्रिका 'संस्कार' के प्रकाशन पर चंदेरिया परिवार की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ..



प्रो ऋषभ कुमार जैन



श्रीमती सरोज जैन



डॉ. दीपक जैन



श्रीमती दिव्या जैन



दिया जैन

जहाँ सोना चमके विश्वास के साथ....

चंदेरिया आभूषण

शिशु मंदिर रोड, कोतमा, जिला- अनूपपुर (म.प्र.) 484334

फोन -07658-233726, 233796 मोबा-9425174420, 9300005143



NAKSHATRA
DIAMOND JEWELLERY